

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 सितम्बर, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 सितम्बर, 2022

वर्ष : 80 अंक : 09
भाद्रपद, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

सितम्बर, 2022



Website : www.jinwani.in

दुःख मिलने पर किसी अन्य पर रोष करना, किसी दूसरे को दुश्मन समझना,
विरोधी अथवा अपना अनिष्ट करने वाला मानना उचित नहीं।

- आचार्यश्री हस्ती

अंक सौजन्य

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीरय नमः
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

समाज यदि समय रहते बच्चों के सुसंस्कार के लिए तन, मन, धन नहीं लगाएगा तो इसके कटु फल उसे अवश्य भोगने पड़ेंगे।

-आचार्यश्री हस्ती

सामायिक, स्वाध्याय और आत्मचिन्तन का बल जिसके पास है, वहाँ विकृतियाँ नहीं रह सकतीं।

-आचार्यश्री हीरा



उदारमना, सेवाभावी,
धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील, श्रावकरत्न
स्व. श्री हस्तीमलजी हुण्डीवाल



धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील, श्राविका
स्व.श्रीमती पारसबाईजी
धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी हुण्डीवाल



धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील, श्राविका
स्व.श्रीमती किरणबाईजी
धर्मपत्नी श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल



उदारमना, सेवाभावी, धर्मनिष्ठ,
श्रावकरत्न श्री सोहनलालजी हुण्डीवाल

:: श्रद्धावनत ::

सोहनलाल, गौतमचन्द, दिनेश, जिनेश,
संगीता, कौशल्या, आरती, पूर्णिमा
रिद्धि, निधि एवं समस्त कांकरिया हुण्डीवाल परिवारजन
भोपालगढ़ वाले, हाल मुकाम चेन्नई

Namaskar Blue Metal Industries (P) Ltd.

Namaskar Door No. 8/8.1, Indira Gandhi Road,
Pallavaram, Chennai-600 043 (Tamilnadu)

namaskarbluemetal@gmail.com

(M) 9444388565, 9840112346, 9884530004, 9884530005

शंकर शौजब्य

श्री महावीरय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिम्यो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

मनुष्य का भाग्य और कुछ नहीं, अपने ही किए हुए पुरुषार्थ का परिणाम है।

-आचार्यश्री हस्ती

सम्यग्दर्शन विनाशी से मन हटाता है, अविनाशी पर श्रद्धा जगाता है।

-आचार्यश्री हीरा



* जन्म *

06.09.1963

* स्वर्गवास *

26.02.2022

स्व. श्री सुधीरकुमारजी सुराणा

(सुपुत्र : स्व. श्रीमती प्रकाशबाई - स्व. श्री अमरचन्दसा सुराणा)

(चेयरमैन : अमरप्रकाश ग्रुप एवं मैनेजिंग ट्रस्टी : जैन पब्लिक स्कूल)

❀ श्रद्धाशील परिवार ❀

धर्मपत्नी : श्रीमती सुनीता सुराणा

बहन एवं बहनोई : श्रीमती सुधाकुमारी-श्री नरेन्द्र कुमारजी पारख

सुपुत्र : आदर्श कुमार, आशीष कुमार, कुलदीप कुमार सुराणा

सुपौत्र : प्रणव, मितांश, यशोवर्धन एवं समस्त सुराणा परिवार, चेन्नई (मरुधर में नागौर)

❀ निवास स्थान ❀

अमरप्रकाश निवास

42, राजे- प्रसाद रोड़, नेहरु नगर, क्रोमपेट, चेन्नई-600 044

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

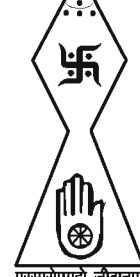
नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परसरोपग्रहो जीवनाय

जे यावि होइ निव्विज्जे,
थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्वयणं उल्लवई,
अविणीएु अबहुस्सुएु॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 11.2

जो भी विद्या से हीन मनुज,
गर्विष्ठ लोलुपी होता है।
असम्बद्धभाषी अजितेन्द्रिय,
अविनीत अबहुश्रुत कहलाता॥

सितम्बर, 2022

वीर निर्वाण सम्वत्, 2548

भाद्रपद, 2079

वर्ष 80

अंक 9

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्रों के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	अहिंसा के पाँच लक्ष्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	आत्मशक्ति-संवर्धन	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	सुख एवं समाधि देता है संयम	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	जानकारी एवं जीवन पर उसका प्रभाव	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	17
	रहना, सहना और कहना सीखें	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	21
	अच्छे लेखक कैसे बनें ?	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	25
	प्रसन्नता वहाँ, जहाँ अहंकार नहीं	-श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.	30
शुभाशंसा-	भावी आचार्यश्री : एक समर्पित व्यक्तित्व	-न्यायमूर्ति श्री प्रकाश टाटिया	16
प्रासङ्गिक-चिन्तन-	धोवन धाम	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	32
प्रासङ्गिक-	विश्व अहिंसा दिवस पर करें अहिंसा का विस्तार	-श्री सुरेन्द्रसिंह पोखरणा	39
अध्यात्म-	राग की आग कितनी खतरनाक	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	44
	अहंकारी नहीं, संस्कारी बनें	-श्री गौतम पारख	54
स्वरूप-बोध-	तीर्थङ्कर का स्वरूप	-श्री प्रमोद महनोत	48
जीवन-व्यवहार-	अनमोल मोती (6)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	50
आत्म-शुद्धि-	क्षमा का अमृत	-श्री पदमचन्द गाँधी	51
युवा-स्तम्भ-	शराब और अन्य नशे से बचें	-सुश्री वृद्धि ढह्ठा	56
English-section	The Spirit of Reconciliation of Different Ideologies and Faith.....	-Dr. Reshma, Assistant Professor	57
परिवार-स्तम्भ-	विवाह के पश्चात् सम्बन्ध विच्छेद क्यों ?	-श्री जसराज देवड़ा (जैन)	63
गीत/कविता-	उदयभाव की निष्फलता : साधना की सफलता	-श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'	11
	रत्नसंघीय भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.		
	गुणगान	-श्री गौतमचन्द ओस्तवाल	29
	समाज के लिए हो रविवार	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	38
	माता-पिता की महिमा	-डॉ. दिलीप धींग	47
	लक्ष्य रहे सदा वीतरागता का	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	49
	बम विस्फोट	-श्री निपुण डागा	55
विचार/चिन्तन-	धर्म का आचरण हानिकारक ?	-आचार्य विजय रत्नसुन्दरसूरि	24
	माँ का आशीर्वाद	-श्री मंगलचन्द टाटिया	53
	जलवायु परिवर्तन से जंग जीतने के दस नियम	-श्री दिलीप कुमार गाँधी	59
	कायोत्सर्ग के बारे में विशेष जानने योग्य	-श्री मनमोहनचन्द बाफणा	87
	प्रभु की प्याऊ	-श्री नवरतन डागा	89
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	60
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	64
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	88
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	90

अहिंसा के पाँच लक्ष्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

आगमों में प्रतिपादित अहिंसा मनुष्य की चेतना को संवेदनशील, जागरूक, आत्मभाव से ओतप्रोत, ज्ञान सम्पन्न एवं अप्रमत्त बनाती है। शान्ति, स्वतन्त्रता, समता एवं निर्भय जीवन के लिए अहिंसा अपरिहार्य आवश्यकता है। इसके अभाव में सुखी जीवन, सुन्दर समाज, समृद्ध राष्ट्र एवं मैत्रीमय विश्व की परिकल्पना नहीं की जा सकती। आज जब विश्व में भय, आतंक एवं हिंसा का बोलबाला है तब अहिंसा की उपयोगिता अधिक प्रासङ्गिक प्रतीत होती है। हिंसा जहाँ हिंसा में संलग्न व्यक्ति को दूषित करती है एवं समष्टि के हित को प्रभावित करती है वहीं अहिंसा शत्रुता का नाश कर व्यक्ति को भीतर से निर्मल बनाती है एवं समाज में सबके प्रति पारस्परिक मैत्री का स्थापन करती है।

हिंसा को प्रायः कर्मबन्ध का कारण होने से हेय माना जाता है, किन्तु जैनागमों में हिंसा को समाज, पर्यावरण एवं प्राणी जगत् के लिए भी अहितकर होने से हेय बताया गया है।

आगमों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनमें अहिंसा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रहा है। अहिंसा के वहाँ पर मोटे तौर पर पाँच लक्ष्य विदित होते हैं—1. आत्मशुद्धि, 2. प्राणिरक्षण, 3. पर्यावरण-संरक्षण, 4. उन्नत समाज एवं 5. विश्व शान्ति।

1. आत्मशुद्धि—हिंसा को पाप एवं अहिंसा को धर्म माना जाता है। हिंसा जहाँ आत्मा को कलुषित करती है, उसकी संवेदनशीलता का हरण करती है वहाँ वह कर्मबन्ध का भी कारण बनती है। कर्मबन्धन अशुद्धि है। इससे आत्मा भारी होती है अर्थात् पतनशील होती है। दशवैकालिकसूत्र 4.1 में कहा गया है कि हिंसा से पापकर्म का बन्धन होता है—

अजयं चरमाणो य, पाणभूयाइं हिंसइ।

बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।

यतनापूर्वक अर्थात् जागरूकतापूर्वक आचरण करने से जहाँ अहिंसा की परिपालना होती है वहाँ अयतना एवं प्रमाद के साथ किये गये आचरण से हिंसा का दोष लगता है। हिंसा का दोष कर्मास्रव का कारण बनता है। जिसका परिणाम दुःख है। इसलिये आचाराङ्गसूत्र में कहा है—यह दुःख आरम्भजन्य है अर्थात् हिंसाजन्य है।

इस हिंसा को आचाराङ्गसूत्र में ग्रन्थि, मोह, मृत्यु और नरक कहा गया है—एस खलु गंधे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु नरए। इसलिये साधना का प्रारम्भ पाँच अणुव्रतों से हो या पाँच महाव्रतों से, हिंसा का त्याग अनिवार्य माना गया है। हिंसा के मूल में अज्ञान और राग-द्वेष की प्रवृत्ति रहती है। जब कोई पूर्ण अहिंसक बनना चाहता है तो उसे रागादि का पूर्ण समापन करना आवश्यक है अर्थात् वीतरागता एवं समता में ही पूर्ण अहिंसा का पालन सम्भव है। आचार्य अमृतचन्द्र ने इसलिये अहिंसा को परिभाषित करते हुए कहा है—**अप्रादुर्भावः खलु रागादीनामहिंसेति** अर्थात् रागादि का प्रकट न होना ही अहिंसा है। मन, वचन एवं काया के स्तर पर तो हिंसा त्याज्य है ही, किन्तु आत्मा में राग-द्वेष आदि दोष भी हिंसा के जनक होने से वे भी त्याज्य हैं। इस तरह रागादि के पूर्ण परिहार एवं कर्मबन्धन से रहित होने के लिए अहिंसा उपादेय है। अहिंसा के बिना आत्मशुद्धि अशक्य है। इसलिये पाँच महाव्रतों में इसे प्रथम स्थान दिया गया है।

हिंसा का एक नाम आरम्भ है। बहु आरम्भ एवं बहु परिग्रह को नरक का कारण बताया गया है। हिंसा का पूर्ण अभाव भी अहिंसा है तथा उसका अल्पीकरण भी अहिंसा की कोटि में आता है। इसलिये अहिंसा के तीन रूप दिखायी पड़ते हैं—1. वीतराग की अहिंसा, 2. श्रमण-

श्रमणियों की अहिंसा एवं 3. श्रावक वर्ग की अहिंसा। अहिंसा की पूर्णता वीतराग पुरुषों में दिखायी देती है। क्योंकि वे राग-द्वेष आदि दोषों से भी रहित होते हैं। श्रमण-श्रमणियों की अहिंसा महाव्रत के रूप में होती है जिसमें वे मन, वचन एवं काया से प्राणातिपात अर्थात् हिंसा से विरत होते हैं। वे रागादि से रहित होने की साधना करते हैं। श्रावकों की अहिंसा अणुव्रत के रूप में होती है। वे स्थूल रूप से हिंसा के त्यागी होते हैं। अहिंसा का एक चौथा रूप भी हो सकता है जिसका पालन सर्वसाधारण कोई भी कर सकता है। इसमें हिंसा को अल्पतम करने का प्रयत्न होता है। हिंसा न करके ही कोई अन्तर्मुखी बनकर आत्मशुद्धि की ओर उन्मुख हो सकता है।

2. प्राणिरक्षण-आचाराङ्गसूत्र (1.2.3) में प्राणियों की रक्षा पर बहुत बल दिया गया है। वहाँ एक सार्वभौमिक सूत्र दिया गया है-सव्वे पाणा पिआउया, सुहसाता दुक्खपडिकूला, अप्पियवधा, पियजीविणो जीवितुकामा। सव्वेसिं जीवितं पियं। नातिवातेज्ज कंचण। सभी प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सबको सुख अनुकूल एवं दुःख प्रतिकूल लगता है। वध सबको अप्रिय एवं जीवन प्रिय है। सभी जीव जीना चाहते हैं, इसलिये किसी की हिंसा नहीं करनी चाहिये। यहाँ सब जीवों के प्रति आत्मवद् भाव प्रकट किया गया है। आचाराङ्गसूत्र का यह वाक्य सभी प्राणियों को जीने का अधिकार प्रदान करता है।

अहिंसा के दो रूप हैं- निषेधात्मक और सकारात्मक। हिंसा नहीं करना, नहीं करवाना और अनुमोदन नहीं करना अहिंसा का निषेधात्मक रूप है। प्राणियों के जीने में सहयोगी बनना अहिंसा का सकारात्मक रूप है। अनुकम्पा, दया, करुणा, मैत्री आदि भाव प्राणियों के जीवन की रक्षा में सहयोगी बनते हैं। अतः ये भी अहिंसा के ही रूप हैं। जैनदर्शन की अहिंसा मात्र मानव समुदाय तक ही सीमित नहीं है इसमें प्राणिमात्र की चेतना को पहचान कर उसकी रक्षा करने का भाव पुरजोर प्रतिपादित किया गया है। एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक, पृथ्वीकायिक जीव से लेकर संज्ञी

पञ्चेन्द्रिय मनुष्य तक सबकी रक्षा का भाव अहिंसा का अङ्ग है। जैसे मेरी चेतना है वैसे ही अन्य जीवों की चेतना है इस भाव को संवर्द्धित कर सबकी रक्षा को महत्त्व दिया गया है। वैदिक परम्परा में भी कहा गया है-मा हिंस्यात् सर्वभूतानि। सभी प्राणियों की हिंसा नहीं करनी चाहिए। हिंसा से वैर-भाव बढ़ता है, जिसकी हिंसा की जाती है वह हिंसक के प्रति वैर युक्त हो जाता है।

3. पर्यावरण-संरक्षण-हमारे चारों ओर जो कुछ है वह पर्यावरण है। इस पर्यावरण में जीव भी हैं और अजीव भी हैं। यह लोक ही पर्यावरण का अङ्ग है। इसमें विद्यमान सभी प्राणी एवं द्रव्य मिलकर पर्यावरण का स्वरूप सुनिश्चित करते हैं। इसमें सभी जीवों एवं द्रव्यों का महत्त्व है। किसी का शोषण, दुरुपयोग या हिंसा पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। सभी जीव परस्पर एक-दूसरे के लिए उपकारक हैं। जैसा कि तत्त्वार्थसूत्र में कहा गया है-परस्परोपग्रहो जीवानाम्। जीव परस्पर एक-दूसरे के जीवन में सहयोगी होते हैं। पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं तथा हमारी कार्बन-डॉइ-आक्साइड को पेड़-पौधे ग्रहण कर प्रदूषण से हमारी सुरक्षा करते हैं। परिवार में सभी सदस्य एक-दूसरे के जिस प्रकार सहयोगी होते हैं उसी प्रकार पर्यावरण में सभी जीव किसी न किसी रूप में परस्पर कुछ देते हैं। जो देता नहीं है और सब जगह लेने की ही बुद्धि रखता है वह पर्यावरण को प्रदूषित करता है। भूमि का अत्यधिक खनन, जल का अत्यधिक प्रयोग, प्राकृतिक स्रोत का अनावश्यक दोहन, सुख-सुविधा के साधनों से जनित वायु प्रदूषण, तकनीकी साधनों से वर्धित ध्वनि प्रदूषण और सूक्ष्म रूप में इलेक्ट्रिक एवं मैग्नेटिक तरङ्गों के माध्यम से प्राणियों के लिए हानिकारक प्रदूषण मनुष्य के द्वारा उत्पन्न किया जा रहा है। मनुष्य जल, थल और नभ में सर्वत्र हिंसा का प्रयोग करता है जिससे प्रतिवर्ष हजारों जीव प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। मनुष्य के पास बुद्धि है, उपकरण हैं, वह चाहे तो जीवनदान दे सकता है लेकिन वह बड़े स्तर पर जीवन लेने के लिए उतारू रहता है। इससे प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ रहा है और पर्यावरण भी प्रदूषित हो रहा है। प्रसाधन सामग्री के लिए भी हिंसा

हो रही है। मांस, चमड़ा आदि के लिए बृहद् स्तर पर कत्ल खाने सञ्चालित हैं। जिनमें प्रतिवर्ष करोड़ों जीव काल का ग्रास बन जाते हैं। अभक्ष्य प्राणियों को भी मनुष्य ने अपना आहार बना लिया है।

हमारे चारों ओर सूक्ष्म जीव विद्यमान हैं, जिनमें बैक्टीरिया और वायरस का भी समावेश होता है। बैक्टीरिया हमारे शरीर के भीतर भी हैं और बाहर भी विद्यमान हैं। हिंसा का परिणाम प्रति हिंसा होता है। जब हम जीवों की हिंसा करते हैं तो उनकी आह एवं पीड़ा की तरंगें हमें प्रदूषित करती हैं और उन पर विद्यमान ये सूक्ष्म जीव कोरोना जैसे रोग को उत्पन्न करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। प्रायः सभी प्राणी अपने भोजन के लिए ही भ्रमण करते हैं। वे किसी को मारने का जानबूझ कर प्रयत्न नहीं करते हैं। मनुष्य ही एक प्राणी है जो न जाने कितने कारणों से हिंसा पर उतारू होता है। वह निष्प्रयोजन भी हिंसा करता है। तो कभी भय और आशंका से हिंसा करता है। वह आतुरता, अज्ञान, प्रमाद, सम्मान, परिग्रह, जन्म-मरण आदि विभिन्न कारणों से हिंसा को बढ़ाता रहता है।

आज आवश्यकता है समस्त प्राणियों के साथ मैत्रीभाव का विकास करने की, सबके जीवन को महत्त्व देने की, ताकि यह पर्यावरण हमारे जीवन के लिए अनुकूल बना रहे। आज विश्व में पृथ्वी को बचाने की चिन्ता हो रही है, जल का संकट मानवजाति को आशंकित करता है, किन्तु अहिंसा के प्रयोग से पर्यावरण को बचाया जा सकता है।

4. उन्नत समाज-आचाराङ्गसूत्र में कहा गया है कि किसी प्राण, भूत, जीव एवं सत्त्व की हिंसा नहीं करनी चाहिए, उनको परिताप नहीं देना चाहिये। किसी का शोषण नहीं करना चाहिये। किसी को गुलाम नहीं बनाना चाहिये और किसी को अशान्त नहीं करना चाहिये। आचाराङ्गसूत्र का यह सन्देश यदि अक्षरशः पालन किया जाये तो व्यक्ति का जीवन भी सुन्दर होगा और वह समाज भी उन्नत होगा। हम आर्य पुरुषों के समाज को उन्नत समाज समझते हैं। आगमों के अनुसार जो हिंसा करता है वह अनार्य है तथा जो हिंसा नहीं करता है वह आर्य है। धम्मपद में भी इसी तरह का कथन हुआ है-

न तेन अरियो होति, येन पाणानि हिंसति।
अहिंसा सव्वपाणानं, अरियोति पवुच्चति॥

प्राणियों की हिंसा करने से कोई आर्य नहीं होता है, अहिंसा के कारण ही व्यक्ति आर्य कहा जाता है। इस उन्नत समाज में नारी-उत्पीड़न, यौन-शोषण, अर्थ-शोषण, मानसिक-शोषण आदि सभी का कोई स्थान नहीं होता। इसमें सभी भय एवं वैर से रहित होते हैं। परिवार में शान्ति होती है और समाज भी प्रगतिशील होता है।

5. विश्व शान्ति-प्रश्नव्याकरणसूत्र में कहा गया है कि अहिंसा त्रस और स्थावर सभी जीवों का कल्याण करने वाली है-अहिंसा तसथावर-सव्वभूयखेमंकरी। अहिंसा सभी जीवों को निर्भयता प्रदान करती है। एक-दूसरे के अधिकार का हनन हिंसा है, उसकी रक्षा करना अहिंसा है। विश्व में दूसरे राष्ट्र के अधिकार का हनन करने से अशान्ति उत्पन्न होती है। अधिकारों की रक्षा शान्ति को सुरक्षित करती है। हिंसा से हिंसा की शुद्धि नहीं होती है। बदले की भावना हिंसा को बढ़ाती है। अहिंसा और क्षमा से ही इस पर विराम लग सकता है। विश्व में जो आतंक फैला हुआ है उसका समाधान भी अहिंसापूर्वक निकाला जा सकता है। प्रत्येक प्रकार का अत्याचार हिंसा का रूप लेता है। मानव समाज को अहिंसा से जीने के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। साम्राज्य का विस्तार, बलात् धर्मान्तरण की योजना आदि भी विश्व में अशान्ति के कारण बनते हैं।

इस प्रकार अहिंसा व्यक्तिगत शुद्धि, प्राणिरक्षा, पर्यावरण-संरक्षण, सभ्य समाज और विश्व में शान्ति की स्थापना हेतु अत्यन्त आवश्यक है। यह अहिंसा तभी पुष्ट होती है जब समस्त प्राणियों को अपने समान समझा जाये। सबमें चेतना है, सब जीने की इच्छा करते हैं, अतः उनके अधिकार की रक्षा करते हुए हमें अपने जीवन को उन्नत बनाना चाहिये। जीवनशैली इस प्रकार की हो कि जिसमें हिंसा अल्प से अल्पतर हो। पूरे विश्व को कुटुम्ब समझने की भावना हो और सबके कल्याण की मंगल कामना हो। इस तरह अहिंसा न केवल आत्मकल्याण करने वाली अपितु विश्व का कल्याण करने वाली सिद्ध होती है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

प्रश्न-मणसमाहारणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?

उत्तर-मणसमाहारणयाए णं एगगं जणयइ। एगगं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं च निज्जरेइ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 29, सूत्र 56, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

अर्थ-भगवन्! मनःसमाधारणता से जीव को क्या प्राप्त होता है? मन की समाधारणता से जीव एकाग्रता प्राप्त करता है। एकाग्रता प्राप्त करके ज्ञान-पर्यवों को प्राप्त करता है। ज्ञान-पर्यवों को प्राप्त करके वह सम्यक्त्व को विशुद्ध करता है और मिथ्यात्व की निर्जरा करता है।

विवेचन-समाधारणता शब्द का प्रयोग मन, वचन एवं काया इन तीनों को सम्यक् रूप से स्थिर करते हुए उपयोगयुक्त होने के अर्थ में होता है। मन को एकाग्रतापूर्वक कहीं नियोजित करने में जब उपयोग लगता है, तो मन की समाधारणता सधती है। इसी प्रकार वचन को जब किसी कथनीय विषय में लगाया जाय तो वह वचन की समाधारणता कहलाती है। इसमें वचनों का प्रयोग करते समय उपयोग उसी में रहता है और सम्यक् वचनों का प्रयोग किया जाता है। काय समाधारणता में काया को स्थिर करके उपयोगपूर्वक साधना में लगाया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि मन, वचन और काया इन तीनों की समाधारणता से साधना सम्भव है।

मन, वचन एवं काया का जब सम्यक्तया प्रयोग नहीं किया जाता है तो ये तीनों जीव के पतन में निमित्त बनते हैं और जब इनका जागरूकतापूर्वक उपयोग किया जाता है तो ये तीनों साधना में सहायक बनते हैं।

जैनागमों में मनोगुप्ति, वचनगुप्ति एवं कायगुप्ति शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मनोगुप्ति में मन को

दुश्चिन्तन या व्यर्थ चिन्तन से निरुद्ध किया जाता है। मन जहाँ-जहाँ पापास्रव में निमित्त बनता है, वहाँ-वहाँ साधक सावधान होकर मन को निगृहीत कर लेता है। इसी प्रकार जिन वचनों का प्रयोग आस्रव का कारण बनता है, उन वचनप्रयोगों का निरोध करना वचनगुप्ति है। वचन का प्रयोग कई बार कलहकारी बन जाता है और कभी व्यक्ति को अविश्वसनीय बना देता है। कायगुप्ति में काया के उस व्यवहार को निरुद्ध किया जाता है जो साधना में बाधक बनता है अथवा आस्रव में निमित्त बनता है। कायगुप्ति साधना का बहुत बड़ा अङ्ग बनती है। पाँच इन्द्रियों का गोपन भी इस कायगुप्ति में समाविष्ट होता है। मन का भी इन्द्रियों के साथ गहन सम्बन्ध है। जो समनस्क जीव होते हैं, वे मन की चञ्चलता के कारण इन्द्रिय-भोगों में प्रवृत्त होते हैं। अतः मन को निगृहीत करने से भी इन्द्रियों का निग्रह होता है।

इस प्रकार त्रिविध गुप्तियों के द्वारा जहाँ मन, वचन एवं काया को अशुभ प्रवृत्तियों में जाने से नियन्त्रित किया जाता है, वहाँ मन, वचन एवं काया की समाधारणता के द्वारा उनका साधना की प्रवृत्ति में उपयोग किया जाता है।

स्थानाङ्गसूत्र में तीन प्रकार के दुष्प्रणिधान एवं तीन प्रकार के सुप्रणिधान भी कहे गए हैं। मन, वचन और काया का दुष्प्रवृत्तियों में नियोजन करना दुष्प्रणिधान है तथा सत्प्रवृत्तियों में नियोजन करना सुप्रणिधान है। सुप्रणिधान भी साधना का अङ्ग है। सुप्रणिधान के पश्चात् समाधारणता साधना का अधिक विशिष्ट अङ्ग है। निर्ग्रन्थ श्रमण-श्रमणी के 27 गुणों में मन समाधारणता, वचन समाधारणता और काय समाधारणता को पृथक् स्थान दिया गया है।

मन-समाधारणता से जीव साधना में एकाग्रता को

उत्पन्न करता है। साधक जो भी स्वाध्याय, ध्यान, प्रतिलेखना आदि कार्य करता है, उसे मन-समाधारणता से एकाग्रतापूर्वक सम्पन्न करता है, उसका ध्यान अन्यत्र नहीं जाता। उपयोग पूरी तरह उसी कार्य में लगा होता है। उत्तराध्ययनसूत्र कह रहा है कि इस एकाग्रता को उत्पन्न करके साधक ज्ञानपर्यवों को प्रकट करता है और ज्ञानपर्यवों को प्रकट करके सम्यक्त्व की शुद्धि करता है तथा मिथ्यात्व की निर्जरा करता है।

मन की एकाग्रता ज्ञान को विशुद्ध करती है और सम्यक्त्व को भी विशुद्ध बनाती है। इसी प्रकार वचन की समाधारणता दर्शन के पर्यवों को शुद्ध करती है तथा जीव को सुलभबोधि बनाती है। काया की समाधारणता चारित्र के को पर्यवों की शुद्धि करती है और यथाख्यात चारित्र को विशुद्ध बनाती है। अन्त में केवली के चार अघाति कर्मों का भी क्षय हो जाता है और जीव सिद्ध-बुद्ध एवं मुक्त होकर निर्वाण को प्राप्त करता हुआ सब दुःखों का अन्त कर देता है।

यहाँ सूत्र में मन समाधारणता का कथन है। मन का समाधारण आगम सूत्रों के चिन्तन में भी हो सकता है। मन की महत्ता का बोध इस सूत्र से होता है कि उसका सही उपयोग किया जाय तो साधना के विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

यहाँ पर एक बात स्पष्ट होती है कि जब मन को साधना में एकाग्र किया जाता है तो ही वह समाधारणता है। भोग वासनाओं में मन की एकाग्रता तो असाधन है, जो साधु का गुण नहीं होता। वह एकाग्रता तो आर्तध्यान की ओर ले जाती है। दूसरी बात यह है कि साधना में एकाग्रता होने का तात्पर्य है विषय-कषायों से रहितता। दुश्चिन्तन एवं दुर्ध्यान से रहितता। स्वाध्याय, प्रतिलेखना, वैयावृत्य आदि में मन की समाधारणता भी मोह, ज्ञानावरण आदि कर्मों का क्षयोपशम कर ज्ञान के पर्यवों को प्रकट करती है। ज्ञान होने पर मिथ्यात्व स्वतः छूट जाता है एवं कर्मों की निर्जरा भी होती है।

उदयभाव की निष्फलता : साधना की सफलता

श्री जितेन्द्र चोरड़ियर 'प्रेक्षक'

उदयभाव में अशुभ भाव को, छोड़ रहें समभाव में।
अशुभ भाव में है विभाव, रहें स्थिर निज स्वभाव में।।

उदयभाव में बहते रहना, अनन्तकाल से कर रहे,
स्वभाव से विपरीत होने का फल, हम निरन्तर भर रहे।
प्रतिस्रोत-गामी बन तेरे, हम विपरीत प्रवाह में,
अशुभ भाव में है विभाव, रहें स्थिर निज स्वभाव में।।

भोग-विकारों ने मेरे, आत्मिक गुणों को लूटा है,
दुःख में सुख के मन्तव्य से ही, सच्चा सुख मुझसे छूटा है।
अब नहीं बहना है मुझको, मिथ्यादृष्टि के प्रभाव में,
अशुभ भाव में है विभाव, रहें स्थिर निज स्वभाव में।।

परिस्थिति और व्यक्ति हमें, अच्छे लगते अनुकूल,
स्वार्थी दृष्टि हमें ये हमारी, नहीं बताती भूल।
दृष्टि परिवर्तित कर ठहरें, हम समता की छाँव में,
अशुभ भाव में है विभाव, रहें स्थिर निज स्वभाव में।।

आत्म-शत्रु हैं राग-द्वेष, और चार कषाय प्रमुख,
मित्र मानकर क्यों होना, अब इनकी ओर उन्मुख।
आत्म-गुणों के घातक हैं, नहीं बहना हमें दुर्भाव में,
अशुभ भाव में है विभाव, रहें स्थिर निज स्वभाव में।।

पाप कृत्य और विषय भोग ही, नहीं लक्ष्य है जीवन का,
इनसे ऊपर उठ जायें तो, ये सुख प्रत्यक्ष है उद्यम का।
रमण स्वभाव में नित्य करें, क्यों रहें स्वभाव अभाव में,
अशुभ भाव में है विभाव, रहें स्थिर निज स्वभाव में।।

- सी-16/1, कृष्ण-कुंज, हलेड़ रोड़, भीलवाड़ा-311
001 (राज.)

आत्मशक्ति-संवर्धन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

- ❧ यदि कामनाओं को वश में कर लोगे तो दुःख सदा के लिए नष्ट हुआ समझो।
- ❧ त्यागी को चाहिये कि जिस वस्तु को छोड़ दिया उसे वापस लेने की इच्छा भी नहीं करे।
- ❧ आत्मा के भीतर अनन्त शक्ति और सामर्थ्य है, अनन्त ज्योति है। पहचानिये। इसको पहचानने का माध्यम है स्वाध्याय। इसलिये कहा गया है कि बिना स्वाध्याय के ज्ञान नहीं होता। ज्ञान की ज्योति जगाने के लिए, आत्मा की ज्योति जगाने के लिए, स्वाध्याय एक अच्छा माध्यम है।
- ❧ जैनधर्म किसी जाति विशेष के बन्धन में बन्धा हुआ नहीं है। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सभी जातियों के लोग साधना कर सकते हैं।
- ❧ हमारा आहार बिगड़ गया तो स्वास्थ्य भी बिगड़ जायेगा।
- ❧ यदि जीवन में धर्म को व्याप्त करना चाहते हो तो आहार शुद्धि पहली चीज है।
- ❧ यदि आदमी को अपने विकारों पर काबू पाना है तो पहली शर्त है कि वह आहार प्रमाण से युक्त करे; दूसरी यह कि आहार दोष रहित हो।
- ❧ समाज के बहुत से भाई अर्थ की कमजोरी से और कुछ ज्ञान की कमजोरी से दोलायमान होते हैं, कुछ समाज के सहयोग की कमजोरी के कारण दोलायमान होते हैं। इधर-उधर होने के ये तीन मुख्य कारण हैं।
- ❧ मन के बाहर जाने का सबसे बड़ा कारण राग है, इसलिए इसे कम करो। राग कम करने का उपाय है-बाहरी पदार्थों को अपना समझना छोड़ दो।
- ❧ अर्थ की गुलामी से छुटकारा पाने के लिए कामना को कम करना पड़ेगा।
- ❧ बच्चे का सुख, घर वालों का सुख, शरीर का सुख अथवा धन का सुख-ये सब सुख किससे मिलते हैं? पुण्य से। और दुःख किससे मिलता है? पाप से। फिर इस प्रकार की स्थिति में दुःख मिलने पर किसी अन्य पर रोष करना, किसी दूसरे को दुश्मन समझना, विरोधी अथवा अपना अनिष्ट करने वाला मानना उचित नहीं।
- ❧ संसार में जो दृश्यमान पदार्थ हैं, वे टिकने वाले नहीं हैं। जो उत्पन्न हुआ, उसका विनाश सुनिश्चित है, जो बनता है वह एक दिन अवश्य बिगड़ता है। ये इमारते बनी हैं, कोठियाँ बनी हैं, बंगले बने हैं, किले बने हैं, वे सब कभी न कभी नष्ट होंगे, यह अवश्यम्भावी है। यह वस्तु का स्वभाव है।
- ❧ अगर किसी की वाणी में ऊपर से कटुता है, तो वह इतनी बुरी नहीं है जितनी कि भीतर से भरी कटुता बुरी है। ऊपर वाला बोल देगा और समाधान पाकर शान्त भी हो जाएगा, पर भीतर की कटुता बड़ी खतरनाक होती है।
- ❧ जिसमें श्रद्धा नहीं है, वह ज्ञान का अधिकारी नहीं बन सकेगा।
- ❧ ज्ञान के साथ जो तपस्या है वह ऐसी बड़ी-बड़ी शक्तियों को प्रकट कर देती है, जिससे मानव का मन हिल जाता है।
- ❧ आग की चिनगारी मनो भ्रम भूसे को जलाने के लिए काफी है, वैसे ही तपस्या की चिनगारी कर्मों को काटने के लिए काफी है।
- ❧ मन-शुद्धि और चित्त-शुद्धि करेंगे तो आत्मा में बल प्रकट होगा और कल्याण के भागी बन सकेंगे।
- ❧ जीवन चलाना महत्त्वपूर्ण बात नहीं है, लेकिन महत्त्वपूर्ण बात है-जीवन बनाना।

- 'अमृत-वाक्' पुस्तक से गृहीत

सुख एवं समाधि देता है संयम

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

संसार के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर अनन्त सुख का सागर लहराने वाले तथा साधना के संयम सुमेरु को स्वीकार कर निरञ्जन, निराकार पद को प्राप्त करने की भावना वाले पञ्च परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

हजार रोगों की एक दवा बतायी जा रही है। सैकड़ों प्रश्नों का एक शब्द में समाधान किया जा रहा है। कभी शिक्षक ऐसा भी प्रश्न किया करते हैं कि 100 सवालियों का एक जवाब दिया जाये। इसी तरह जीवन सञ्चालन में अनेक समस्याएँ हैं, उन सभी समस्याओं का एक समाधान है-संयम। बुजुर्ग लोग तीन बातें कहा करते थे कि अपना पद, अपनी प्रतिष्ठा, अपने खानदान की इज्जत और कुल का गौरव रखना चाहते हो तो 'हाथ पर संयम, बात पर संयम और काँध पर संयम रखना।' जब तक तुम्हारे जीवन में ये तीन बातें रहेंगी तुम्हें कोई भी गिराने वाले, अपदस्थ करने वाले नहीं मिलेंगे। शास्त्रकारों ने इस संयम को भाग्य-विधाता के नाम से कहा है। आज का संयम पालन कल सिद्धि पद की ओर ले जायेगा। वर्तमान का संयम भविष्य में शाश्वत सुख और चिरसमाधि प्राप्त करायेगा।

दुनिया के जितने भी तत्त्व हैं, मूलभूत पदार्थ हैं वे सब मर्यादा में ही अच्छे लगते हैं। जब तक मर्यादा में हैं तब तक पूज्य हैं। जिस दिन मर्यादा छोड़ देंगे उनके पास कोई नहीं फटकेगा। धरती अपने संयम पर कायम है। एक मञ्जिल नहीं 27-27, 45-45 मञ्जिलों के भव्य भवन बन रहे हैं। जब तक धरती मर्यादा में है तब तक ये अट्टालिकाएँ सुरक्षित हैं, एक सेकण्ड के लिए भूकम्प आ जाये, धरती एक सेकण्ड के लिए डोल जाय तो सब कुछ तबाह हो जायेगा। मुम्बई, चेन्नई के रहने वाले

लोगों को देखने का काम पड़ता है, क्योंकि समुद्र किनारों पर उनके मकान बने हुए हैं। ये मकान इसलिये बने हुए हैं, क्योंकि इन्हें विश्वास है कि सागर अपनी मर्यादा नहीं लाँघ सकता। जब तक सागर मर्यादा में है, कष्ट नहीं है। अगर एक घण्टे के लिए भी सागर मर्यादा छोड़ दे तो नज़दीक का कोई घर ऐसा नहीं रहेगा, जो जलमग्न नहीं होगा। ऐसा कोई घर नहीं है जिस घर में अग्नि का उत्पादन नहीं होता। चूल्हे के रूप में, गैस के रूप में, स्टोव के रूप में अग्नि है। यह अग्नि मर्यादा छोड़ दे अर्थात् चिनगारी थोड़ी उछल कर आगे बढ़ जाये तो सब स्वाहा कर देगी। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। सूर्य की बात कहें, यदि वह अपनी मर्यादा छोड़ दे तो तीव्र ताप से सारी धरती झुलस जाये। ये सारे के सारे तत्त्व मर्यादा में चल रहे हैं, लेकिन मानव की मर्यादा क्यों गायब हो रही है? न खाने का संयम है, न बोलने का संयम है, न भोग का संयम है और न ही धन का संयम है। जितनी-जितनी मर्यादा छोड़कर चलेंगे अपनी इज्जत खराब करेंगे, कर्मों का बन्ध करेंगे और दुःखों से नाता जोड़कर अधस्तल से सम्बन्ध करेंगे। इसलिये मानव के जीवन में अगर कोई महान् तत्त्व है तो वह है संयम। एक छोटी-सी बात रखूँ-

अन्न नहीं है शिव सुख दाता,

शिव सुखदाता संयम है।

जन्म-मरण की व्याधि मिटाता,

मूल्य बढ़ाता संयम है।

जग के सारे रिश्ते झूठे, सच्चा नाता संयम है,

हाँ, सच्चा नाता संयम है।

स्नेही सुमति भाव भगिनी,
माता-पिता सब संयम है।।

शास्त्र कह रहे हैं मानव तेरा अगर अपना है तो केवल मात्र संयम है। माँ नहीं, बाप नहीं, पुत्र और परिवार नहीं, दौलत नहीं अगर सच्चा साथी यदि कोई है तो वह संयम है। अगर संयम नहीं है तो कुछ भी नहीं है, न घर में शान्ति है, न मौहल्ले में आदर है और न ही समाज में प्रतिष्ठा है।

संयमी साधु हैं, महाव्रती बन गये हैं। लेकिन संयम का सम्यक् आचरण नहीं है तो वह साधुपना भी कुछ काम का नहीं है। उदाहरण के लिए कभी सुनने को मिलता है कि किसी गाँव में चातुर्मास नहीं हो रहा था, क्योंकि बड़े सन्तों का चातुर्मास कराने की क्षमता नहीं थी। इसलिये गाँव के भाइयों ने सामान्य श्रेणि के असम्यक् आचरण वाले सन्तों का चातुर्मास स्वीकार कर लिया। एक महीना भी नहीं बीता कि उनके असंयमी आचरण को देखकर चातुर्मास खत्म होने की माला फेरना शुरू कर दिया। गाँव के भाई लोग दिन-रात विचार करते कि एक माह तो निकल गया, जैसे-तैसे तीन माह और निकल जाय। क्यों? क्योंकि सन्तों में संयम नहीं है। घर में भी यदि पारिवारिकजनों में संयम नहीं है तो घर भी अखाड़ा बन जायेगा। कँवर साहब को बोलने का संयम नहीं है तो जब वे पधारेंगे तो बच्चे चुप हो जायेंगे, माँ भी शान्त होकर बैठ जायेगी। कँवर साहब को खाना खाकर चले जाने दो इसका इन्तजार करेंगे, क्योंकि बोलने में संयम नहीं है।

एक असंयम ने अञ्जना को 12 वर्ष तक पति वियोग में रखा। घर में रहते हुए भी उसका रात-दिन आँसुओं के साथ जीवन निकल रहा है। ऐसा नहीं है कि वह विधवा हो गयी है, ऐसा नहीं कि पति अशक्त है या पति में कोई ऐब है, परन्तु पिछला कर्म बाँधा हुआ है। पति न बोलते हैं और न देखते हैं जब पत्र दिया जाता है तो फाड़कर फेंक देते हैं, मिलने के लिए कहा जाय तो कहते हैं कि ऐसी कुलटा से क्या मिलूँ।

क्या किया है ऐसा अञ्जना ने? पति को परमेश्वर

मानने वाली को ऐसा दुःख क्यों देखना पड़ा? पिछले जन्म में उसने संयम नहीं रखा था। एक रत्न खुद ने चुराया और दूसरों पर आरोप लगाया। परिणामस्वरूप आज स्वयं पर बिना कारण आरोप लग रहा है और पति के वियोग से दुःख देख रही है। आपने जरूर सुना होगा देवकी महारानी के 7 पुत्र हुए, शायद भरत क्षेत्र में ऐसी कोई माता नहीं होगी जिसने ऐसे श्रेष्ठ रूप वाले 7 पुत्रों को जन्म दिया हो। एक-एक कमनीय हैं, लावण्यशाली हैं, लेकिन एक भी पुत्र को खिलाया नहीं, पाला नहीं, उनकी शैशवावस्था का सुख नहीं देखा। देवकी रानी ने पिछले जन्म में सात रत्न चुराये थे, एक लौटाया था, छह रत्न हजम कर गईं, हड़प गईं। उन कर्मों के फल के रूप में ज़िन्दगी भर छह पुत्रों का वियोग रहा।

मैं आपसे पूछूँ आपने कोई पुड़िया चुराई। आप कहोगे-बाबजी राम-राम! चोरी की बात कह रहे हो। मैं तो असंयम के कटु परिणामों की बात कर रहा हूँ। एक हाथ का असंयम अञ्जना को इतना दुःखी करता है कि उसे विचार आता है कि ऐसे जीवन से तो मर जाना अच्छा है। खिड़की में से झाँक कर पतिदेव को देख लिया तो खिड़की पर दीवार चिनवा दी। पतिदेव युद्ध में जा रहे हैं, लोग आरती करने जा रहे हैं, थाली लेकर टीका कर रहे हैं, अञ्जना भी जा रही है, पर पतिदेव ने देखा तक नहीं। दोष क्या है उस अञ्जना का? कई बाइयों से ऐसा सुनते देखा है बाबजी पति कमाता तो घणा है, पर खर्च भी घणो करै। मैं जब से थोड़ा-थोड़ा पैसा निकाल लेवा हाँ, जो आगे काम ही आयेगा। पर यह भी कार्य चोरी के अन्तर्गत ही है। अञ्जना ने चोरी करके दूसरों पर आरोप लगाया उसका कटु फल भोग रही है। चोरी करके दूसरों पर लाञ्छन मढ़ने के, जब पाप उदय में आयेंगे तब कोई भगवान भी नहीं बचा पायेंगे। किसी पर लाञ्छन लगा देना सरल है, लेकिन उस कर्म को भोगना कठिन है।

संयम की बात कहने जा रहा हूँ। कुछ लोग दया कर रहे हैं। आप लोगों ने सन्तों के चातुर्मास कराये हैं। आप साधना-आराधना से अनभिज्ञ नहीं हैं। जैसे आपने

18 पापों को छोड़कर दया रूपी संयम लिया है तो एक दिन के लिए इस लालीबाई का भी संयम रखना। ऐसा नहीं हो कि ये दया बदनाम हो जाये। लोगों में दया के नाम पर गलतफहमी नहीं हो, इस दया रूपी संयम में रसों की आसक्ति बढ़ाने का काम नहीं करें, एक दिन के लिए इस जिह्वा पर संयम की जरूरत है। एक दिन तो अनुभव करो कि ये सन्त अपना जीवन कैसे निकालते हैं, एक दिन के लिए इस खाने पर भी संयम करके देखो आनन्द आयेगा।

मैंने आचार्य भगवन्त से इस दया को देश पौषध के नाम से सुना है। दिन के लिए दया और रात के लिए नहीं, ऐसी हमारी परम्परा के अनुसार समझ में आने वाली बात नहीं है। दया तो दिन-रात की मिलाकर 7 प्रहर की होती है। संवर के प्रत्याख्यान दिन-दिन के भी हो सकते हैं, क्योंकि इसमें काल मर्यादा स्वयं की सुविधा के अनुरूप होती है। जितना करना चाहो कीजिए पर दया के प्रत्याख्यान 7 प्रहर के ही होते हैं। दया और संवर दोनों आराधनाएँ अलग-अलग हैं। संवर की आराधना देश पौषध के नाम से नहीं कही जाती है।

साधु के महाव्रतों में कोई आगार नहीं है, जिसमें आगार हैं वे महाव्रत नहीं हैं। श्रावक के 49वाँ भांगा तीन करण तीन योग से आराधना करने का है। इसमें कोई आगार शास्त्र में देखने को नहीं मिलता। इसलिये श्रावक की यह आराधना साधु के जैसी हो जाती है। स्पष्टीकरण के लिए कहा जाय संवर करने वाला दिन के समय करे और रात को आराधना नहीं करे तो उसे दया की संज्ञा नहीं दे सकते हैं।

आयम्बिल के नाम पर प्रशंसा की जा रही है। पाँच विगय का त्याग करके आयम्बिल तप किया जाता है। लेकिन साथ ही आयम्बिल में आहार लूखा हो, अलूणा हो, ठण्डा हो यह ध्यान रखें। ये मर्यादाएँ नहीं

करने पर आयम्बिल का शुद्ध स्वरूप नहीं रहता। आज अनेक लोग उपवास में भी छूट लेकर चलते हैं जबकि स्पष्ट है असण, खादिम और स्वादिम का पूर्ण त्याग ही उपवास है। यह भी कहते हैं कि हम तो किसी को दिखाने के लिए नहीं करते, अपने लिये कर रहे हैं। लेकिन अपने को धोखा देना धर्म को धोखा देना है। आपसे जितना पलता हो उतना ही पालिये, परन्तु मर्यादाओं को मत लाँघो। अगर ये मर्यादा, मर्यादा के रूप में नहीं रहेंगी तो एक दिन ऐसा आयेगा कि शुद्ध मर्यादा पालन करने वाले नहीं मिलेंगे। एक बार छूट दी जाने के बाद रोकना बहुत कठिन है। संयम दिवस है, इसलिये आप संयम रखिये, मर्यादा के साथ रहिये। हाथ का संयम नहीं रखने के कारण अब्जना ने पूर्व भव में रत्न चुराया और उसका दुःखद परिणाम भोग रही है। दूसरा बात का संयम है। अगर बात का संयम है तो आप लाख कीमत के हो जायेंगे और बात का संयम नहीं है तो कोड़ी के हो जायेंगे, अगर और नीचे उतरूँ तो फूटे ढोल हो जायेंगे।

गिन-गिन मुख से बोले बोल, रतन अमोल मुख से तोल। बिना विचारे बोले बोल, ते नर जाणो फूटा ढोल।।

तीसरा काछ का संयम। काछ का संयम करके चलेंगे तो आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, दूसरों के लिए आदर्श उपस्थित करेंगे। सुदर्शन सेठ ने संयम रखा और वह अभया के कामुक जाल में नहीं फँसा, स्थूलभद्र ने भी कोशा के यहाँ कामविकारों को उत्तेजित नहीं होने दिया तो आज वे गाये जा रहे हैं। अपनी काम-वासना पर संयम रखकर ही सभी साधु-साध्वी पूजनीय, वन्दनीय होते हैं। इसलिये काछ पर संयम रखने वाले अर्थात् शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले अनेक भव्य जीव अपने जीवन का कल्याण कर चुके हैं और कर रहे हैं। जो करेगा वह आगे बढ़ पायेगा।

॥ स्तुति करने वालों को समझना चाहिए कि प्रभु-भक्ति तुम्ब की तरह तारक है। मन की मशक में प्रभु-भक्ति एवं सद-विचार की वायु भरने से आत्मा हल्की होकर तिर जाती है।
-आचार्यश्री हस्ती

भावी आचार्यश्री : एक समर्पित व्यक्तित्व

न्यायमूर्ति श्री प्रकाश टाटिया

आप-हम सबको ज्ञात ही है कि गुरु हीरा के पुण्यधरा पीपाड़ के यशस्वी चातुर्मास में गत वर्ष संवत्सरी महापर्व के दिन आचार्यश्री हस्ती पट्टधर आचार्यश्री हीरा ने संघ को भावी आचार्य की घोषणा बिना किसी आयोजन के पूर्ण सादगी से करके हम सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

मैं सबसे पहले पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अत्यन्त गम्भीर, दूरदर्शिता पूर्ण, समयानुरूप, साहसिक निर्णय और ऐतिहासिक घोषणा पर अन्तर्मन से स्वयं की ओर से तथा संघ की ओर से हार्दिक अनुमोदना करता हूँ तथा चतुर्विध संघ के लिए शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

जोधपुर के जाने-माने प्रतिष्ठित लोढ़ा परिवार में जन्मे, प्रज्ञा एवं प्रतिभा से सम्पन्न पढ़े-लिखे और सेवा-धर्म की साधना में रचे-पचे युवारत्न ने गुरु हस्ती के मुखारविन्द से जोधपुर में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की, वे महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. अब रत्नसंघ के भावी आचार्य हैं।

मैं जब भी गुरुदेव के दर्शन-वन्दन करने के लिए जाता हूँ, विशेष रूप से गत लगभग 4 वर्षों से तो मेरी नज़र भावी आचार्यश्री पर रहती रही है। रत्नसंघ के भावी पट्टधर में न तो अहंकार है और न ही पद-विशेष की आसक्ति। भावी आचार्यश्री पहले की तरह सभी कार्य पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाते रहते हैं।

आचार्यश्री हीरा ने भावी आचार्यश्री के सबल कन्धों को समय-समय पर अत्यन्त महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ दी हैं। इन जिम्मेदारियों के निर्वहन में कुशलता से संघ सदैव लाभान्वित हुआ है। समय-समय पर मांगलिक देना, सन्त-सतीवृन्द को स्वखलना का प्रायश्चित्त देना आदि सभी कार्य कुशलता से सम्पादित कर रहे हैं। सरल एवं सरस भाषा-भाव में प्रवचन करना और देव-गुरु-धर्म का स्वरूप समझाकर जन-जन को

धर्म से जोड़ना, हर आगत व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह से बातचीत करके उन्हें व्रत नियम देकर उनके जीवन को बनाना, विचरण-विहार एवं चातुर्मास कहाँ उपयुक्त है, संघनायक पूज्यश्री को अपना अभिप्राय बताने का अनुरोध करना इत्यादि का लाभ सम्पूर्ण संघ को गत अनेक वर्षों से प्राप्त हो रहा है।

भावी आचार्यश्री आज्ञा-आराधन में और सामाचारी-पालन में स्वयं तो सक्रिय हैं ही, अन्य सभी सन्त-मुनिराजों तथा महासतीवृन्द को सजग करना, आडम्बर-प्रदर्शन दिखावे से दूर रहकर शासन-प्रभावना में सन्नद्ध रहना, स्वाध्याय-ध्यान-मौन और शास्त्र-स्वाध्याय में निरत रहने की साक्षात् प्रेरणा करते हैं।

मैं बड़ा अचम्बित हूँ कि भावी आचार्यश्री कब और कैसे संघनायक पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. से मार्गदर्शन-परामर्श लेते हैं। बात की भनक साथी सन्तों तक को नहीं होती होगी। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. की तरह आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञा-आराधन में और सेवा-धर्म की साधना में भावी आचार्यश्री के विशिष्ट गुण हैं जिन पर हम सबको गर्व है।

मैं भावी आचार्यश्री की सरलता, सादगी, सहिष्णुता और विनय, विवेक, विनम्रता से प्रभावित हूँ। आप अपने पुराने दायित्व के साथ-साथ नये कर्तव्य को पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से सम्पन्न कर रहे हैं, यह आपश्री का अनूठा आयाम है।

मैं महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यश्री की स्वास्थ्य-समाधि और संघोन्नति की शुभकामना करता हूँ।

-राष्ट्रीय अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

जोधपुर, संवत्सरी महापर्व

31 अगस्त, 2022

जानकारी एवं जीवन पर उसका प्रभाव

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा-जोधपुर में 31 मई, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

तीन रास्ते हैं इस हॉल में प्रवेश के लिए। एक वह रास्ता है जिससे प्रायः पुरुष आते हैं। दूसरा वह रास्ता है जिससे प्रायः महिलाएँ आती हैं। तीसरा एक रास्ता है-रपट का। रपट के रास्ते का भी प्रयोग करके हॉल में आया जा सकता है। तीनों रास्तों से आने वाले हॉल में आकर बैठते हैं। कहीं से भी आना होगा, लेकिन आने वाले सभी इस हॉल में बैठकर व्याख्यान सुनते हैं।

सुनने वाले सब मानव हैं। मानव कौन? जानने, मानने और करने की शक्ति से सम्पन्न जो हैं वे सब मानव हैं। जानकारी का सदुपयोग, मानने का प्रभाव और करने में सजगता। जानना, मानना और करना ये तीनों आत्मा की विभूतियाँ हैं। दो निज गुण के रूप में हैं तो एक है सहकारी साधन के रूप में।

आत्मा के आठ भेद हैं। द्रव्य आत्मा, कषाय आत्मा, योग आत्मा, उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, चारित्र आत्मा और वीर्य आत्मा। चारित्र में तप का समावेश कर दिया, वीर्य आत्मा को अलग कह दिया। सम्यग्दर्शन के पहले ज्ञान और चारित्र आत्मा नहीं होती। आप में से कई पच्चीस बोल जानते हैं। पच्चीस बोल तत्त्वों का सार है। जिनशासन में ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए पच्चीस बोल प्रवेश द्वार है। पन्द्रहवें बोले-आत्मा आठ। द्रव्य आत्मा असंख्य प्रदेशों का समूह है और भाव के आधार पर शेष सात आत्माएँ हैं।

भाव क्या है? वर्तमान पर्याय से उपलक्षित द्रव्य ही भाव है। वर्तमान में क्या पर्याय चल रहा है? पहले

गुणस्थान में अनादिकाल से छह आत्माएँ हैं, ज्ञान और चारित्र आत्मा नहीं है। जीव का लक्षण है-ज्ञान और दर्शन। उपयोगो लक्षणम्। जीव का उपयोग लक्षण है।

अब, लक्षण किसको कहना? असाधारण गुण को लक्षण कहते हैं। यानी-स्पेशल क्वालिटी। वह असाधारण गुण उसी द्रव्य में होगा, अन्य में नहीं। असामान्य गुण जीव को जड़ से अलग करने वाला है। स्व-पर को जानना जीव का लक्षण है। 'स्वपर-व्यवसायि ज्ञानं प्रमाणम्।' स्व-पर का निश्चयात्मक ज्ञान प्रमाण है। कषाय की तीव्रता है-अनन्तानुबन्धी और मिथ्यात्व का उदय। ज्ञान लक्षण वाले जीव के भी कदाचित् ज्ञानात्मा नहीं होती। जानकारी और जीवन में दूरी है, खाई है तब वह जानकारी ज्ञान नहीं कहलाती। जानकारी और जीवन में जब तक विषमता होती है तब तक जानकारी का उपयोग कर्तव्य पालन में नहीं होता।

हम एगे नाणं की चर्चा कर रहे हैं। ज्ञानात्मा को प्रकट करती है दर्शनात्मा। पहले गुणस्थान में ज्ञान नहीं, फिर भी दर्शन आत्मा है। भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 10 में आठ आत्माओं का अधिकार आया है। द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा, दर्शन आत्मा प्रत्येक जीव में सदा-सर्वदा 14वें गुणस्थान और सिद्ध अवस्था तक पाई जाती है। राजप्रश्नीयसूत्र में परदेशी राजा कहता है-मेरी दादी धर्मात्मा थी। वह खूब धर्म करती, इसलिए आपके सिद्धान्त से देवलोक में गई होगी। वह यदि यहाँ आकर मुझे कह दे कि मैं देवलोक में आनन्द में हूँ तो मैं मान लूँगा कि आत्मा है। वह आकर कह दे तो मैं पाप

का त्यागकर धर्म करने लग जाऊँगा।

मेरे दादा ने खूब पाप किए, इसलिए आपके सिद्धान्तानुसार वे नरक में गए होंगे। वे आकर मुझे बोल दें तो मैं मान लूँगा। चलो नरक वाला यहाँ आने में स्वाधीन नहीं, पर स्वर्ग वाला तो स्वाधीन है।

परदेशी के प्रश्न के उत्तर में केशीकुमार मुनिराज ने पूछा-तू नहा-धोकर, शृङ्गार से सुसज्जित बनकर राज-रानियों के साथ कौमुदी महोत्सव के लिए तैयार होकर जा रहा है, उस समय सफाई कर्मचारी गटर साफ करता है, गटर में फँसा कचरा निकालता है, वहाँ बदबू है। वह सफाई कर्मचारी कहे-आओ राजा परदेशी! थोड़ी देर के लिए यहाँ पधारो तो क्या आप उस गटर में जाएँगे?

राजा परदेशी ने उत्तर में कहा-भन्ते! ऐसा करना मेरे लिए न उपयुक्त है और न ही सम्भव। दूसरा उदाहरण देते मुनिराज ने कहा-कोई सोने के कलश में मल-मूत्र भरकर और उस पर रेशम का कपड़ा ढक कर आपको दे तो आप उसे ग्रहण करने के लिए भी तैयार नहीं होंगे। आप क्या, कोई भी उसे नहीं लेना चाहेगा। जब मल-मूत्र से भरे स्वर्ण पेट्टी को लेने के लिए तैयार नहीं तो.....?

यह शरीर हाड़-मांस का पुतला है। इससे घृणित और क्या हो सकता है? कहा भी है-

दीपे चाम चादर मढ़ी, हाड़ पिंजरा देह।

भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह॥

गन्दगी किसी को पसन्द नहीं, उसे कोई भी लेना नहीं चाहता। गन्दगी चाहे नाक का श्लेष्म हो या आँख का गीड अथवा मल-मूत्र ही क्यों न हो, अशुचि से सब घृणा करते हैं। भोग में जीवन-बुद्धि, मिथ्यात्व में जीवन-रस, अनन्तानुबन्धी वासना का मूल कारण ध्यान में आ जाता है तो उसका प्रभाव होता ही है। ज्ञान में जब दृढ़ आस्था हो जाती है तब आस्था से वास्ता होने पर रास्ता स्वयं अनुशास्ता बन जाता है।

शास्त्र में दो मृगाकुमारों का वर्णन है। एक-मृगालोढ़ा और दूसरा मृगापुत्र। मृगालोढ़ा का वर्णन

दुःखविपाकसूत्र में है। मृगालोढ़ा के न आँख है, न कान। आँख-नाक-कान आदि के स्थान पर मामूली छिद्र हैं। मुँह भी व्यवस्थित नहीं, वहाँ भी केवल छिद्र। ऐसा बीभत्स रूप देखते ही घृणा हो जाय। अंग है तो बस, औपचारिकता की पूर्ति के लिए। मृगालोढ़ा को गर्भ में मरवाने के अनेक उपाय किए, किन्तु आयुष्य प्रबल था। वह राजा के घर पैदा हुआ। राजा के घर में खाने-पीने की पर्याप्त सामग्री सुलभ है, सम्भालने वाले भी हैं, पर बदबू के कारण उसे तलघर में रखना पड़ता। उसका आहार सामान्य व्यक्ति से कई गुणा अधिक था। पैदा होते ही उखरड़ी पर फिकवाने की योजना थी, लेकिन राजा ने कह दिया कि यह पहली सन्तान है इसे नहीं फेंका जाय। राजा की भावनानुसार मृगालोढ़ा को गुप्त तहखाने में रखकर उसका पालन किया जाने लगा।

भगवान महावीर ने गौतम स्वामी से कहा-जाओ, मृगालोढ़ा को देखो तो सही। भगवान की आज्ञा से गौतम स्वामी देखने जाते हैं। राजा के वहाँ जाकर माता से पूछा-कहाँ है मृगालोढ़ा? मैं एक बार उसे देखना चाहता हूँ।

माता ने नाक कपड़े से बाँधी और गणधर गौतम स्वामी से प्रार्थना की कि आप भी मुँह पर कपड़ा बाँध लीजिए। तहखाने में भयंकर बदबू है।

मृगालोढ़ा के जीव ने मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल तो पाया, पर पूर्व जन्म के दुरुपयोग से, अन्याय-अनीति से, जनता पर जुल्म-अत्याचार और दमन से गया-गुजरा जीवन प्राप्त किया। मृगालोढ़ा का जीवन नारकीय वेदना तुल्य था।

गौतम स्वामी माता के साथ तहखाने जाने लगे तो देखा-एक गाड़ी भर खाना तहखाने में पहुँचाया जा रहा है। मृगालोढ़ा ने इधर खाना खाया, उधर पीप, रुधिर के साथ उल्टी हुई, मृगालोढ़ा उसी उल्टी को चाट रहा है। ऐसी उल्टी कोई देख ले तो मन बिगड़े बिना नहीं रहता। गौतम स्वामी ने मृगालोढ़ा की दुर्दशा देखी।

मृगालोढ़ा की ऐसी स्थिति क्यों बनी? बात यह है

कि उस जीव ने पहले जो पाप किए, षड्यन्त्र रचे, इन्द्रियों का दुरुपयोग किया वह सामने आ रहा है। दुःख विपाकसूत्र में पूरा वर्णन है।

हम किसी के साथ अन्याय-अनीति नहीं करें, क्योंकि पाप-कर्म एक-न-एक दिन उदय में आएँगे ही। अतः किसी को मारे नहीं, लूटे नहीं। कहा भी है-

किसी को मारे, किसी को लूटे, काम करे अन्याय का।
जैसा करोगे वैसा भरोगे, लेखा है राई-राई का।।

नहीं छोटे-बड़े की दरकार है,
चाहे कर ले तू जतन हजार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा,
फिर औरों का क्या एतबार है।

जरा कर्म देखकर करिये.....।

कल व्याख्यान के पश्चात् एक गुरुभक्त ने अपने साथी से कहा-26 तारीख का अखबार यदि नहीं देखा, तो देखना। अखबार में प्रधानमन्त्री की खुराक और दिनचर्या का वर्णन है। कब से नमक-मिर्ची-तेल बन्द है इसका भी उल्लेख है। सत्ता खाने-पीने और स्वार्थ-साधने के लिए नहीं, बल्कि सेवा और त्याग के साथ सबको सुखी बनाने की भावना के लिए है। प्रधानमन्त्री सात्त्विक खाना लेते हैं, प्रतिदिन एक घण्टा योग करते हैं।

बात चल रही थी कि मृगालोढ़ा को अपने द्वारा किये गये अशुभ कर्मों के फल का संयोग मिला।

संयोग क्या? उत्तराध्ययनसूत्र की प्रथम गाथा से आप परिचित हैं फिर भी मैं वापस दोहरा देता हूँ-

संजोगा विष्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि, अणगारस्स भिक्खुणो।।

द्रव्य संयोग बाहर की चीज है। मैं अभी पट्टे पर बैठा हूँ। यह द्रव्य संयोग है। आपने जो भी सुना है, सुने हुए, माने हुए सम्बन्धों का सद्भाव यह द्रव्य संयोग है। याद करो-आप किस नाम से जुड़े हुए हैं?

बच्चा, आपका नाम क्या? बच्चा बोला-मेरा नाम जिनेन्द्र है। बच्चे के कानों में बार-बार जिनेन्द्र-

जिनेन्द्र कानों में पड़ता गया तो कान जिनेन्द्र के नाम से परिचित होते गए। शब्द के संस्कार भीतर में जम गए। किसी ने आवाज दी-जिनेन्द्र। आवाज के साथ उसकी गर्दन उधर मुड़ जाती है। क्यों? उसे शब्द के संस्कारों से लग गया कि मैं ही जिनेन्द्र हूँ। स्कूल में टीचर या मैडम हाजरी लेते समय जिनेन्द्र बोली तो यस मैडम!

सुने हुए, माने हुए सम्बन्ध का सद्भाव संयोग है। अनुभवियों ने ठीक ही कहा-“बुराई करे नहीं, भलाई का फल चाहे नहीं और भलाई का अभिमान भी न करे।” बार-बार जो शब्द कान तक आते हैं उस सुने हुए का, माने हुए का सद्भाव जम जाता है। मुझे किसी ने कहा-प्रमोद मुनि। एक-दो बार ही नहीं, पाँच-पचास बार कहा तो मेरा अन्तर्मन कहेगा-तू ही प्रमोद है।

दीपावली के दिन आप घर पर नये दीपक लाते हैं। दीपक को ज्यों ही पानी में डालते हैं तो कुछ समय बाद वह पानी कहाँ चला जाता है? आप नई मटकी लाते हैं। मटकी में पानी डालते हैं तो थोड़ी देर में वह पानी नहीं दिखता। दीपक या मटकी जो मिट्टी से बना है वह मिट्टी डाले गए पानी को सोख लेती है। इसी तरह बार-बार जो शब्द कान तक आते हैं उन शब्दों का प्रभाव जम जाता है।

व्याख्यान सुनकर एक भाई कहता है-व्याख्यान बहुत अच्छा है। इतने में पीछे से कोई कहता है-क्या अच्छा व्याख्यान है, प्रमोदमुनि तो फालतू की बातें बताते हैं। मैं और मेरे में एक अहंभाव है और एक ममभाव है। ‘मैं’ अहंभाव है तो ‘मेरा’ ममभाव है। देह नाम में दृढ़ता होने पर, देहाभिमान और देहाभिमान से भेद पैदा होता है और भेद से संघर्ष।

संयोग दुःख का मूल है। संयोग बिना जीव रहता कैसे? वियोग में दुःख क्यों? हमारे सामने आदर्श है-“कर्म नहीं, काया नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं।” ज्योत में ज्योत विराजमान का आदर्श अव्याबाध सुख है। जहाँ कुछ नहीं, वहाँ सब कुछ है। हम कुछ के पीछे क्यों बर्बाद हो रहे हैं? बाहर में कुछ को पाना सब कुछ गँवाना

है। छह खण्ड का अधिपति चक्रवर्ती भी आत्म-साम्राज्य के सामने नगण्य है।

एक भाई सन्त के चरणों में कह रहा था कि मेरे पास इतनी जमीन है, इतनी जायदाद है, इतने खेत-खलिहान हैं। धन-सम्पदा की कोई कमी नहीं है। आप कोई भी सेवा हो तो मुझे अवसर दें, मेरे पास खूब सामग्री है।

सन्त ने उस भाई को एक नक्शा दिखाया। नक्शा सामने रखकर कहा-यह दुनिया का नक्शा है, इसमें तेरी जमीन कहाँ है? नक्शे में देश इतना-सा है, प्रान्त उससे कम और शहर का तो केवल मात्र बिन्दु जितना चिह्न है। नक्शे में जमीन और खेत बताना सम्भव नहीं होता। मतलब क्या? बाहर में सब-कुछ मानना और भीतर में गँवाना क्या मूर्खता नहीं?

संयोग में सुख की दासता है। बाहर के सुख से सुख मिलेगा, यह मान्यता सही नहीं है। विपरीत जानकारी के कारण विवेक का आदर नहीं हो पाता। मृगालोढा पृथ्वी पर भार है। उत्तराध्ययनसूत्र का 19वाँ अध्ययन है राजकुमार मृगापुत्र का। वह भी राजा का पुत्र है। राज-रानियों से घिरा हुआ है, भोग के सभी साधन सुलभ हैं, संगीत चल रहा है, नृत्य हो रहा है। रसना इन्द्रिय के पोषण की सभी सामग्री सुलभ है। उसे न रोग है, न शोक। वह राजमहल के सुन्दर झरोखे में बैठा है। नगर के चौराहों-तिराहों को देख रहा है। उसे राज-मार्ग पर चलते हुए एक सन्त दिखाई दिए। दृष्टि पड़ते ही चिन्तन चला कि मैंने इन्हें कहीं देखा है? कहाँ देखा, मृगापुत्र इसको लेकर विचार-मग्न है। स्मृति-पटल पर जोर दे रहा है। चिन्तन की धारा गहराई में चल रही है। सार्थक चिन्तन से अध्यवसायों की विशुद्धि होती है, लेश्याओं के शुभ परिणाम से उसे जातिस्मरण ज्ञान हो जाता है।

जानकारी और जीवन का राग ही तो विवेक को प्रकट नहीं करने देता। हिंसा, हिंसा है। 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका में जो कुछ हुआ, आपको याद

होगा। जरा-से झूठ के पीछे कैसे कर्म बँधते हैं? हिंसा कितनी भयावह होती है? हिंसा-झूठ-चोरी जैसे पाप अनन्तानुबन्धी मिथ्यात्व के उदय से विशेष होते हैं। बोलचाल की भाषा में इसको गहरी खाई कह सकते हैं। जानकारी का उपयोग जब तक दूसरों को बताने के लिए है तब तक जीव अज्ञान में रहता है। स्वयं के आचरण को सुधारने में काम आने वाला ज्ञान ही ज्ञान है। ज्ञान के साथ आस्था, आस्था के साथ आचरण। आचरण का निर्धारक तत्त्व है आस्था। “एगे नाणे-एगे दसंणे।” हम देखना शुरू करें। सच्चाई को देखना शुरू करने वाले को अपने शरीर से निकलने वाली पसीने की गन्ध कैसी लगती है? दृश्य और द्रष्टा। जब तक द्रष्टा दृश्य नहीं बन जाय ज्ञानात्मा प्रकट नहीं हो सकती।

पृथ्वी का सबसे बड़ा रत्न है-सम्यग्दर्शन। दर्शन के अभाव में ज्ञान, ज्ञान नहीं और दर्शन के अभाव में चारित्र, चारित्र नहीं। सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान शून्य है। सम्यग्दर्शन के बिना चारित्र भी शून्य है। सम्यग्दर्शन नहीं तो ज्ञान और चारित्र डबल जीरो हैं। आपने अभी संक्षेप में मृगालोढा और मृगापुत्र का विवरण सुना। एक ने सत्ता का दुरुपयोग किया, अपनी योग आत्मा को कषाय आत्मा के अधीन कर दिया, जानकारी एवं जीवन में खाई बना दी, इस भव में 16 रोग भीषण यातना है। दुःख की लम्बी परम्परा है।

दूसरे मृगापुत्र ने पूर्व में साधना-आराधना की, फलस्वरूप इस भव में विपुल सामग्री, इष्ट-प्रिय-कान्त रूप-सौन्दर्य मिला। साधुता की स्मृति, ज्ञान आत्मा का सदुपयोग, योग आत्मा पर उपयोग आत्मा की लगाम लगाई। यहाँ उत्कृष्ट पुण्य के साथ प्रवृत्ति से दुःखों का अन्त किया।

आज कुछ विषय गहरा हो गया। समझने की बात है-जानने, मानने और करने की। जो इस आत्म-तत्त्व को यत्किञ्चित् समझने का प्रयास करेगा, वह आगे बढ़ेगा।



रहना, सहना और कहना सीखें

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 26 जून, 2022 को फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

आप सभी संसारी हैं। 'संसार में कैसे रहना' यदि इसका तरीका आ जाय तो आप जहाँ कहीं भी रहें, रह सकते हैं। आप घर में खाना-पीना, उठना-बैठना, सोना-जागना जैसी सारी बातें घर-परिवार की मर्यादानुसार करेंगे तो घर में रहना आ जायेगा।

मनुष्य जब से गर्भ में जन्मा है, उसने माँ के पेट में दर्द सहा है। जन्म से लेकर मृत्यु तक आदमी सहता ही है। एक ज्ञान से सहन करता है तो एक मजबूरी में। कोई सर्दी-गर्मी सहता है तो कोई आतापना लेकर सहन करने की शक्ति बढ़ाता है। आप, हम, सब सहन करना सीख जायें तो हमारा जीवन सुन्दर ही नहीं, श्रेष्ठ भी बनेगा।

रहना और सहना के पश्चात् कहना कैसे इसे भी जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने की जरूरत है। यदि वाणी की मधुरता नहीं है तो सम्बन्धों में मिठास रहना मुश्किल है। अतः रहना, सहना और कहना इन तीनों विषयों पर विचार-चिन्तन करेंगे, क्योंकि आप-सब चाहते हैं कि हमारा जीवन सुन्दर तो बने ही, श्रेष्ठ भी हो।

रहने की कला सीखें

आप रोज सुनते हैं, जानते और मानते भी हैं कि हम जहाँ भी रहें, रहना आना चाहिये। हमारे भावी आचार्यश्री जी तो कहते हैं- "दूर रा डूंगर दूर से ही सुहाना लगे और डूंगर बळती कोई नहीं देखे, पगा बळती दीखें।" ये कहावते हैं बड़ी मूल्यवान्। हमें हर जगह रहना नहीं आता तो जीवन में आनन्द नहीं रहेगा। आप चाहे संसार में रहो या संन्यासी बनकर, रहना नहीं आया तो फिर 'बारे दीवाली है, मायने होली है।'

आप घर में हैं तो एक-दूसरे से बनती नहीं। बाप की बेटे से बनती नहीं, सास-बहू में खटपट रहती है, बहिन-भाई दिनभर लड़ते रहते हैं। पति-पत्नी में बोलचाल बन्द होती रहती है। घर के सदस्य शान्ति और प्रेम से नहीं रहते तो उस घर का क्या महत्त्व?

एक साधु-जीवन में है वहाँ भी क्रोध, मान, माया और लोभ है, स्वार्थ है, किसी को नीचा दिखाने का भाव है तो भी यही कहना होगा-साधु बनकर भी रहना नहीं आया तो संन्यासाश्रम में भी शान्ति नहीं मिलेगी।

आपको यदि रहना नहीं आया तो 'ऊँचे मकान फीके पकवान' वाली कहावत चरितार्थ हो जायेगी। जिसे घर में रहना नहीं आया वह गली-मौहल्ले, गाँव-नगर में कैसे रहेगा? वह किसी का हमदर्द होने के बजाय हरदर्द साबित होगा।

आप घर-परिवार में हों या गल्ली-मौहल्ले में अथवा ग्राम-नगर में कहीं पर रहते हों तो सबसे पहले रहना आना चाहिये। आपको रहना आ गया तो घर-परिवार में प्रेम-शान्ति से रहेंगे। गली-मौहल्ले में एक-दूसरा, एक-दूसरे के काम आयेगा। ग्राम-नगर हो या प्रदेश-देश भी क्यों न हो आपको रहना आ गया तो आपसे कोई घृणा-द्वेष नहीं करेगा।

भारतीय संस्कृति में तो एक कहावत बड़ी प्रसिद्ध है- 'घर आया, माँ जाया।' आपके घर पर जो भी आए वह घर वालों के व्यवहार से सन्तुष्ट होकर जायेगा। एक घर पर आने वाले का स्वागत-सत्कार करता है, एक है जो मन ही मन सोचता है कि 'ए जावे, पाछे मैं भोजन करूँ।' दोनों में दिन-रात का फर्क है।

आप, हम सब चाहे जहाँ रहें, वहाँ बड़ों के प्रति आदरभाव हो और हम उनका सम्मान करें। छोटों के प्रति स्नेह रखें उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। सबके साथ रहने की कला सीख जायें तो फिर हमें कहीं भी रखा जाय या रहना पड़े हम घर की मान-मर्यादानुसार अच्छा व्यवहार करेंगे।

घर हो या घर के बाहर जहाँ कहीं भी आप रहें यदि रहना आ गया तो आपका रहन-सहन, भाषा-बोली, सब जगह आप आदर और सम्मान प्राप्त करेंगे और रहना नहीं आया तो सब जगह आपको इज्जत और सम्मान तो दूर की बात, आप वहाँ से निकाल-बाहर किये जायेंगे।

आपको रहना आ गया तो आप दूध-मिश्री की तरह घुलमिल कर रहेंगे। प्रेम, शान्ति, भाईचारा आपके व्यक्तित्व को प्रभावी बनायेगा। तब आप जहाँ भी रहेंगे आदर-सम्मान के साथ रहेंगे।

सहना सीखें

सहना सीखें। इसका सीधा-सा मतलब है आप सहनशील बनें। रहना आ गया और फिर सहना भी आ गया तो वह सोने पर सुहागा है।

हम सब वर्तमान को देखते हैं। हमारी क्षमता नहीं कि हम परोक्ष भूतकाल को देख सकें, क्योंकि हमें विशिष्ट ज्ञान नहीं है। भविष्य को जानने-समझने की कला भी नहीं है। भविष्य एक कल्पना है। मतलब-हम न परोक्ष भूतकाल को और न ही भविष्यकाल को जानते हैं। हम सब वर्तमान को देखते हैं।

हमने जो भी कर्म बाँधे हैं उन्हें हमें ही भोगने हैं। यह अटूट नियम है-जो करेगा, वह भरेगा। खुद के बाँधे कर्म खुद को ही भुगतने होंगे। हम अगर सहना सीख गये तो हमें हमारे कर्म भोगते हुए जीना आ जाएगा।

एक को सर्दी-गर्मी सहन करनी पड़ती है, वहीं एक-दूसरा है जो आतापना लेता है। आपने देखा है... एक मजदूर चिलचिलाती धूप में काम करता है, एक साधक कर्मक्षय करने के लिए आतापना लेता है। मजदूर की मजबूरी है जबकि साधक यही सोचता है कि मुझे मेरे कर्मक्षय करने हैं।

आपके दो बच्चे हैं। दोनों का विवाह हो गया और दोनों प्रसन्नता से जीवन यापन कर रहे हैं। एक बार कुछ मेहमान आ गये। एक लड़के की बहू ने बड़े स्नेह-आदर से उन्हें बैठाया-भोजन करवाया। मेहमान दूसरे लड़के के घर भी गये। वहाँ बहू ने टिन-टिन चालू कर दी। वह बोली-इनको हमने तो निमन्त्रित नहीं किया, फिर ये यहाँ कैसे? आतिथ्य सत्कार नहीं किया, सो नहीं किया, जला-कटा सुनाया वह अलग।

पावणों आयो तो जीमने जासी। आप आदरपूर्वक भोजन करायें या टिन-टिन करके। एक ने बे-मन से जिमाया, एक ने आदर भाव के साथ। दोनों ने भोजन तो कराया, लेकिन उनके व्यवहार में बड़ा अन्तर रहा। आप जो भी काम करें उसमें सम्मान हो, आत्मीयता हो, आदर हो।

पूज्य गुरुदेव से किसी ने पूछा-“सहन कब तक करें?” आचार्यश्री हीरा का उत्तर था-“आप सहन करो जब तक कि आपको सिद्धि न मिल जाय।”

हकीकत तो यह है कि आज अधिकतर लोगों में सहन-शक्ति नहीं है। सहन-शक्ति नहीं होने से पिता-पुत्र में, सास-बहू में, देवरानी-जेठानी में, बहन-भाई में तकरार होती है, कहा-सुनी और बोल-चाल होती रहती है। एक का कथन होता है कि मैं कब तक सहन करूँ? मुझे सहते-सहते इतने वर्ष हो गये। अब तो मेरे से सहन नहीं होता।

सहन करना सबके लिए जरूरी है। सहन नहीं करोगे तो कर्म कटने की जगह नए कर्म बँधते रहेंगे। आदमी को हर स्थिति-परिस्थिति में सहना आना चाहिये। मन-मौसम दोनों चाहे जैसे हों, मनुष्य तो सहन करेगा उतना ही आगे बढ़ेगा।

आप गृहस्थ हैं आपको घर-परिवार में, व्यापार-व्यवसाय में सहन करना पड़ता है, हम साधुओं को सुख हो या दुःख, हर समय सहनशीलता का परिचय देना होता है। हमारे तो 22 परीषह हैं, लेकिन आपके लिए जन्म से मरण तक न जाने कितने-कितने दुःख हैं?

एक बात और भी है। माँ-बाप सबके हैं। कई

माँ-बाप तो ऐसे भी हैं जिन्होंने अपने बच्चों को सहन करना नहीं सिखाया। वे बच्चे आगे जाकर जीवन में ठोकरें खाने वाले हुए हैं। जिसे सहना नहीं आता वह प्रायः दूसरों की गलती बताता है। भगवान का तो कथन है कि कैसी भी स्थिति क्यों न हो, आप सहन करो।

एक समय था जब शिक्षक बच्चों को पीटते थे। वे उनकी मार के डर से पढ़ते थे। आज स्थिति में बदलाव आ गया है। आज तो मारना-पीटना तो दूर किसी बच्चे को डाँटना तक नहीं रहा।

आज बच्चे हों या बड़े, सहन-शक्ति नहीं रही। पहले जो प्रेम-स्नेह था आज उसका भी अभाव-सा है। कई-कई बार कहने पर बच्चे काम करें, न भी करें ऐसा प्रायः होने लगा है।

आपमें सहन-शक्ति का गुण आना चाहिये। अभ्यास करते-करते आप सहन करने की शक्ति बढ़ा सकते हैं और जीवन को सफल कर सकते हैं।

कहना सीखें

बोलना एक कला है। एक बच्चा जब से बोलना सीखता है, अपनी बात कहता ही है। आप-सभी अपने जीवन को सुन्दर और श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो रहना और सहना ही नहीं कहना भी आना चाहिये।

आप कहें, जरूर कहें, पर जो भी बोलें अच्छा बोलें, ओछा नहीं। आप किसी सभा में बोलें, आपको अगर बोलना नहीं आया तो श्रोता सभा से उठकर चले जायेंगे।

आपको कहाँ बोलना है और कहाँ चुप रहना है, इसका ज्ञान जरूरी है। एक बुढ़िया थी। वह झगड़ालू स्वभाव की थी। घर वाले ही नहीं, गली-मौहल्ले वाले और गाँव वाले भी बुढ़िया के स्वभाव से दुःखी थे। वह स्वयं तो लड़ती-झगड़ती और दूसरों को लड़ाने में अपनी शान समझती। पूरे गाँव भर में बुढ़िया की चर्चा होने लगी कि वह झगड़ालू है। सरपंच तक बात पहुँचने पर इस समस्या के समाधान की सरपंचजी ने व्यवस्था की कि बुढ़िया का लड़ने का स्वभाव है तो हर एक दिन

एक-एक घर में जाकर बुढ़िया लड़ ले। इससे पूरे गाँव में तो शान्ति रहेगी ही, बुढ़िया का लड़ाई-झगड़े का काम भी होता रहेगा।

एक दिन की बात है कि एक घर में नई-नई बहू आई थी। बारी के हिसाब से आज उस घर की बारी होने से सास ने कहा-“बहूजी! आप आज-आज के लिए इस घर से दूर ही रहें।” बहूजी ज्ञानवान् थी, इसलिये पूछा-“क्यों, क्या बात है?” सासूजी ने सारी राम-कहानी सुना दी। बहूजी ने कहा-“मैं आज माँजी को सम्भाल लूँगी, आप मेरी तरफ से निश्चिन्त रहें।”

बुढ़िया बारी के अनुसार घर पर आई। नई-नई बहू को देखकर बुढ़िया का मन-मयूर नाच उठा कि आज तो लड़ने में मजा आयेगा।

बहू चतुर थी, इसलिये आगे होकर बोली-माँ साहब पधारो। बहू ने बुढ़िया को आदर-सत्कार देकर बैठाया। बुढ़िया के सामने बहूजी एक थाली में मुरमुरे-फूलियाँ लेकर बैठ गई।

बोलना चातुर्य है। मौन रहना भी अच्छा है। बुढ़िया ने रोज की भाँति लड़ना-झगड़ना शुरू किया। बहू को जवाब देना था, बहू ने मुरमुरे की फाकी मारी और चबाने लगी। बहूजी की ओर से जब कोई जवाब नहीं आया तो बुढ़िया ने एक-के-बाद-एक अनेक प्रश्न किये। बहूजी या तो चुप रहती या मुरमुरे-फूलियाँ चबाती और जवाब नहीं देती।

लड़ाई-झगड़ा तब होता है जब सवाल-जवाब हो। बहूजी तो चुप रहती या चने-मुरमुरे चबाती। बुढ़िया हैरान हो गई। परेशानी में उसे और तो कुछ समझ में नहीं आया, वह सीधे सरपंच साहब के पास गई और कहा-“आज उस घर की बारी थी। उस घर में एक नई-नई बहू ने लड़ाई-झगड़ा तो नहीं किया सो नहीं किया, पर वह तो कुछ बोली तक नहीं।”

यह कला है कहने की और चुप रहने की। आपको यह कला आती है तो लड़ाई-झगड़ा तो दूर, कहासुनी तक नहीं हो सकती। आज घर-घर में पति-

पत्नी, सास-बहू, बाप-बेटे में बोलचाल ही नहीं, लड़ाई-झगड़ा तक हो जाता है। उनको पीछे न तो बोलना आता है और न चुप रहना।

मौन रहना भी एक कला है। आप कहते हैं—सबसे बड़ी चुप। आप बोलें पर अच्छा बोलें, जरूरत पड़ने पर बोलें, हितकारी-मधुर बोलें। ओछा बोलना, ज्यादा बोलना हमारी न तो सभ्यता है और न ही संस्कृति। श्रावक के बोलने में हितकारी शब्दों का प्रयोग होता है। आप कम बोलें और जब भी बोलें तो अच्छा बोलें। आप देखते हैं कि जिस पेड़ पर फल होते हैं वह झुका रहता है।

एक राजा था। वह किसी संन्यासी के आश्रम में गया और संन्यासी से कहा—“मेरे पुत्र नहीं है आपकी कृपा हो जाय तो मेरी समस्या दूर हो जाय।”

संन्यासी के मुँह से निकल गया—“तथास्तु!” राजा प्रसन्न हो गया। राजा संन्यासी को वन्दन-नमन करके विदा हुआ। राजा के जाते ही संन्यासी ने सोचा—राजा के पुत्र होने का योग तो नहीं लगता है, पर मैंने तथास्तु कह दिया, यह मैंने गलत किया, मुझे तथास्तु नहीं बोलना था। कुछ समय उपरान्त संन्यासी मरकर राजा के यहाँ पुत्र रूप में पैदा हुआ। बच्चा बड़ा होता रहा, लेकिन वह बोलता नहीं था। आठ-दस, चौदह-पन्द्रह साल तक होने पर भी वह बोला नहीं।

राजा ने बच्चे को घुमाने के लिए भेजा। सिपाही साथ थे। घूमते-घूमते एक पेड़ पर पक्षी नज़र आये। पक्षियों को लड़ते देखकर सुरक्षाकर्मी ने गोली चला दी।

एक पक्षी राजकुमार के पैर के पास आकर गिरा तो राजकुमार के मुँह से निकला—“तू बोला ही क्यों।”

एक सिपाही ने राजकुमार की बात सुन ली थी, इसलिये वह दौड़ा-दौड़ा राजा के पास पहुँचा और कहा कि राजकुमार तो बोलते हैं।

राजा प्रसन्न तो हुआ ही, राजा ने राज-सभा में कहा—“राजकुमार की बात और किसी ने सुनी या नहीं, पर एक सिपाही ने तो सुनी है।” लेकिन बहुत समय बाद भी राजकुमार नहीं बोला तो राजा सिपाही का कहा झूठ मानने लगा। राजा सिपाही पर क्रोधित हुआ। राजा ने सिपाही को फाँसी की सजा सुना दी। सैनिक डरा और वह राजकुमार की ओर देखने लगा। सैनिक राजकुमार से ही नहीं, राजा से भी प्राणों की भीख माँगने लगा तो राजकुमार के मुँह से निकल गया—“तू बोला ही क्यों?”

राजा ने स्वयं सुना और प्रसन्न हो गया। राजा को भावों की उत्कृष्टता से जातिस्मरण ज्ञान हो गया। फिर राजा ने राजकुमार से कहा—“मैं अब संन्यासी बन रहा हूँ, तुम राजपाट सम्भालो।” यह तो एक दृष्टान्त है। आप इतना तो समझ गये होंगे कि बोलना एक कला है। अच्छी और श्रेष्ठ भाषा बोलकर और मौनव्रत का अभ्यास करके आप मुक्ति-मार्ग में अग्रसर हो सकते हैं।

आपने तीनों कलाओं का रहस्य सुना है। आप सुनें, जरूर सुनें। सुनकर हर बात को गम्भीरता से सोचें-समझें। आपको रहना-सहना और बोलना आ गया तो निश्चित मानिये कि आप श्रेष्ठ और सुन्दर जीवन जीकर अपना कल्याण कर सकते हैं।

धर्म का आचरण हानिकारक?

आचार्य विजय रत्नसुन्दरसूरिजी

दवाई लेने से पहले छोटा बच्चा रोता हो, दवाई लेते समय भी रोता हो और दवाई लेने के बाद भी उसका रोना जारी हो, इससे दवाई उसके लाभकारी नहीं ही बनेगी, ऐसा कोई नियम नहीं है, परन्तु धर्म करने से पहले मन यदि उद्विग्न ही बना रहता हो, धर्म करते समय भी मन में यदि व्याकुलता हो और धर्म कर लेने के बाद भी मन यदि दुःखी होता हो तो उस धर्म का आचरण आत्मा के लिए लाभकारी तो नहीं बनता, बल्कि कभी-कभी नुकसानकारी भी बना रहता है।

- 'एक यात्रा भीतर की ओर' से गृहीत

अच्छे लेखक कैसे बनें?

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य एवं सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. की निशा में विराजित श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 17 जुलाई, 2022 को प्रताप नगर स्थानक-जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री राजकुमारजी लोदिया, जयपुर ने किया है।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा आज जिनवाणी लेखक-सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। आज लेखकों की विशेषता पर, उनके लेख कैसे हों? लेख में सामग्री की क्रमबद्धता किस प्रकार की हो, अच्छे लेखक कैसे बनें? इत्यादि विषयों पर आपके समक्ष चर्चा एवं विमर्श करने का भाव है।

लेखन का विषय केवल विद्वत् लोगों के लिए ही है, ऐसा नहीं है। एक व्यक्ति जब अपने जीवन में कुछ बनने का, कुछ करने का हौसला बनाता है, कृतसंकल्प होता है, उस समय वह व्यक्ति 'साधारण प्राणी' की श्रेणि में आता है। जैसे-जैसे उसके भीतर की लगन, अभ्यास की निरन्तरता, लेखन की नियमितता बनती है वह व्यक्ति सामान्य की श्रेणि से निकलकर विद्वत् समाज में अग्रिम पंक्ति में आ खड़ा होता है और विद्वत्जन उसे विद्वान, श्रेष्ठ लेखक के सम्मान से सम्बोधित करते हैं, सम्मानित करते हैं।

अच्छे लेखक कैसे बनें?

एक अच्छा लेखक बनने के लिए सबसे पहले तीन बातें ध्यान में रखना है-

(1) **विषय तय करना**-लेखक बनने के लिए सबसे पहले यह तय करें कि आप क्या लिखना चाहते हैं? कौनसे विषय पर लिखना चाहते हैं? कविता, कहानी, उपन्यास, लेख इत्यादि इनमें से किस विषय पर लिखना चाहते हैं यह निर्धारित करना होगा। विषय तय हो जाने पर ही एक अच्छे लेखक का आगे का मार्ग प्रशस्त होता है। हम जीवन-व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में

देखते हैं कि किसी भी कार्य के प्रारम्भ में सबसे पहले लक्ष्य निर्धारित किया जाता है उसी के अनुसार पूर्णता पर परिणाम प्राप्त होता है।

विषय निर्धारित होने के पश्चात् विषय के अनुरूप यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरी हुई सामग्री को एक स्थान पर संकलित करना है, संचय करना है जो उसे अच्छा लेखक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगी। संकलित की हुई सामग्री को भी उपयोग में लाने के लिए तीन सूत्र हैं- (1) सबसे पहले वह लिखो-जो आवश्यक हो, (2) फिर वह लिखो-जो उपयोगी हो और (3) अन्त में वह लिखो-जो आत्म-प्रतिष्ठित कर दे।

लिखने की कला बेहतरीन कलाओं में से एक है। जिस व्यक्ति के अन्दर यह कला होती है, वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी तरह के विचारों को कलमबद्ध कर सकता है। बन्धुओं! वैसे बातें करना बहुत आसान होता है, किन्तु उन बातों को एक कागज पर उतारना और उन बातों के माध्यम से समाज को जागरूक करना, समाज को सन्देश देना एक बहुत ही योग्यता भरा काम है। यदि किसी व्यक्ति को इस योग्यता का उपयोग करना आ जाए तो वह व्यक्ति बहुत बड़ा बदलाव अपने जीवन में कर सकता है।

किताबें हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग हैं और लेखक जो है वह उसका एक मूल्य रूप है। यदि चीजों को कलमबद्ध कर दिया जाए तो आप देखेंगे कि सालों बाद भी उन बातों को कोई दूसरा व्यक्ति पढ़ सकता है, पर कलमबद्ध किस क्रम से करना जिससे एक लेख, एक विषय परिपूर्ण माना जाये। इसलिए कहा-सबसे पहले

वह लिखो जो आवश्यक हो, उसके बाद वह लिखो जो उपयोगी हो और अन्त में वह लिखो जो आत्म-प्रतिष्ठित कर दे।

एक लेख में, एक विषय में ये तीनों ही चीजें इसी क्रम से स्थान ग्रहण करनी चाहिए। इससे लेख श्रेष्ठता पाता है। उदाहरण के रूप में समझें—जैसे—एक विषय है—जय जिनेन्द्र। अच्छे लेखक का यह दायित्व होता है इस विषय पर लिखने पर सबसे पहले जय जिनेन्द्र का अर्थ, भावार्थ करें। 'यह आवश्यक है।' उसके पश्चात् जय जिनेन्द्र की महत्ता, माहात्म्य और उपयोगिता को उजागर करे—'यह उपयोगी है', अन्त में जय जिनेन्द्र से हमें क्या-क्या प्रेरणा मिलती है? हम कैसे स्वयं जिनेन्द्र बन सकते हैं? यह विमर्श 'आत्म-प्रतिष्ठित' करता है। इस तरह एक लेखक अपने विषय को, अपने लेख को, अपने वक्तव्य को परिपूर्ण रूप दे सकता है। हम कई बार देखते हैं—विषय का प्रस्तुतीकरण अतिसुन्दर होता है, भावों की गहनता और भाषा की प्राञ्जलता होती है, मगर नींव रूप में उस विषय का अर्थ, भावार्थ, शब्दार्थ सब गायब होता है। जिससे श्रोता या अध्येता अथवा पाठक विषय के मूल को समझने से अनभिज्ञ रह जाता है। गुरु हीरा फरमाते हैं—अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। गुरुदेव फरमाते हैं—एक लेख में—1. अर्थ, 2. भावार्थ और 3. परमार्थ होना चाहिए।

जैसे—नमो अरिहंताणं में अरिहन्त भगवान को नमस्कार हो, यह अर्थ है, भावार्थ—चार घाती कर्म का जिन्होंने क्षय किया, जो 34 अतिशयधारी, 35 वाणी के गुणधारक, अष्ट प्रातिहार्य से सम्पन्न होते हैं, वे अरिहन्त होते हैं। यह नमो अरिहंताणं का माहात्म्य हुआ, भावार्थ हुआ। तीसरा परमार्थ—मैं कब अरिहन्त जैसा बनूँगा, मुझे भी अरिहन्त बनना है, उस पद के साथ स्व को जोड़कर देखना यह परमार्थ है और इसी से हमारे भावप्राण पुष्ट होते हैं, प्राणवान् होते हैं, जागृत होते हैं। अर्थ, भावार्थ, परमार्थ को हमने अपनी भाषा में तीन सूत्रों के माध्यम से आपके सामने रखा—आवश्यक हो,

उपयोगी हो और आत्म-प्रतिष्ठित करने वाला हो। अच्छे लेखक बनने की पहली बात हुई—विषय तय करना। विषय की सामग्री तय करना एवं व्यवस्थित करना।

(2) लेखन का अभ्यास करना—दूसरा तरीका लेखन का अभ्यास करना है। अभ्यास के बिना आप किसी भी चीज में अच्छे नहीं होंगे। एक एथलीट (जिम्नास्टिक) जो मैच जीतता है वह हर दिन अभ्यास जारी रखता है वैसे ही अगर आप लेखन का अभ्यास करते रहते हैं तो आप जल्दी से कुशल हो जायेंगे, लेखन के साथ जितना अधिक आप लिखते हैं, उतने ही धाराप्रवाह आप अपने विचारों को कागज पर लिखने में सफल होंगे। अभ्यास करने से हम बिन्दु से सिन्धु तक, तलहटी से शिखर तक पहुँचते हैं।

(3) लेखन नियमित होना चाहिए—गुरुदेव फरमाते हैं—नियमितता और निरन्तरता व्यक्ति को महान् बनाती है। प्रतिदिन एक ही कार्य नियमित रूप से किया जाता है तो शनैः शनैः व्यक्ति श्रेष्ठ बनता चला जाता है। अपनी गतिविधियों के बीच, दिन में एक समय ऐसा निर्धारित हो जिसमें आप अपने भीतर में उभरने वाले विचारों को कागज में उकेरेंगे। कुछ नहीं से थोड़ा लिखना बेहतर है, यह आपको एक लेखक होने के लिए तत्पर बना देगा। इसके साथ-साथ आप जितना अधिक लिखेंगे आप में उतनी अधिक जानकारी बढ़ेगी और आत्मविश्वास आयेगा। इसलिए प्रतिदिन थोड़ा समय निकालकर लिखने की आदत डालें।

इस प्रकार अच्छा लेखक बनने के लिए तीन सफल सूत्र हमने जाने—(1) विषय तय करना, (2) अभ्यास करना और (3) नियमित लिखना। ये तीनों बिन्दु लेखक को सिन्धु तक पहुँचाने वाले हैं, शिखर तक पहुँचाने वाले हैं। अब हम समझेंगे—

लेखक में किन-किन गुणों की आवश्यकता है?

लेखन कार्य में वही व्यक्ति सफल हो सकता है जिसमें प्रतिभा की तेजस्विता, स्मृति की प्रबलता और

अनुभवों का अम्बार होता है।

(1) प्रतिभा की तेजस्विता—लेखक में प्रतिभा की तेजस्विता होती है तो वह अपनी प्रतिभा के प्रभाव से, प्रतिभा के प्रयोग से जन-जन को प्रभावित कर सकता है, प्रकाशित कर सकता है। प्रतिभा होने पर ही लेखक किस प्रसंग पर क्या लिखना उचित है? लेखन में क्या-क्या समाहित किया जा सकता है? एक ही विषय को अनेक प्रकार से कैसे पुष्ट किया जा सकता है, इन सबको सुन्दर रीति से प्रतिभा की तेजस्विता के साथ प्रस्तुत कर सकता है।

(2) स्मृति की प्रबलता—जिसे हर बात याद रहती है, किस-किस का वर्णन कहाँ-कहाँ हुआ है, प्रमाण सहित जो बात लिखने में समर्थ हो, औत्पातिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी बुद्धि से सम्पन्न हो, वह श्रेष्ठ लेखक बन सकता है।

(3) अनुभवों का अम्बार—जिसके जीवन में स्वयं के अनुभव हों, स्वयं के जीवन में घटित घटनाओं से सीखी हुई शिक्षा हो, उस व्यक्ति के लिखे लेख में सच्चाई और गहराई रहती है जिसे पढ़ने पर पढ़ने वाले के मन को भी भावनात्मक स्पर्श मिलता है।

लेखन में चिन्तन की चरमता, विचारों की विमलता, भावों की भव्यता, प्रेरणा की पवित्रता हो तो वह पाठक के हृदय को स्पर्श करती हुई विद्युत् की तरह आन्दोलित कर देती है।

चिन्तन रहित लेखन निरर्थक है और लेखन रहित चिन्तन कदाचित् अस्थायी होता है। अध्ययन मनुष्य को पूर्ण बनाता है, भाषण उसमें परिपक्वता लाता है और लेखन उसे प्रामाणिक बनाता है। हम अपने जीवन में अध्ययन करते हैं, शिक्षा ग्रहण करते हैं तो हमारा जीवन पूर्ण बनता है। जीवन को जीवन्त बनाने, जीवन को एक राह देने के लिए अध्ययन जरूरी है। जैसे—माता-पिता अपने बच्चे को अध्ययन के लिए स्कूल भेजते हैं ताकि उसके जीवन में पूर्णता आये। अध्ययन गहरा और विशाल होना चाहिए, इसी से जीवन पूर्ण

बनता है, परिपूर्ण होता है। भाषण परिपक्वता लाता है, आपको आता सब है, आपके दिमाग में सब कुछ याद है, परन्तु जैसे ही आप मञ्च पर जायेंगे तो पसीना छूटने लगता है, घबराहट होने लगती है, क्या बोलूँ? कैसे बोलूँ? यह चिन्ता सताने लगती है। इसका अर्थ यह हुआ कि आपमें अध्ययन करने से ज्ञान की पूर्णता तो हो गई, पर अभी परिपक्वता नहीं आई। परिपक्वता कब आयेगी? जब आप किसी के सामने बोलेंगे, किसी के सामने अपने विचार प्रकट करेंगे। अपने आप में विश्वास जगना ही परिपक्वता की निशानी है, इसलिए अध्ययन पूर्ण बनाता है तो भाषण वाक्पटुता परिपक्व बनाती है।

एक कुम्भकार घड़े का निर्माण करता है, पहले उसको चक्र एवं हाथों से आकार प्रदान करता है। क्या घड़ा आकार प्राप्त करने मात्र से पानी धारण करने योग्य बन जाता है? कदापि नहीं। घड़े ने आकार रूप पूर्णता तो प्राप्त कर ली, मगर अभी तक अग्नि की तपन नहीं सहने के कारण घड़े में परिपक्वता नहीं आई। इसलिए पूर्णता के साथ-साथ परिपक्वता का आना नितान्त आवश्यक है। अध्ययन पूर्णता लाता है तो भाषण परिपक्वता लाता है। लेखन मनुष्य को प्रामाणिक बनाता है, मनुष्य बोलने में कुछ का कुछ भी बोल देता है, परन्तु अपने लेखन में सिद्धान्तों के विपरीत, सत्यता के प्रतिकूल नहीं लिख सकता। इससे सत्यता बढ़ती है, सच्चाई की विजय होती है और मनुष्य प्रामाणिक बनता चला जाता है। इसलिए यदि आप जीवन को प्रामाणिक बनाना चाहते हैं तो वही लिखो जो सही हो। कहा भी है—सोचो वही जो बोल सको, बोलो वही जो लिख सको, लिखो वही जिसके नीचे हस्ताक्षर कर सको।

अच्छे लेखक बनने के लिए और भी कुछ बिन्दुओं पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा जिसमें—लेखन का विषय वही होना चाहिए जिस पर आपका नियन्त्रण हो। आज के समय में Copy-Paste का उपयोग बहुत बढ़ गया है। जिसे देखो वह किसी और के लेख को Copy-Paste करके नीचे अपना नाम लिख

देता है। वह चाहे भजन हो, चाहे आलेख हो, चाहे मुक्तक या छन्द हो। Copy-Paste करके श्रेष्ठ चीज ग्रहण कर सकते हैं, परन्तु उस ग्रहण में भी यदि आपने अपने नाम का प्रयोग किया, दूसरे का नाम हटाया तो यह पाप है, छल है, माया है, दम्भ है, दिखावे का भाव है। देखिए हर क्षेत्र में पाप हो सकता है तो धर्म भी हर क्षेत्र में हो सकता है।

किसी और की विषयसामग्री या विषय पूरा का पूरा लेकर अपना नाम उसमें लगाना ज्ञानावरणीय कर्म के बन्ध का कारण है। ज्ञानी के नाम को छुपाने और अपने नाम को दिखाने की भावना आना ही अधर्म है। इसलिए विषय वही हो जिस पर आपका आत्म-नियन्त्रण हो। अपने विषय पर खोज कीजिये, पुराने के साथ नया कुछ न कुछ जोड़िये। इससे आपके विषय में, आपके आलेख में, आपके प्रस्तुतीकरण में नवीनता आयेगी, नवीनता सभी को प्रिय होती है। उच्चारण करने में जो शब्द मुश्किल बनते हैं, उन्हें हटा दीजिये-जितना सरल होगा उतना प्रभावशाली होगा, हर एक व्यक्ति की समझ में आ जाये, ऐसा आलेख होना चाहिए।

मुश्किल शब्दों में लिखना बहुत ही आसान है। आसान शब्दों में लिखना बहुत ही मुश्किल है। हम गुरुदेव को देखते हैं-गुरु हीरा प्रवचन कितने सरल, सहज शब्दों में फरमाते हैं जिसका प्रभाव हर मन पर अमिट रूप में अंकित हो जाता है। ठीक इसी तरह लेखक भी अपने आलेख में सरल शब्दों का प्रयोग कर लेख को सरल बनाए।

हमने लेख और लेखक दोनों के बारे में समझा। अब हम बात करेंगे-पढ़ने वाले पाठकों की।

लिखने वाला अपना काम करता है तो पढ़ने वालों का भी कुछ दायित्व होता है। लिखने वाले सिर्फ लिखते ही रहें, पर पढ़ने वाले नहीं हों और पढ़ने वाले हों, पर लिखने वाले नहीं तो कार्य पूरा नहीं होता। संसार में दोनों की आवश्यकता होती है-लिखने वाले भी चाहिए तो पढ़ने वाले भी चाहिए। दोनों एक-दूसरे के

पूरक हैं। एक-दूसरे के सहयोगी हैं।

लिखने वाले तो ज्ञानी हैं, विद्वान् हैं, वैसे ही पढ़ने वाले में भी पढ़ने की रुचि गहरी हो, गहरी रुचि होने पर लेख की गहराई में लेखक के छुपे भाव जाने जा सकते हैं अन्यथा लेखक के अभिप्राय क्या है, लेखक क्या कहना, क्या बताना चाहता है, पाठक नहीं जान सकता, इसलिए लेखक का ज्ञान शिखर के समान तो पाठक की गहराई सागर के समान होनी चाहिए।

गुरुदेव फरमाते हैं-अच्छा पाठक ही अच्छा लेखक बनता है। आप यदि अच्छे लेखक बनना चाहते हैं तो सर्वप्रथम अच्छे पाठक बनिये। गहराई से चिन्तन करें तो सार रूप में लेखक के लेख में तीन बातों का होना आवश्यक है-(क) गाथा, (ख) कथा और (ग) लोगों की व्यथा।

(क) गाथा-लेख में आगम की गाथा हो, आगम-वचन हो, प्रामाणिक ग्रन्थों का उल्लेख हो, इससे लेख प्रामाणिक बन जाते हैं।

(ख) कथा-किसी भी लेख में दृष्टान्त, रूपक और घटनाओं का उल्लेख होने से वह उल्लेखनीय बन जाता है, सरस बन जाता है।

(ग) लोगों की व्यथा-वर्तमान में लोगों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उन समस्याओं के समाधान का जिक्र लेख में, आलेख में आना चाहिए। इससे आपका आलेख प्रासङ्गिक बन जाता है। आज की युवा पीढ़ी की मानसिकता को ध्यान में रखकर उनकी सोच को समझकर यदि आलेख लिखे जायें तो युवाओं के मन-भावन लेख बन जाते हैं।

अन्त में सभी लेखकों को एक बात कहना चाहूँगा कि अपने जीवन में कभी भी हार नहीं मानना चाहिए। प्रायः ऐसा देखा गया है लेखक ने अपना लेख छापने के लिए जिनवाणी सम्पादक महोदय डॉ. धर्मचन्दजी के पास भेजा, परन्तु उसका लेख अगले कई महीनों तक नहीं छपा, तब वह लेखक निराश हो ऊँचा श्वास छोड़ते

हुए कहता है-क्या लिखें? डॉ. साहब तो हमारा लेख छापते ही नहीं, यही निराशा, यही हताशा हमें अच्छे लेखक बनने से कोसों दूर कर देती है। हमें लेख छापने के लिए नहीं लिखने हैं, अपितु ज्ञान का अभिवर्धन करने के लिए, चित्त को परिमार्जित करने के लिए तथा आत्मस्थ बनने के लिए लेख लिखना चाहिए। हाँ, यदि आपका आलेख सुन्दर हो, भावों से भरा है, प्रेरणाओं से आपूरित है और भटके हुए राही को मञ्जिल दिखाने वाला है तो सम्पादक साहब समय और प्रसङ्ग के अनुरूप जिनवाणी पत्रिका में अवश्य प्रकाशित करते ही हैं। इसलिए अच्छे

लेखक अपने मन को निराश किये बिना, हार को स्वीकार किए बिना सतत लक्ष्य के साथ विषयबद्ध लेखनी को चलाते रहें। कितना लिखते हैं उसका महत्त्व नहीं है, कैसे और क्या लिखते हैं उसका महत्त्व है।

हमने आज अच्छे लेखक कैसे बनें ? इस विषय पर सविस्तार अनेक पहलुओं पर चर्चा की है जो हमारी लेखन कला को सुन्दरतम बनाने वाली है।

आप सभी अच्छे लेखक, अच्छे चिन्तक, अच्छे विचारक बनकर ज्ञान की ज्योति को निरन्तर प्रज्वलित करें, इन्हीं शुभ भावों के साथ.....

रत्नसंघीय भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. गुणगान

श्री गौतमचन्द्र ओस्तवाल

महेन्द्र गुरुवर प्यारे, तुमको लाखों प्रणाम।

तुमको करोड़ों प्रमाण॥ टेरा॥

पारसमल के कमल दिवाकर,

माता सोहिनी के गुण रत्नाकर।

लोढ़ा कुल उजियारे॥1॥ तुमको.....

जोधाना में जन्म लिया है,

गुरु हस्ती का शरण लिया है।

भक्त हृदय उजियारे॥2॥ तुमको.....

श्रावण सुदी नवमी को जन्मे,

महामन्दिर के रत्न हैं चमके।

रत्नसंघ अनगार॥3॥ तुमको.....

गुरु हीरा के हैं प्रियगुरु भ्राता,

हर मन को यह नाम सुहाता।

हीरा पट्टधर प्यारे॥4॥ तुमको.....

वैशाख सुदी चौदस है आई,

सूर्यनगरी में आनन्द छाई।

है दीक्षा दिवस गुणकार॥5॥ तुमको.....

गुरु हस्ती के शिष्य कहाये,

गुरु हीरा के मन भाये।

नवम पट्टधर प्यारे॥6॥ तुमको.....

तुम सम न दूजा गुरुवर भाया,

रत्न संघ में हर्ष सवाया।

भक्तों के नयन सितारे॥7॥ तुमको.....

देव तुम्हारी सेवा करते,

तुम भक्तों के मन को भरते।

है श्रद्धा अपरम्पार॥8॥ तुमको.....

आगम ज्ञानी पूज्य गुरुवर,

हैं मितभाषी पूज्य गणिवर।

गुरुवर सरस व्याख्यानी॥9॥ तुमको.....

महान् अध्यवसायी कहलाते,

भक्तों के भगवान कहाते।

हस्ती-हीरा के दिलभर॥10॥ तुमको.....

तुम हो ज्ञान गुणाकर प्यारे,

अष्ट प्रवचन माता के रखवारे।

गौतम के भगवान॥11॥ तुमको.....

हे... गुण रत्नों की खान... तुमको लाखों प्रणाम॥

-(भोपालगढ़ वाले), बेंगलूरू (कर्नाटक)

प्रसन्नता वहाँ, जहाँ अहंकार नहीं

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. द्वारा, श्री अनिलजी बम्ब के निवास स्थान तिलक नगर-जयपुर में 26 फरवरी, 2022 को फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री अशोक कुमार जी जैन (हरसाना), मानसरोवर-जयपुर द्वारा किया गया है।

-सम्यादक

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

एक भक्त ज्ञानी के पास जाता है। वह ज्ञानी सत्य-असत्य तथा आसक्त-अनासक्त के भेद से भली-भाँति परिचित है। जन्म, जरा, मरण एवं भय से आक्रान्त संसार की व्यथा का जिन्हें ज्ञान है, ऐसे ज्ञानी गुरु भगवन्त के समीप भक्त पहुँचता है। भक्त ने गुरु से निवेदन किया- 'I Want Happiness.' सामान्य रूप से हर व्यक्ति चाहे समझदार हो या गँवार, छोटा बच्चा हो या बड़ा व्यक्ति, हर कोई 'Happiness' अर्थात् प्रसन्नता की चाह रखता है।

गुरु भी पास आये भक्त की पात्रता-योग्यता से परिचित थे। वैसे भी गुरु अन्तःकरण को पढ़ने में निपुण होते हैं। गुरु शिष्य की पात्रता की परख करने में सामर्थ्यवान होते हैं। गुरु उत्तर देते हुए कहते हैं कि 'I' को 'Delete' करो, इसके पीछे 'Happiness' का रहस्य छिपा हुआ है। प्रसन्नता 'Happiness' प्राप्त करने के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं है। अपने अन्दर में जो 'मैं' रूपी अहंकार अर्थात् 'I' का भाव प्रतिष्ठित है, उसे हटाकर नष्ट कर दो, मिटा दो, समाप्त कर दो। अहंकारी व्यक्ति के मन में एक ही बात घर किये रहती है कि मैं अकेला ही सब कुछ कर सकता हूँ। ऐसा व्यक्ति हमेशा अकेला ही रहना पसन्द करता है। आप अपने हाथों की पाँचों अंगुलियों पर नज़र डालिये पाँचों अंगुलियों में सामान्य रूप से देखने पर भिन्नता नज़र आयेगी, लेकिन फिर भी समझा जाये तो एक अपेक्षा से अंगुलियों में समानता है। सोने की अँगूठी एक अथवा दो अंगुलियों में धारण की जाती है। हाँ, कोई ज्यादा समृद्ध

है तो चारों अंगुलियों में भी स्वर्ण मुद्रिकाएँ धारण कर सकता है, मगर अँगूठे में नहीं। अँगूठा हमेशा अलग रहता है, वहीं अंगुलियाँ परस्पर में मिलती हैं, संगठन में रहती हैं। अंगुलियों को मोड़कर मुट्टी में बन्द करके मिलाया जाये तो वे एक जैसी बन जाती हैं, मजबूत बन जाती हैं। परन्तु अँगूठा हमेशा अलग रहना पसन्द करता है। इसी तरह जिस व्यक्ति के मन में अहंकार, मान, गुमान प्रविष्ट हो जाता है तो वह समाज, देश, सम्प्रदाय से अपने को अलग कर लेता है। अहंकार के दो कटु फल हैं-यह बाहर से आपको अप्रिय और भीतर से अपात्र बनायेगा, परन्तु अज्ञानी व्यक्ति यह जान ही नहीं पाता है।

एक प्रश्न पूछें आपसे, इंसान का अपना क्या है? जन्म दूसरों ने दिया, नाम दूसरों ने रखा, शिक्षा दूसरों द्वारा दी गई, रोजगार दूसरों ने दिया, इज्जत दूसरों ने दी। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जो कुछ भी हमें मिला है, उसमें अपना क्या? कुछ भी तो अपना नहीं है। सब इधर-उधर से उधारी का प्राप्त किया हुआ है। यह जीव खाली हाथ आया था और खाली हाथ ही जाता है।

एक शायर ने अपनी शायरी में कहा- "जिसे मैं की हवा लग गयी, उसे न दवा लगी और न दुआ लगी।"

इतिहास पर दृष्टि डालें तो सिंह गुफा में चातुर्मास करने वाला अनगार भूखे शेर के सामने चार माह तक चौविहार तप की साधना में दृढ़ एवं स्थिर रहा। आज तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि छोटी-सी तप आराधना में भी व्यक्ति अपने शरीर का कितना खयाल रखता है।

यथा 99 अतिचारों के कायोत्सर्ग-काल में एक मच्छर भी विचलित कर देता है तब सोचें कि हमारी आसक्ति कितनी है। सिंह गुफावासी अनगार को तप की आराधना के साथ-साथ अपनी काया से भी निर्ममता थी और जब वे साधना पूर्ण करके अपने गुरु के पास पहुँचे तब गुरु ने मात्र दुष्कर कहकर उनके तप को अनुमोदित किया। चार माह भूखे शेर की गुफा में निर्भयता के साथ आराधना में संलग्न, भूख-प्यास पर विजय, पूर्णतया चार माह मौन।

उसी समय स्थूलिभद्रजी जो कोशा गणिका के यहाँ चार्तुमास पूर्ण करके पहुँचे, जहाँ पर उनके मनोनुकूल-तनानुकूल वातावरण था। उन्हें गुरु ने दुष्कर, दुष्कर, दुष्कर तीन बार कहकर सम्बोधित किया। शेर की गुफा में चार्तुमास करने वाले इतने बड़े तपस्वी, भूख की वेदना को जीतने वाले साधक के मन में भी अहंकार रहा हुआ था। वह बाहर से तो झुक रहे थे, पर उनके अन्दर में मान और राग खड़ा था। जब व्यक्ति के मन में मान और राग जग जाता है तो व्यक्ति विशिष्ट बनने की इच्छा रखता है।

दो अवस्थाएँ हैं-1. विशुद्ध बनने की और 2. विशिष्ट बनने की। हमारी रुचि विशुद्ध बनने की है या विशिष्ट बनने की। विशिष्ट से आपकी पहचान हो सकती है और विशुद्ध से आपको सिद्धि मिलती है।

मान लीजिए, आप कहीं प्रवचन में गये, प्रवचन पूरा हुआ और बाहर निकले। प्रभावना बाँटी जा रही है। प्रभावना में भक्तामर स्तोत्र की किताब दी जा रही है। आप लेंगे या नहीं ? (प्रवचन सभा से आवाज आई- नहीं लेंगे) क्यों ? क्योंकि आपके पास पहले से ही रखी हुई है और आपकी सोच होगी कि ले लूँगा तो बिना वजह ही उपयोग में नहीं आने के कारण आशातना होगी। चार दिन बाद फिर आप प्रवचन सुनने के लिए गए, प्रवचन पूरा होने के बाद बाहर निकले और बाहर प्रभावना में आई फोन दिया जा रहा है, क्या करोगे ? (सभा में हँस रहे थे लोग) सभा में से उत्तर आया-ले

लेंगे। क्यों ? आपके पास पहले से ही मोबाइल है, फिर भी ले लेंगे। यह ही विडम्बना है कि जीव विशुद्ध बनने की नहीं, विशिष्ट बनने की चाह रखता है। विशिष्ट बनने की चाह में आदमी नीचे भी गिर जाता है। ठीक उसी प्रकार सिंह गुफावासी अनगार के मन में विशिष्ट बनने की चाह जगी और उनके मन में गुरु के प्रति दोष दृष्टि जग गई और उन्हें लगा कि गुरु पक्षपाती हैं।

अनुभवी की बात याद आ रही है साधना में यदि गिरावट आ जाये तो भगवान बचा सकते हैं, पर यदि भावना में गिरावट आ जाये तो भगवान भी नहीं बचा सकते। इसीलिये कहा-कभी दूसरों के दोष मत देखना, लेकिन सिंहगुफावासी अनगार ने गुरु की कमी देखी, नाराज हुआ। दूसरों की एक गलती पर हम नाराज हो जाते हैं स्वयं की गलतियों को हम नज़रअंदाज करते हैं। मान के कारण से उनके मन में गुरु के प्रति द्वेष जग जाता है। देखिये कितना नुकसान होता है अहंकार से। उन्होंने आगे कोशा गणिका के यहाँ अलग से अगला चार्तुमास करने की इच्छा जताई, उसका दुष्परिणाम आपको और हमको अच्छी तरह से ज्ञात है।

निष्कर्ष यही है कि अहंकार रहेगा तो 'Happiness' (खुशी/प्रसन्नता) नहीं रहेगी। इसलिये कभी भी ऐसा नहीं सोचें कि मैं अकेला सब काम कर लूँगा। मुँह में रोटी का कवल रखते वक्त बायें हाथ की उपेक्षा की जाए तो फर्क नहीं पड़ता, पर नमस्कार करना हो तो दोनों हाथ साथ में चाहिये । अपने में कभी भी वस्तु, पद, पैसा, प्रतिष्ठा आदि के कारण अहंकार का पोषण मत करना। भगवान ने दृष्टिकोण दिया है- आपको विशिष्ट नहीं बनना, विशुद्ध बनना है।

विनय से साधना प्रारम्भ होती है । सरलता से साधना आगे बढ़ती है, गतिमान होती है और सिद्धि से साधना पूर्ण होती है। हम असंस्कार का त्याग कर विनय और सरलता के माध्यम से आगे बढ़ें, इन्हीं भावों के साथ।

धर्म-साधना के लिए धन की आवश्यकता नहीं है। इसकी साधना इतनी सस्ती, सरल और सुलभ है कि अमीर-गरीब सब कोई इसका लाभ उठा सकते हैं।
-आचार्यश्री हस्ती

धोवन धाम

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

जून का महीना ...सुबह के 8 बजे भी सूरज ने अपने तीव्र तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं ...पता नहीं कि दोपहर में क्या हाल होगा? गुरुदेव पास के शहर में विराजमान हैं जो कि हमारे क्षेत्र से लगभग 70 किलोमीटर दूर हैं ...गाड़ी में लगभग एक घण्टे की दूरी है। सुबह 9 बजे मैं प्रवचन में पहुँच गया...गुरुदेव का प्रवचन ...इतना ओजस्वी...गुरुदेव केसरी सिंह की तरह जिनशासन की सुरक्षा हेतु ललकार कर रहे हैं ...संयम तथा संयमियों की पर्युपासना में निर्दोषता एवं जागरूकता हेतु आह्वान कर रहे हैंमिले हुए का सदुपयोग करने की प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं ... वैराग्य अमृत की ऐसी बरसात में भीगने के पश्चात् ...अन्य सन्त-सती मण्डल की सेवा पर्युपासना का भी लाभ मिला। गुरुदेव से मांगलिक श्रवण करके ...भोजन करके ...बोतल में धोवन पानी भरा। निकलते-निकलते दोपहर के एक बज चुके हैंजैसा कि पता ही था ...सूर्य अपने प्रचण्ड रूप को धारण कर चुका हैआसमान से बरसती आग में कार भी गरम तवे-सी तप चुकी है।

आधे रास्ते में याद आया कि बहुत साल हो गए ...हमारी गाँव वाली जमीन को देखे हुए ...सोचा वो देखते हुए ही चलते हैं। ज्यादा बड़ी जमीन नहीं थी यह ...जो बाबूजी ने अपने स्वर्गवास के कुछ महीने पहले ही खरीदी थी ...उस समय मैंने पूछा भी था ..बाबूजी ...ये शहर से दूर ...इस छोटे से गाँव में जमीन खरीद कर करेंगे क्या ...पर बाबूजी ने कहा कि 'बेटा ये तो नहीं पता कि क्या करेंगे ...बस मन में आई कि इस गाँव में एक जमीन खरीदनी है ...और इसलिए खरीद ली।' गाँव के बाहर हाईवे पर ही जमीन है ... कार रोकी ...पास में रखी

बोतल से धोवन पानी पीकर गले को तर किया ...देखा वैसे तो जमीन के आस पास काफी कुछ खेत खलिहान हैं ...लेकिन गाँव की बस्ती कुछ अन्दर की तरफ है।

जमीन तो सही सलामत ही दिखी ...पर वापिस निकलते समय कार सही सलामत नहीं रही ...स्टार्ट ही नहीं हुई ...ऐसा लगता है कि शायद अधिक गर्मी की वजह से इञ्जन स्टार्ट नहीं हो रहा। एक घण्टे तक खूब कोशिश कर ली ...लेकिन कुछ नहीं हुआपूरा शरीर पसीने से तर बतर हो चुका हैपास बोतल में रखा धोवन पानी भी खत्म हो चुका है ...गजब की प्यास लगी है ... जमीन से करीब पचास कदम दूर कुएँ में झाँककर देखा ...पानी तो है ...पर कुछ गहराई पर दिखा ... लेकिन बाल्टी-रस्सी कुछ नहीं तो निकालें कैसे?

इसी ऊहापोह में दोपहर के तीन बज चुके हैं ...इंसान तो दूर ...एक पक्षी भी नहीं दिख रहा है ...खैर ...दूर हाईवे के सुनसान बस स्टॉप के पास एक छोटी-सी दुकान दिखाई दी ...वहाँ पहुँचा...पानी की बोतल खरीदने के लिए जेब से रुपये निकाले ...तभी याद आया कि आज सवेरे सन्त मुनिराज ने धोवन पानी के विशेष लाभ पर प्रवचन फरमाया था ...और आज के दिन धोवन पानी ही पीने का सामूहिक नियम भी दिलाया था। अब क्या करें ...मन ही मन गुरुदेव को याद किया और कार से वो खाली बोतल लेकर गाँव के भीतर कदम बढ़ाये ...इस उम्मीद में कि शायद धोवन मिल जाए ...या नहीं भी मिले तो पानी, राख इत्यादि से धोवन बनाया जाए ...और धोवन बनने तक ...प्रतीक्षा करके ...फिर प्यास बुझाई जाए। पर प्रश्न यह है कि ...जहाँ बिना धोवन के एक एक मिनट इतना भारी पड़ रहा है

...वहाँ इतनी देर प्रतीक्षा कैसे सम्भव होगी? आँखों के सामने बार-बार सन्त भगवन्तों का जीवन नज़र आ रहा है ...कि साधु-साध्वी कैसे प्यास के परीषह को सहन करते होंगे ...देश भर में भीषण गर्मी के मौसम में ...कड़ी धूप में विहार करते समय ...सुनसान इलाकों में ...ऐसी प्यास लगने पर ...धोवन पानी न मिलने पर कितना अपार समभाव रखते होंगे?

गाँव के अन्दर बीच बाजार में दुकानें तो खूब थीं ...लेकिन गर्म दोपहर में इक्के-दुक्के ग्राहक को छोड़कर बाकी कहीं कोई भीड़ नहीं दिखी ...चलते-चलते बाजार पार किया तो एक चौक सा दिखा ...बीचों बीच बने चबूतरे पर पेड़ की छाया तले बैठ गया ...गली में घर तो अनेक दिखे ...पर सब दरवाजे बन्द ही दिखे ...किस से पूछूँ पानी? गर्मी इतनी कि सड़क पर बैठे पशु भी बेहाल से दिखे ...मैं भी गर्मी से झुलसा हुआ ...निराश और हताश ...सोच रहा था कि कैसे तीन खण्ड के सम्राट् वासुदेव श्रीकृष्ण को अन्तिम समय में एक कलश पानी न मिल पाया ...तो मुझे भी यदि पानी न मिले तो क्या आश्चर्य?

प्राण गले तक आ चुके हैं ...चबूतरे पर बैठे-बैठे सब घरों की ओर नज़र कर ही रहा था ...कि अचानक एक घर के बाहर पानी के बड़े मटके दिखे ...पता नहीं कैसे ...कदमों में ताकत-सी आ गयी ...उधर ही बढ़ा। मटकों पर ध्यान से देखा तो चूने से सफ़ेद अक्षरों में लिखा था ...धोवन पानी ...यह पढ़कर मेरे प्यासे मन को कितनी खुशी हुई होगी... उसको शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। खुशी और भी दुगुनी हो गयी ...जब नजदीक पहुँचकर देखा तो दरवाजे के एक तरफ 'जय जिनेन्द्र ..पधारो सा' और दूसरी तरफ 'अतिथि देवो भव' ...लिखा हुआ था। एक वृद्ध महिला अन्दर से आई और मुस्कराते हुए बोली ...हाँ जय जिनेन्द्र बेटा! ..पानी पिलाऊँ ...?

जय जिनेन्द्र ...प्रणाम माँजी ...गजब की प्यास लगी हैयहाँ धोवन पानी मिलेगा?

हाँ बेटा...प्याऊ धोवन पानी की है तो ...धोवन तो जरूर ही मिलेगा ...बैठो ...और मैं वही प्याऊ की दहलीज पर ही बैठ गया ...।

उन्होंने मटके से ताम्बे के बड़े से कलश से धोवन पानी भरा ...और मेरी तरफ बढ़ा दियामैंने वो पानी पिया ...इतना शीतल ...इतनी तृप्ति हुई कि कैसे बताऊँ ...पानी गले से नीचे उतर रहा था और कुछ पानी आँखों से भी बह गया ...आज जीवन में पहली बार प्यास और पानी की कीमत का अन्दाज़ा हुआ ...और समझ आया कि जल को जीवन क्यों कहते हैं? ...ऐसा लगा कि आज मैंने अमृत का पान किया है ...एक धोवन धाम में।

तब तक तो माँजी ने दूसरा कलश भी भर दिया ...और वो भी मैं गटागट पी गया। बहुत-बहुत आभार माँजी ...पर एक बात पूछनी है माँजीकि ये धोवन पानी की प्याऊ तो मैंने पहली बार देखी ...आप कब से यह धोवन पानी?

तब तक तो कुछ प्यासे राहगीर और आ गए ... माँजी ने उन्हें भी मधुर शब्दों में जय जिनेन्द्र बोला और प्रेमपूर्वक धोवन पिलायासन्तुष्ट होकर एक राहगीर ने दस का नोट और दूसरे ने कुछ सिक्के माँजी को देने चाहे तो ...माँजी ने मुस्कराते हुए ...वहाँ लगी जीवदया की पेटी में डालने का निवेदन किया ...फिर मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए बोली ...यह कहानी तो बहुत लम्बी है बेटा ...पहले यह बताओ कि तुम हमारे गाँव में कैसे?

वो माँजी ...मैं पास वाले क्षेत्र में गुरुदेव के दर्शन-वन्दन और सेवा हेतु गया था ...आते समय गाँव के बाहर कुछ कारण से कार रोकੀ ...लेकिन गर्मी इतनी ज्यादा कि कार फिर स्टार्ट नहीं हुई ...और मेरा धोवन पानी भी खत्म हो गया और मैं प्यास से बेहाल ...धोवन पानी की तलाश में इधर आ गया।

अच्छा किया बेटा जो यहाँ आ गए ...बहुत थक गए हो ...ये लो ताजा छाछ पीकर ... पेड़ की छाया में रखी चारपाई पर थोड़ा सुस्ता लो ...तब तक मेरा बेटा

मैकेनिक को साथ ले जाकर तुम्हारी कार ठीक कराकर यहाँ ले आयेगा। इतने अपनत्व से उन्होंने छाछ दी कि मैं मना ही नहीं कर पायाऔर मेरे मना करते-करते ...उन्होंने आवाज लगा ही दी ...मोहन बेटा! इधर आ तो जरामैकेनिकजी को साथ ले जा और इनकी गाड़ी ठीक करवा कर ले आ ...

जी माँअन्दर से माँजी का बेटा मोहन आया ...दिखने में एकदम सभ्य और सलौना-सा ...उम्र यही कोई 18-19 साल ...मुझसे पूछा कि गाड़ी कहाँ पड़ी है और चाबी लेकर निकल गया।

मैंने घर पर फ़ोन करके समाचार दिए और पेड़ की छाया में बिछी चारपाई पर सुस्ताने लगा...नींद गहरी आई ...उठा तो देखा शाम के पाँच बज चुके थेपता नहीं शीतल जल या स्वादिष्ट छाछ का असर या उन माँजी का इतना वात्सल्य भरा व्यवहार ..नींद से उठकर मैं एकदम तरोताजा महसूस कर रहा था। मोहन पास ही बैठा कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रहा थाउसने बताया कि कार के रेडियेटर में कुछ गड़बड़ को मैकेनिकजी ठीक कर रहे हैं ...अभी एकाध घण्टे में यहीं लेकर आ जायेंगे। मैंने तसल्ली भरी साँस ली ...पूछा उससे ...मोहन ...तुम कितना पढ़े हो और काम क्या करते हो ?

मोहन :: जी भाई साहब ...मैं कोई सात-आठ साल का था तब बापू गुज़र गएमाँ ने ही जैसे-तैसे करके गाँव की सरकारी स्कूल में बारहवीं तक पढ़ाया ...माँ का तो शहर की कॉलेज में भेजने का मन था ...पर माँ को अकेले छोड़ने का मेरा ही मन नहीं था। पानी की इस प्याऊ में और पीछे बाड़े में बँधी गायों की देखभाल में माँ का सहयोग कर देता हूँ ...गायों के दूध, दही, घी आदि से कुछ पैसे मिल जाते हैं। कुछ खाली समय में गली मोहल्ले के बच्चों को पढ़ा देता हूँ ...थोड़ी अच्छी बातें सिखा देता हूँऔर अभी गाँव में ही कोई नौकरी की तलाश में हूँ।

ठीक है मोहन ...मैं कुछ सोचकर बताता हूँ। तब

तक तो मैकेनिकजी भी कार लेकर आ गये ...

मैंने उनको रिपेयर के रुपये पकड़ाये और निकलने के लिए तैयार हुआ ही था कि ...

अरे बैठो बेटा! ...भोजन लगा दिया है ...माँजी एक काँसे की थाली पकड़ाते हुए बोली ...

पर माँजी

माँजी :: घर पहुँचोगे तब तक सूर्यास्त हो जायेगा बेटा ...यहीं खा लो। वैसे तो भूख लगी नहीं थी ...पर थाली में गरम-गरम गुड़ का हलवा और कढ़ी-खिचड़ी देखकर तथा उस खिचड़ी में तैर रहे ...घर के बिलौने के देसी घी की भीनी-भीनी खुशबू से भूख जगते भी देर नहीं लगीऔर मैं पूर्ण स्वाद लेकर खाने लगा। जितना स्वाद हलवे और कढ़ी-खिचड़ी में था ...उससे कहीं अधिक उस परिवार के अपनत्व भरे व्यवहार का स्वाद था ! मैं खाते-खाते सोच रहा था कि इस छोटे से गाँव में 'अतिथि देवो भव' का इतना विराट् रूप देखने को मिलेगा ...कभी सोचा न था।

माँजी और मोहन भी पास ही बैठकर भोजन करने लगे।

मैंने उत्सुकतावश पूछ ही लिया ...माँजी ...आप दोनों भी शाम का भोजन ...रोज इतना जल्दी कर लेते हो क्या ?

माँजी :: हाँ बेटा! ...हम दोनों को आजीवन रात्रिभोजन का त्याग है।

क्या? पर आप तो जैन नहीं हो ...फिर भी रात्रिभोजन का त्याग करते हो ?

माँजी (मुस्कराते हुए) : तो क्या सभी जैनों को रात्रिभोजन के त्याग हैं क्या ?

माँजी की गहरी और अनुभव भरी बात को सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गयाआकर्षित भी हुआ और शर्मिन्दा भी ...फिर भी अपनी शर्मिन्दागी को कुछ छुपाते हुए बोला ...नहीं नहीं ऐसी बात नहीं है माँजीफिर भी आपके जीवन में यह रात्रिभोजन का त्यागये धोवन पानी की प्याऊ....उस पर 'जय

जिनेन्द्र' लिखा होगायह सब मेरे लिए अत्यन्त आश्चर्य के विषय हैं ...कैसे ..यह सब ... ?

माँजी :: ऐसी बात है बेटा ...इस प्याऊ में पानी तो हम पीढ़ियों से पिला रहे हैं बेटा ...मेरे दादाससुरजी कहा करते थे कि प्यासे को पानी पिलाने से खूब पुण्य मिलता हैपर बेटा तुम तो ये पूछो कि पहले कच्चा पानी ही पिलाते थे ...फिर धोवन पानी ही क्यों पिलाने लगे...? इसके पीछे भी बड़ी रोचक घटना है ...लगभग पाँच साल पहले ...दिसम्बर का महीना ...कड़ाके की सर्दी में ...शाम के समय ...एक जैन परिवार का 18-19 साल का लड़का जिसका नाम था अरिहंत ...अपने बड़े भाई श्रेयांस के साथ यहाँ गाँव में आया थावे दोनों भाई गाड़ी में भरकर कम्बल, शाल और स्वेटर लाये थे। गाँव के हरेक व्यक्ति को चाहे वो बड़ा हो या बच्चा ...इसी चबूतरे पर खड़े होकर दोनों भाइयों ने इतने प्रेम से मुस्कराते हुए ...हाथ जोड़कर ...जय जिनेन्द्र बोलते हुए ...सभी को कम्बल इत्यादि बाँटे। अपने इतने अच्छे व्यवहार से उन्होंने हर किसी को अपना बना लिया ... कम्बल आदि बाँटते-बाँटते रात को 10 बज गए ...वे निकलने की तैयारी करने लगे ...सभी गाँव वालों ने उन्हें रोक लिया और बोले कि हम आप दोनों को बिना भोजन कराये नहीं जाने देंगे। बड़े भाई श्रेयांस ने कहा कि...वे दोनों रात को भोजन नहीं करते हैं ...शाम को घर से कुछ खा पी कर ही निकले हैं ...और यह भी बताया कि अगले महीने पास वाले शहर में गुरुदेव के पास ...छोटे भाई अरिहंत की दीक्षा होने वाली है। दीक्षा से पहले अरिहंत की खूब भावना बनी कि इस बार सर्दी कड़ाके की है...सो छोटे-छोटे गाँवों में जाकर जरूरतमन्दों को कम्बल इत्यादि बाँटे जाएँ ...इसलिए हम यहाँ आये हैं ...और कल ये सब बाँटने के लिए हमें दूसरे गाँव भी जाना है ...इसलिए अभी निकलना सही होगा।

तब तक तो गाँव के सरपंच जगदीशजी खड़े हो कर दीक्षार्थी अरिहंत भैया के जयकारे लगाने लगे

...और कहने लगे कि ऐसे भाग्यशाली भाइयों को रात गाँव में ही रुकना पड़ेगा और कल सुबह नाश्ता पानी करवाकर ही भेजेंगे...तब तक तो ये मोहन दोनों भाइयों को हाथ पकड़कर हमारे घर ले आया...सर्दी बहुत थी इसी कमरे में उनके सोने की व्यवस्था की और मोहन ने ऐसे ही पूछ लिया कि अरिहंत भैया आपको संसार से डर लगता है क्या जो संसार को छोड़कर दीक्षा ले रहे हो ?

अरिहंत (मुस्कराते हुए) :: मेरे प्यारे मोहन ...मुझे डर तो लगता है, पर संसार से नहीं ...पाप से डर लगता है।

फिर अरिहंत ने हमें बताया कि धर्म क्या है ... पुण्य क्या है ...पान पुण्य आदि पुण्य के नौ भेद समझाए ...18 तरह के पाप समझाएऔर बताया कि जमीकन्द के त्याग से और रात्रिभोजन-त्याग करने से हम कितने बड़े पापों से बच जाते हैं। जय जिनेन्द्र बोलने के भी इतने लाभ बताये ...और हमें नवकार मन्त्र सिखाया और तब से हम रोज नवकार मन्त्र की माला भी फेरते हैं।

मोहन :: और हाँ भाई साहब ...अरिहंत भैया ने हमें कच्चे पानी के उपयोग से होने वाली जीवों की विराधना के बारे में भी बताया ...धोवन पानी पीने के लाभ भी बताये और धोवन पानी बनाने की विधि भी बताई। एक वो दिन था और यह आज का दिन ...तब से माँ प्याऊ पर भी धोवन पानी ही पिलाती है ...मैं और माँ दिन भर के बर्तनों को राख से ही साफ़ करके ...सही विधि से दिन के ये दो बड़े मटके भर के धोवन बनाते हैं ...और सैकड़ों लोगों की प्यास बुझाते-बुझाते ...यह धोवन शाम होते-होते तो पूरा सदुपयोग हो ही जाता है।

माँजी (अत्यन्त भावुक होते हुए) :: हाँ बेटा! ...तब से हम दोनों ने जमीकन्द त्याग के और रात्रिभोजन-त्याग के नियम भी लिए उस सौभाग्यशाली अरिहंत से ...और अगले दिन सुबह दोनों भाइयों को नाश्ता पानी करवा कर जब विदा किया तो पूरा गाँव इकट्ठा हुआसभी के आँखों में आँसू थे ...कभी

सोचा न था कि कुछ इंसान इतने पुण्यवान भी हो सकते हैं कि कुछ समय में ही सबको अपना बना लेते हैं ...फिर तो जनवरी में गाँव वालों के साथ ..हम दोनों भी उसकी दीक्षा पर गए ...वहाँ पर नवदीक्षित अरिहंत मुनि ने गुरुदेव को हमारे बारे में बताया और गुरुदेव ने भी हम पर खूब कृपा बरसाई।

मैं मन ही मन अत्यन्त हर्षित भावों से उन दृश्यों की कल्पना करते-करते सोच रहा था ...कि कैसे एक दृढ़धर्मी युवक की समझाइश ...इतने जीवों के जीवन को सम्यक् परिवर्तित कर देती है ...खूब अनुमोदना के भाव आये ...अरिहंत मुनि के प्रति भी और इन माँजी और मोहन के प्रति भी !

मोहन :: और हाँ भाई साहब ...दीक्षा के बाद गुरुदेव के अनेक शिष्यों के साथ अरिहंत मुनि का विहार हुआ तो हमारे गाँव में भी पधारे ...सन्त मुनिराज ने गाँव के कई घरों को सुपात्र दान बहराने का महान् लाभ प्रदान किया और हमें भी निर्दोष आहार बहराने के साथ-साथ धोवन पानी बहराने का भी लाभ मिला।

माँजी :: और हाँ तब गुरुदेव ने इसको नशे के दुष्परिणाम समझा कर जीवन भर नशामुक्त रहने का नियम भी दिलाया ...तो क्या उसके बाद भी सन्त-सती गाँव में पधारे क्या ?

माँजी :: हाँ बेटा पधारते रहते हैं ...आज सुबह भी महासतियाजी पधारी थीं ..हमको भी धोवन बहराने का लाभ मिला ...पर सुपात्रदान के ऐसे लाभ और कितने दिन मिल पायेंगे ...पता नहीं ...ऐसा क्यों बोल रहे हो माँजी ...लाभ तो हमेशा मिलेगा ही ...इसमें दिक्कत क्या है ?

माँजी उदास होते हुए बोली ... हमारी प्याऊ बन्द जो होने वाली है ...पास वाले घर में रहने वाले मकान मालिक बोल रहे हैं खाली करने को ...ऐसे तो वो बहुत भले इंसान हैं पर क्या करें ...जुलाई में शादी जो है उनके बेटे की ... उनको खुद को यह घर चाहिए। अब पता नहीं कि हम कहाँ जायेंगे....500 रुपए महीने में घर कहाँ

मिलता है भला...अब रहने का ही ठिकाना नहीं है ...तो गायों को कहाँ रखेंगे और कहाँ क्या प्याऊ लगायेंगे और क्या प्यासों की प्यास बुझायेंगे !

माँजी बोल रही थी और मैं आँखें बन्द करके कुछ सोच रहा था ...फिर 2 मिनट बाद मैंने कहा...माँजी ...लो आपकी समस्या का समाधान भी मिल गया ...।

माँजी :: वो कैसे बेटा ?

माँजी ...मेरे मन में यह विचार आया कि हमारे बाऊजी ने जो यह हाईवे पर जमीन खरीदी हुई है ...उस पर चार कमरों का एक घर बना दिया जाए ...बाहर बड़ा-सा बरामदा धोवन पानी की प्याऊ के लिए ...दो कमरे आप लोगों के रहने के लिए तथा थोड़ा हट के अलग से दो कमरे विश्राम कक्ष जैसे बना देंगे। जब कभी मैं या मेरा परिवार यहाँ से निकलेंगे तो कुछ विश्राम करके ...आप लोगों से मिलकर निकल लेंगे और हाँ ...जमीन के पिछले हिस्से में ...खेत के पास जो बाड़ा है उस पर छत डलवाने से 10-12 गायें तो वहाँ आराम से रह सकेंगी। यदि आपको जमता है तो मुझे बहुत खुशी होगी कि आप जैसे सेवाभावी लोग वहाँ रहें।

माँजी :: पर बेटा इतने पक्के ..एकदम नए मकान का किराया तोबहुत ज्यादा होगा न ...

मैंने मुस्कराते हुए कहाहाँ माँजी ...बनेगा तब तो मकान ही होगा, पर आप लोगों के रहने से घर बन जाएगा ...और वैसे तो किराया बहुत ज्यादा है ...लेकिन आपकी सेवा भावना की तुलना में बहुत कम होगा ...हम आपसे मासिक किराया सिर्फ 500 रुपए ही लेंगे वह भी बस आपका स्वाभिमान कायम रहे इसलिए ...और मोहन को हम दस हजार रुपए हर महीने तनखाह देंगे।

मोहन :: क्या भाईसाहब ...कितना बताया ...दस हजार महीना ...मुझे इतनी अच्छी तनखाह ...पर मुझे काम क्या करना होगा ?

भाई मोहन ...आपको बहुत सारे काम करने होंगे ...सुनो ...माँजी का ध्यान रखना है ...उनके प्याऊ में

हाथ बँटाना है ...गायों का पूरा ध्यान रखना है ...इन सब कामों के लिए ही आपको तनख्वाह देंगेऔर हाँ इसके अलावा भी आप अपनी इच्छा और रुचि से अनमोल सेवाएँ कर सकते हो ...ऐसी सेवाएँ जिनका मोल पैसे से चुकाया जाना सम्भव नहीं है ...जैसे कि जब कभी कोई भी सन्त-सती पधारें तो उनकी विहार सेवा का लाभ लेना ...उनसे अच्छी-अच्छी संस्कारों की बातें सीखकर...गाँव में सभी को सिखाना। गाँव के सभी लोगों को विशेषकर किशोर और युवा पीढ़ी को नशे के दुष्परिणाम बताकर गाँव को व्यसनमुक्त बनाने की भरपूर कोशिश करना। सभी को धोवन पानी पीने के लाभ भी बताना और हाँ ...जो यह प्याऊ बनेगी वह सिर्फ प्याऊ न रहकर धोवन धाम कहलाएगी ...क्योंकि आज दोपहर को पानी की गजब प्यास को भी मैंने महसूस किया है और धोवन पीकर उस अपार सन्तुष्टि को भी महसूस किया है ...ऐसी अद्भुत सन्तुष्टि तो एक तीर्थ में ही हो सकती है।

मोहन (मुस्कुराते हुए) :: जी भाई साहब ...ये सारे काम तो मैं अच्छे से कर सकता हूँ !

मैं भी मुस्कुराने लगा

माँजी (अपने दोनों हाथ मेरे सिर पर रखते हुए) :: जुग-जुग जीओ बेटा ...क्या हमारा पुण्य उदय में आया जो तुम्हारा हमारी कुटिया में आना हुआ ...हमारे जीवन की सब चिन्ताएँ ही मिट गयीं।

नहीं माँजी ...यह तो मेरा पुण्योदय है कि मुझे आप जैसे अच्छे और सेवाभावी लोगों से मिलना हुआ ...आप दोनों के त्यागमय जीवन और सेवा भावना से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इस सेवा के अभियान को और भी विराट् रूप देना है ...इसलिए मैं कल सवेरे आकर मोहन को इस घर बनाने के लिए आवश्यक रूपए देकर पूरी निर्माण योजना समझा देता हूँ। अब वह दिन दूर नहीं जब घर बन जायेगा ...नहीं नहीं ...सिर्फ घर नहीं ...बल्कि धोवन धाम बन जायेगा। यह कहकर मैंने ताम्बे के कलश से भरपूर धोवन पानी पिया ...जीवदया

की पेटी में रूपए डाले ...और मुस्कुराते हुए माँजी और मोहन से विदा ली।

घर पहुँचते-पहुँचते रात्रि के आठ बज गए ...परिवार के साथ कुछ बातचीत और सलाह मशवरा किया। मोबाइल पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी के साथ कुछ महत्वपूर्ण वार्तालाप किया और फिर सोने की तैयारी की। सोते समय दिन भर के वे ही दृश्य आँखों के आगे तैर रहे थे !

सोच रहा था उन माँजी और मोहन के बारे में ...भले ही धन सम्पत्ति से वह परिवार अधिक समृद्ध नहीं हैं ...लेकिन मन से कितने अधिक समृद्ध हैं ...क्या गजब की पुण्यवानी कि महाव्रतधारी सन्त-सतीवृन्द को निर्दोष आहार पानी बहराने का महान् लाभ अर्जित करते हैं ...धोवन प्याऊ पर अनेकों प्यासों की प्यास बुझाकर आशीर्वाद कमाते हैं। आज पहली बार खुद का आलीशान घर ... उस कुटिया ...के सामने बहुत छोटा प्रतीत हो रहा हैकुटिया क्या मन्दिर है मन्दिर ...और जब गुरुदेव पधारे होंगे माँजी की कुटिया मेंतो दृश्य भी वैसा ही रहा होगा ...जैसे शबरी के आँगन में श्रीराम पधारे होंगे। उन माँजी को भी कितना आनन्द आया होगा ...जैसे सती चन्दनबाला को आया होगा ...भगवान महावीर सम गुरुदेव को आहार पानी बहराकर ...धन्य है वे पुण्यवान ...जिनके घर आँगन में तीर्थ पधारते हैं ...और यही सब सोचते सोचते कब गहरी नींद आ गई ...पता ही नहीं चला।

1 अगस्त का दिन ...जो संकल्प लिया वह साकार हो चुका है ...चार कमरों का घर बनकर तैयार है ...बाहर के बरामदे में बड़ी-सी प्याऊउसके ऊपर नाम लिखा है धोवन धाम! धोवन के मटकों के पीछे रखी हुई कुर्सी पर बैठी माँजी अत्यन्त उत्साह के साथ ...प्रफुल्लित हृदय से प्रसन्नचित्त दिख रही है। मोहन ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर सभी तैयारियाँ अच्छे से की है। बाहर की खाली जगह में टेण्ट के नीचे व्यवस्थित रूप से कुर्सियाँ लगाई हुई हैं।

सुबह के लगभग नौ बजे धोवन धाम के शुभारम्भ का कार्यक्रम रखा है ...संघ समाज के सभी पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्तागण समय पर पधार चुके हैं। सभी के मन में अत्यन्त उत्साह भी है तथा आश्चर्य भी ...और जिज्ञासा भी कि इस धोवन धाम के निर्माण की रूपरेखा क्या है दिखने में इतने सुन्दर और सुविधाजनक प्रतीत हो रहे इस धोवन धाम के संयोजन और सञ्चालन की कैसी व्यवस्थाएँ होगीइत्यादि!

तब तक श्रीसंघ के मन्त्रीजी ने आगे पधारकर मंगलाचरण द्वारा शुरुआत की तथा सूचना दी कि गुरुदेव पास ही के शहर में विराजमान हैं। उनके दर्शन सेवा हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय कल सुबह ही पधार गए थे ...एवं उनकी अध्यक्षता में आज हमने इस धोवन धाम का शुभारम्भ समारोह आयोजित किया है। हमें अत्यन्त गौरव है कि हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष एक दृढ़धर्मी श्रमणोपासक तथा श्रेष्ठ स्वाध्यायी हैं। जिनशासन के

हित को हमेशा सर्वोपरि मानते हैं, संघ समाज के सभी सेवा कार्यों में हमेशा अग्रणी रहते हैं एवं सभी को साथ लेकर चलना उनकी प्रमुख विशेषता है। मैं उनसे विनम्र निवेदन करूँगा कि वे आगे पधारकर धोवन धाम का शुभारम्भ करें एवं अपने उद्बोधन से धोवन धाम के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष मुस्कराते हुए उठे और धोवन प्याऊ के पास जाकर ...माँजी को जय जिनेन्द्र कहते हुए प्रणाम किया। माँजी ने भी मुस्कराते हुए जय जिनेन्द्र सा बोलकर ...ताम्बे के कलश में उन्हें धोवन पिलाकर तृप्त किया ...और इस सादगी भरे अन्दाज़ से धोवन धाम का शुभारम्भ हुआ और उसके बाद लगभग सभी ने माँजी के हाथों से धोवन ग्रहण किया। अनेक राहगीर जन भी पंक्तिबद्ध होकर धोवन पानी से तृप्त हो रहे हैं। कुछ ही देर में सभी लोग कुर्सियों पर आकर बैठ चुके हैं और उत्सुक है अध्यक्षीय उद्बोधन को सुनने के लिए।

(क्रमशः)

समाज के लिए हो रविवार

श्री त्रिलोकचन्द जैन

जब हो जाये उग्र, प्रौढ़ अवस्था को पार, जिम्मेदारियों के बोझ को, थोड़ा लो उतार। समर्पित करो समाज को, हफ़्ते का एक दिन, परिवार नहीं, अब समाज के लिए हो रविवार।। पीछे हट रहे हैं हम, कर्ज़ समाज का चुकाने से, दूर रखने लगे हैं खुद को, सेवा के ताने-बाने से। युवाओं को सम्भला समाज, पतन खुद का कर रहे, जो खुद की जिम्मेदारी थी, उससे पीछे हट रहे। आगे आओ वरिष्ठ जनों, सेवा के व्रत को लो धार, परिवार नहीं, अब समाज के लिए हो रविवार।। कब रुकोगे जीवन की, इस अन्तहीन भागदौड़ से, कब हटोगे अर्थ की, इस अन्धी होड़ाहोड़ से। जिस समाज की छाँव तले, हम पले बढ़े,

संस्कारों की संरक्षा से, हम बने बढ़े। अब लौटाना है समाज को, जो लिया उधार, परिवार नहीं, अब समाज के लिए हो रविवार।। इतने बुजुर्ग भी मत मानो, अपने आप को, सम्पन्न तो करते ही हो, घर के सारे काज को। अनुभवियों की कार्यशैली, सदा श्रेष्ठ कहाती है, ये तो जलते दिये की, अखण्ड ज्योत और बाती है। आप से समाज का, सुदृढ़ और मजबूत आधार, परिवार नहीं, अब समाज के लिए हो रविवार।। कृपाचार्य ना बनकर, स्वयं राम बन आओ तुम, संकल्प सेवा का कर, समाज की ख्याति बढ़ाओ तुम। युवाओं के मार्गदर्शक बनो, उन्हें सही राह दिखाओ तुम, उनको परिवार सम्भालने दो, समाज स्वयं सम्भालो तुम। सार्थक कर जाओ जीवन को, बन जाओ एक मिसाल, परिवार नहीं, अब समाज के लिए हो रविवार।।

-37/67, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

विश्व अहिंसा दिवस पर करें अहिंसा का विस्तार

श्री सुरेन्द्रसिंह पोखरण

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2007 में घोषणा की, कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाय। आज अहिंसा और जीवदया की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। सन् 1970 से 2010 के चालीस वर्ष के अन्तराल में पृथ्वी से लगभग आधे जीव-जन्तु और पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ नष्ट हो गईं। हर वर्ष पृथ्वी से लगभग 25,000 जीवों की प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं, जैसे कि आजकल काला हिरन, तितलिया, बिच्छू, साँप, चिड़ियाँ वगैरह देखने को कम मिलते हैं। लगभग 250 लाख चिड़ियाओं की मेडिटेरनियन समुद्र (यूरोप और अफ्रीका के बीच) पर स्थित लगभग 20 देशों द्वारा हर वर्ष हत्या की जाती है। हर वर्ष मांसाहार के लिए 15,000 करोड़ जीवों की हत्या की जाती है। इस स्थिति में देखें तो हम पाते हैं कि एक तरफ विज्ञान ने हमें सेटेलाइट, रॉकेट, कम्प्यूटर, गूगल और अच्छे स्वास्थ्य के लिए कई दवाइयाँ दी हैं, परन्तु आज तक भी विज्ञान से हम एक चींटी जैसा जीव या घास की एक पत्ती भी नहीं बना पाए, क्योंकि जीव से ही जीव पैदा होता है। परन्तु विज्ञान के प्रचार और उसके तकनीकी एवं आर्थिक विकास से जुड़ने के कारण एक दिन में करोड़ों जीवों की मृत्यु हो रही है।

आजकल विकास का अर्थ सिर्फ आर्थिक विकास हो गया है। इस आर्थिक विकास की दौड़ में आध्यात्मिक विकास की दर बहुत कम हो गयी है। किसी देश की आर्थिक विकास की दर 6 या 7 प्रतिशत है, परन्तु यह कोई नहीं पूछता है कि उस देश के आध्यात्मिक विकास की दर क्या है? कुछ

वर्षों पहले महिलाएँ आध्यात्मिक विकास और अन्य धार्मिक क्रियाओं में लीन रहती थीं, पर वे भी अब आर्थिक विकास में बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं। जिससे पुरुषों और महिलाओं में भी एक प्रतिस्पर्धा शुरू हो गयी है। इसके कारण भी लोगों में मन मुटाव बढ़ा है तथा हिंसक भावनाओं में वृद्धि हुई है।

ज्यों-ज्यों औद्योगिक विकास हो रहा है, पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। नए-नए खतरनाक हथियारों और रासायनिक हथियारों को बनाया जा रहा है, जिनमें लाखों लोगों को मारे जा सकने या अर्ध विक्षिप्त करने की क्षमता है। एक अनुमान के अनुसार, आज विश्व के सभी देश मिलकर हथियारों पर इतना खर्च कर रहे हैं कि उस राशि से पूरे विश्व की गरीबी और भुखमरी मिटायी जा सकती है।

कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार इस पृथ्वी पर बढ़ते हुए प्रदूषण, जनसंख्या और वातावरण में बदलाव के कारण, अब सिर्फ छह वर्ष बचे हैं, जिसके बाद पृथ्वी पर ऐसे परिवर्तन होना शुरू हो जायेंगे जिनको वापस ठीक करना असम्भव हो जायेगा। गत वर्ष की बढ़ती हुई गर्मी इस बात का स्पष्ट उदाहरण है।

एक और बढ़ती हुई हिंसा का कारण है आर्थिक विकास में स्वचालित मशीनों और कम्प्यूटर्स का बढ़ता इस्तेमाल, जिससे गाँव के गाँव खाली हो गए हैं और लोग रोजगार के लिए शहरों की तरफ दौड़ रहे हैं। जिससे कुछ लोगों के पास प्रचुर धन केन्द्रित हो गया है। इससे शहरों में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, जिससे राग-द्वेष और हिंसा के भाव बढ़ रहे हैं।

मांसाहार और पर्यावरण

हिंसा का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे उदहारण से समझते हैं। अगर अमेरिका के सभी चालीस करोड़ नागरिक सिर्फ एक दिन के लिए मांसाहार का त्याग कर दें तो पर्यावरण को अग्रांकित लाभ होगा। 4,000 करोड़ लीटर पानी की बचत होगी, लगभग 7.5 लाख टन अन्न बचेगा, 30 लाख एकड़ जमीन बचेगी, 28 करोड़ लीटर गैस की बचत होगी और 33 टन एंटीबायोटिक की बचत होगी। इसके अलावा जो ग्रीन हाउस गैसों के उत्पादन में कमी आएगी, उसका लेखा-जोखा इस प्रकार है-12 लाख टन कार्बन डाई-ऑक्साइड, 30 लाख टन मिट्टी का भूस्खलन, 45 लाख टन पशुओं का मलमूत्र और 7 टन अमोनिया गैस आदि।

अहिंसा और जीवदया सभी धर्मों का मूल मन्त्र है

अहिंसा और जीवदया सभी धर्मों का मूल मन्त्र है। भगवान महावीर के अनुसार सब जीवों में एक जैसी आत्मा होती है, सिर्फ बाहर का आवरण, भौतिक शरीर के कारण अलग-अलग दिखता है। सब जीव ज्यादा से ज्यादा समय तक शान्ति और सुख से जीना चाहते हैं तथा वे अपने बच्चों और उनके बच्चों को सुखी देखना चाहते हैं।

ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह कहते हैं कि ओह मांसाहारियों! जब तुम अपना हाथ फैलाओगे तो मैं अपनी आँखे बन्द कर लूँगा, क्योंकि आपके हाथ खून से सने हैं। मैं शान्ति और दया में विश्वास रखता हूँ, न कि हिंसा में। ईश्वर शान्ति में विश्वास रखता है, उनका आदेश है कि मनुष्य फल, फूल, सब्जी और अन्न खाये।

कुरान शरीफ के अनुसार, जहाँ दया है वहीं खुदा है। ऐ मनुष्यों! पेट को कब्र मत बनाओ। अल्लाह ने जीवों को पैदा किया है तो साथ में उनके लिए खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें भी पैदा की हैं। जरा देखो, अल्लाह पृथ्वी पर वर्षा करता है, जिससे अन्न, फल, फूल, घास और अन्य वस्तुएँ मनुष्य और पशुओं के खाने के लिए पैदा होती हैं।

पारसी धर्म गुरु के अनुसार मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने दुश्मनों से भी दोस्ती का व्यवहार करे। जो पशु भाव है उसे मनुष्यत्व में बदलो। अज्ञानी को ज्ञान प्रदान करो तथा जो मनुष्य जानवरों को मारता है तथा दूसरों को खिलाता है, उस व्यक्ति का भी अंग छेदन होगा।

ईसाई धर्म गुरु श्री पोप फ्रांसिस ने 18 जून, 2015 को कहा धरती के सभी जीव एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए पूरे विश्व के नागरिकों से अपील की है कि वे प्राणियों की रक्षा के लिए अपने खाने की आदतों को बदले; क्योंकि इससे वातावरण को भी भारी नुकसान हो रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा ने अमेरिका के सभी नागरिकों को आह्वान किया था कि वे सप्ताह में एक बार मांसाहार का त्याग करें और जीवों की रक्षा करें तथा पर्यावरण को बचाने में सहयोग करें।

अभी कुछ दिन पहले यानी 27 सितम्बर, 2015 को अमेरिका के फेसबुक के कार्यालय में जब भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रजी मोदी को एक बोर्ड पर उनके विचारों को लिखने के लिए प्रार्थना की गयी थी, तो उन्होंने सबसे पहला वाक्य लिखा, वह था अहिंसा परमो धर्मः। इस वाक्य के माध्यम से भारतीय प्रधानमन्त्री ने अहिंसा के महत्त्व को विश्व के सामने रख दिया।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का सन् 2012 का जीवों में चेतना के बारे में घोषणा पत्र

सन् 2012 में विश्व प्रसिद्ध कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में विश्व के जाने-माने मानसिक चिकित्सकों, न्यूरो फिजियोलॉजिस्ट, न्यूरो सर्जन, न्यूरो अनटोमिस्ट्स का सम्मलेन हुआ था, जिसमें एक विशेष प्रस्ताव पारित किया गया था। इस प्रस्ताव का संक्षिप्त में अर्थ यह है कि चाहे मनुष्य हो या निम्न स्तर का जीव हो, जैसे कि बैक्टीरिया, वायरस इत्यादि, हर एक में चेतना जैसी कोई चीज जरूर होती है। मनुष्यों में कोर्टेक्स

को चेतना का स्रोत माना गया है, परन्तु यह पाया गया है कि इसके बिना भी जीवों के अन्दर चेतना जैसी चीज होती है। जिसके आन्तरिक गुण मनुष्यों की चेतना के आन्तरिक गुणों से काफी मेल खाते हैं, जैसे कि छोटे जीवों को भी गर्मी, सर्दी का अनुभव होता है, उन्हें भी भूख-प्यास का अनुभव होता है, उन्हें भी सुख-दुःख का अनुभव होता है। इससे स्पष्ट है कि अहिंसा की अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी जरूरत है।

डार्विन का विकासवाद का सिद्धान्त और भारत का आध्यात्मिक विकास का दर्शन

आज वर्तमान विज्ञान को देखें तो हम पाते हैं कि विज्ञान में डार्विन का विकासवाद का सिद्धान्त पढ़ाया जाता है। जिसको संक्षिप्त में (Survival of the Fittest) के नाम से जाना जाता है। इस का अर्थ है कि जो प्राणी अपने आपको अपने चारों ओर के वातावरण के अनुरूप ढाल लेता है वह ही जीवित रह सकता है और जो यह नहीं कर पाता है वह मिट जाता है। इसमें किसी पशु-पक्षी और मनुष्य को कितने संसाधन उपलब्ध हैं, उस पर भी काफी जोर दिया गया है। इस सिद्धान्त में दूसरे जीवों को कष्ट पहुँचाना और यहाँ तक कि उनकी हत्या कर उनके खाने को भी सम्भव बताया गया है। अभी भारत में वर्षा का मौसम है और जैनधर्म के अनुयायी, चातुर्मास मना रहे हैं। इस समय जैन साधु और साध्वियाँ एक ही शहर या एक ही गाँव में रहते हैं ताकि उनके चलने से छोटे-छोटे जीवों की हिंसा न हो और न ही इन जीवों को कोई कष्ट पहुँचे। यह परिपाटी हज़ारों सालों से चली आ रही है तथा जैनधर्म के अनुयायी काफी हद तक जीवों को कष्ट देने से और मारने से अपने आपको दूर रखते हैं। यही नहीं वे जहाँ तक हो, उन्हें बचाने का भी प्रयास करते हैं। इसका मुख्य कारण है जैनधर्म का सिद्धान्त-अहिंसा, जियो और ज़ीने दो। एक भारतीय विद्यार्थी शारदा साहनी ने ब्रिस्टोल विश्वविद्यालय के पी-एच्.डी. शोधप्रबन्ध में लिखा है कि अगर पर्याप्त संसाधन प्रकृति में उपलब्ध हैं तो जरूरी

नहीं है कि डार्विन का सिद्धान्त ही पूर्ण सत्य हो।

इसलिए जैनधर्म में सभी आत्माओं के सामूहिक विकास की बात कही गयी है। इसलिए हमें डार्विन के Survival of the Fittest के सिद्धान्त के साथ भारतीय जीवन के जियो और ज़ीने दो कि तुलना भी करना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि डार्विन का सिद्धान्त प्राणियों के भौतिक अन्तर (Differences) के अध्ययन तक ही सीमित है, जबकि जैनों का 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त प्राणियों में निहित मूल आत्मा पर आधारित है। महात्मा गाँधी के अहिंसा के बारे में कुछ विचार

- ❖ जब भी आपका सामना किसी विरोधी से हो, उसे प्रेम से जीतें।
- ❖ पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरी करने के लिए नहीं।
- ❖ एक देश की महानता और नैतिक प्रगति को इस बात से आँका जा सकता है कि वहाँ जानवरों से कैसा व्यवहार किया जाता है।
- ❖ जब मैं निराश होता हूँ, मैं याद कर लेता हूँ कि समस्त इतिहास के दौरान सत्य और प्रेम के मार्ग की ही हमेशा विजय होती है। कितने ही तानाशाह और हत्यारे हुए हैं और कुछ समय के लिए वह अजेय लग सकते हैं, लेकिन अन्त में उनका पतन होता है।
- ❖ मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा भगवान है और अहिंसा उसे पाने का साधन।
- ❖ क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं।
- ❖ विश्व के सभी धर्म, भले ही और चीजों में अन्तर रखते हों, लेकिन सभी इस बात पर एकमत हैं कि दुनिया में कुछ नहीं बस सत्य जीवित रहता है।
- ❖ मौन सबसे सशक्त वक्तव्य है। धीरे-धीरे दुनिया आपको सुनेगी।
- ❖ थोड़ा-सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है।
- ❖ अहिंसा ही धर्म है, वही ज़िन्दगी का एक रास्ता है।

- ❖ कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती, यदि वह अपने को अन्य से पृथक् रखने का प्रयास करे।
- ❖ गरीबी दैवीय अभिशाप नहीं, बल्कि मानवरचित षड्यन्त्र है।

विश्व अहिंसा दिवस मनाने के लिए कुछ सुझाव

व्यक्तिगत स्तर पर-(1) स्वयं को कभी हिंसित नहीं करना चाहिए और न ही अपनी भावना को ठेस पहुँचाना चाहिए। यानी सबसे पहले स्वयं के प्रति हिंसा का भाव नहीं रहना चाहिए। (2) अपने परिवार, रिश्तेदारों और मित्रों, समाज के अन्य सदस्यों के प्रति जहाँ तक हो सके अहिंसा के भाव रखना चाहिए कि मैं उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाऊँगा। (3) उन सब वस्तुओं का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए या कम इस्तेमाल करना चाहिए जिनको बनाने में पशुओं की हिंसा की जाती है या उन्हें कष्ट पहुँचाया जाता है। जैसे कि चमड़े के बटुए, बेल्ट, जूते, हैट्स आदि। (4) अहिंसा दिवस के दिन लोग शाकाहारी भोजन लें, व्रत करें और हो सके तो उपवास करें। (5) अपनी क्षमता के अनुरूप, कुछ समय के लिये मौन रखें (1 घण्टे से लेकर कुछ घण्टों तक), (6) उस दिन अपने परिवार के सदस्यों, कार्यालय या व्यापार के सहकर्मियों की भावनाओं का सम्मान करें और हो सके तो ऐसी कोई बात न करें जिससे उनका दिल दुःखे। (7) ऐसी फिल्मों और टीवी के कार्यक्रमों को कम देखें जिनमें हिंसा दिखाई जाती है।

सामाजिक स्तर पर-(1) सभी धार्मिक संगठनों को इस कार्यक्रम से जोड़ा जाय और उन्हें इस दिवस के बारे में सूचित किया जाय। इसके लिए सभी धार्मिक संगठनों से तथा धर्मगुरुओं से आह्वान किया जाय कि वे इस दिन अपने-अपने क्षेत्रों में अहिंसा से जुड़े कुछ न कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करें। (2) सर्वधर्म प्रार्थनाएँ, गोष्ठियाँ, रैलियाँ, सेमिनार और कॉन्फरेन्स वगैरह का आयोजन किया जाय। (3) हर गाँव, शहर और कस्बे में व्याख्यान रखे जाय, जो अहिंसा के

व्यावहारिक और वैज्ञानिक पहलु पर हों। (4) जो बड़े-बड़े संगठन या कॉर्पोरेट हाउस हैं वे अपने-अपने कार्यालयों में इस दिन को अहिंसा दिवस के रूप में मनार्यें और इन कार्यों में तन, मन और धन से पूरा सहयोग करें।

विद्यालयों के स्तर पर-(1) बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, महाविद्यालयों में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाय। (2) युवा वर्ग एवं बच्चों में अहिंसा की भावना पनपे ऐसे संवाद, नाटक, वगैरह का आयोजन किया जाय। (3) मानव का पशु-पक्षियों एवं पौधों और वनस्पति से भी प्यार बढ़े ऐसे वातावरण के निर्माण की शुरुआत की जाय। (4) पर्यावरण दूषित करना भी हिंसा है अतः इस दिन पर्यावरण का हनन हो ऐसे कार्य बन्द या कम हो। (5) छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ विभिन्न भाषाओं में निकाली जाएँ जिनमें अहिंसा और पर्यावरण जैसे विषयों पर जानकारी हो और आज के युग में इनकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला जाय।

मीडिया और विज्ञापन से बहुत कुछ हो सकता है-(1) मीडिया जैसे कि टेलीविज़न, समाचार-पत्रों को भी इस कार्य से जोड़ा जाय। टेलीविज़न पर अहिंसा के बारे में नियमित कार्यक्रम प्रसारित किया जाय, जिनमें सभी समुदायों के धर्मगुरु के साक्षात्कार लिये जाएँ और उनके अहिंसा के बारे में विचारों से आम जनता को अवगत कराया जाय। (2) अहिंसा दिवस के आस-पास लगभग कम से कम एक सप्ताह तक गाँधीजी और सभी धर्मों के महापुरुषों के अहिंसा सम्बन्धित सन्देशों को मीडिया से प्रसारित किया जाय। (3) इसके आलावा सामाजिक मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सप से भी इस बारे में एक जन-जागरण अभियान शुरू किया जाय। (4) बड़े बड़े शहरों में आम जनता और उद्योगपतियों को विज्ञापन लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

सरकार और बड़े संगठनों का महत्त्वपूर्ण सहयोग

(1) राज्य सरकारों और विभिन्न संस्थानों द्वारा, अहिंसा पर श्रेष्ठ कार्य करने वालों को प्रमाण पत्र और विशेष पुरस्कारों से सम्मानित किया जाय। (2) भारत सरकार अन्य देशों की सरकारों से भी निवेदन करे कि उस दिन वे देश भी बड़े स्तर पर विश्व अहिंसा दिवस मनाने पर विचार करे। (3) संयुक्त राष्ट्र संघ, इस दिन विश्व के सभी देशों से विशेष अपील करे कि सभी देश हत्या, आतंक एवं युद्ध बन्द करे और किसी भी देश में इस दिन किसी को भी फाँसी न दी जाय। (4) जिन अपराधियों को लम्बी सजा हुई है, परन्तु उनका हृदय परिवर्तन हुआ है या उनके व्यवहार में सुधार आया हो तो उनकी सजा में कटौती या उन्हें मुक्त करने पर विचार किया जाये। (5) संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व के सारे देशों से विशेष अपील करे कि वे आने वाले पूरे वर्ष में हिंसा के स्थान पर अहिंसक विधियों का उपयोग करे, अहिंसा के सिद्धान्तों को बढ़ावा दे और ज्यादा से ज्यादा व्यवहार में लाये। (6) अहिंसा की भावनाओं की वृद्धि के लिए विश्व के सभी शस्त्र बनाने वाले कारखाने उस दिन शस्त्र बनाना बन्द रखें। (7) ऐसी फिल्मों और टीवी के कार्यक्रमों को कम देखें, जिनमें जरूरत से अधिक हिंसा दिखाई जाती है। (8) अगर सम्भव हो तो सभी बूचड़खानों के मालिकों से अनुरोध किया जाय कि वे एक दिन के लिए बूचड़खाने बन्द रखें और बूचड़खानों के मालिकों और कर्मचारियों को अहिंसा और पर्यावरण के महत्त्व के बारे में जानकारी दी जाय। (9) पूरे विश्व में जहाँ भी गत एक वर्ष में निर्दोष लोगों की हत्याएँ हुई हों तो उन मृत व्यक्तियों की आत्मा की शान्ति के लिए एक मिनट का मौन रखा जाय और उनको श्रद्धाञ्जलि दी जाय।

अन्य कार्य—(1) जो लोग मांसाहारी हैं, वे अगर एक माह में दस बार मांसाहारी भोजन लेते हैं तो उसे कम कर के जैसे पाँच बार कर देना चाहिए और दूसरे माह में

और कम कर देना चाहिए, इस तरह छह या बारह माह में यदि कोई संकल्प करे तो इस व्यसन से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इससे कई जीवों की रक्षा होगी और पर्यावरण सन्तुलन बनाये रखने में काफी सहायता मिलेगी। (2) अहिंसा के पालन के लिए बहुत जरूरी है कि सब जगहों पर सफाई रखी जाय, क्योंकि जहाँ गन्दगी होती है वहाँ पर कीड़े-मकोड़े पैदा होते हैं और वे मरते हैं, जिससे हिंसा होती है।

शाकाहार का प्रचार करने वाले भाई-बहनों का खुले दिल से स्वागत करने के लिए तैयार रहना चाहिए और अगर जरूरत हो तो इस के लिए कुछ त्याग करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

तो आइये, विश्व अहिंसा दिवस को पूरे संसार में मनायें और पूरी पृथ्वी के सभी जीवों के सुख, शान्ति, प्रसन्नता और सन्तुलित विकास का संकल्प लें।

1. <http://www.un.org/apps/news/story.asp?NewsID=22926Cr=nonCrI=violence.Vb9IQbWN36Y>
2. <http://www.telegraph.co.uk/news/earth/wildlife/11129163/Half-of-worlds-animals-have-disappeared-since-1970.html>
3. [http://wwf.panda.org/about\\$our\\$earth/biodiversity/biodiversity/](http://wwf.panda.org/aboutourearth/biodiversity/biodiversity/)
4. [http://www.vegetarismus.ch/info/bilder\\$oe ko/landuse\\$en.jpg](http://www.vegetarismus.ch/info/bilder$oe ko/landuse$en.jpg)
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Environmental_impact_of_meat_production
6. [http://www.alternet.org/story/134650/the\\$st artling\\$effects\\$of\\$going\\$vegetarian\\$for\\$just\\$one\\$day](http://www.alternet.org/story/134650/the$st artling$effectsofgoing$vegetarian$for$just$one$day)
7. <http://www.adaptt.org/killcounter.html>
8. Elizabeth Kolbert (2014) The sixth Extinction, Bloomsbury Publishing India Private Limited

-भूतपूर्व वैज्ञानिक, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो)

-बी 71, पृथ्वी टॉवर, जोधपुर चार रास्ता, अहमदाबाद-380015 (गुजरात)

राग की आग कितनी खतरनाक

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

एक जैन कुल में उत्पन्न हुए शिशु को सबसे पहले नमस्कार मन्त्र सिखाया जाता है। जब वह आध्यात्मिक पाठशाला में जाता है तब प्रायः अधिकांश पाठशालाओं में ज्ञान की शुरुआत कुछ प्रश्नों से होती है, उन्हीं में से एक प्रश्न होता है जैन किसे कहते हैं? उत्तर सिखाया जाता है, जो जिन अर्थात् जिनेश्वर भगवान के उपासक होते हैं, उन्हें जैन कहते हैं।

फिर प्रश्न आता है कि जिन किसे कहते हैं? उत्तर है—जिन्होंने राग-द्वेष को जीत लिया है उन्हें जिन कहते हैं। वस्तुतः प्रभु स्वयं राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करते हैं और यही मार्ग मुमुक्षु आत्माओं के लिए भी निर्दिष्ट करते हैं। उलझन यहीं से शुरू होती है कि द्वेष दिखने में बड़ा भयंकर दिखता है, उसका पता शीघ्र चल जाता है, यह बुरा भी लगता है, वह त्यागने योग्य भी जल्दी से समझ में आ जाता है। यदि किसी का कोई व्यक्ति द्वेषी है तो उसके चेहरे पर क्रोध, मनमुटाव, ईर्ष्या आदि के लक्षण तुरन्त नज़र आ जाते हैं, वचनों में कटुता, व्यवहार में रूखापन साफ-साफ अवलोकित भी होता है।

किन्तु राग का मामला इसे थोड़ा भिन्न ही है। रागी व्यक्ति को जिस किसी व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति पर राग होता है वह उसकी हिफाज़त करता है, स्वयं के प्राणों से अधिक उसकी चिन्ता करता है, उस वस्तु या व्यक्ति का हितैषी होता है तो फिर राग कर्मबन्ध का कारण क्यों? जबकि उस परिस्थिति, व्यक्ति आदि से तो उसका मैत्री भाव है। बस हमें राग का यही खेल समझने की कोशिश करनी है। एक चोर आपकी बाह्य सम्पदा को नुकसान पहुँचा सकता है। लेकिन राग रूपी चोर आत्म-सम्पदा को नुकसान पहुँचाता है। एक शत्रु जो सामने से वार करता है उससे खतरा कम होता है, पर

भीतर छिपे शत्रु से खतरा अधिक होता है, क्योंकि बाहर के शत्रु के सम्बन्ध में व्यक्ति सजग, सचेत, सावधान होता है, पर जिसे शत्रु माना ही नहीं, अपने घर के भीतर ही पनाह दे रखी हो, उसका अचानक वार अधिक खतरनाक होता है। बस राग के बारे में भी यही तथ्य लागू होता है। द्वेष का खतरा सामने से दिखता है, इसलिये व्यक्ति सावधान रहने का प्रयत्न करता है, उससे दूर रहने का पुरुषार्थ करता है, पर राग को तो हमने शत्रु माना ही नहीं है, इसलिये इससे बचने का प्रयास बहुत विरले लोग ही कर पाते हैं।

बृहद्आलोचना में हम पढ़ते हैं—राग-द्वेष दो बीज से कर्मबन्ध की व्याध अर्थात् कर्मबन्ध का कारण राग और द्वेष दोनों है। उत्तराध्ययनसूत्र का 23वाँ अध्ययन, 43वीं गाथा में केशी-गौतम संवाद के माध्यम से प्रभु महावीर स्वयं फरमा रहे—रागद्वोसादओ तिच्चा, नेहपासाभयंकरा अर्थात् राग-द्वेष दोनों और तीसरा स्नेह का पाश (जाल) भयंकर है जिसमें फँसकर प्राणी कर्मबन्ध कर लेता है। वहीं उत्तराध्ययनसूत्र के 32वें अध्ययन प्रमाद स्थान गाथा 7 में प्रभु महावीर ने फरमाया—रागो य दोसोऽवि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति अर्थात् राग-द्वेष कर्म के बीज हैं, कर्म जन्म-जरा-मरण को बढ़ाने वाला है, यह जन्म-जरा-मरण ही दुःख के हेतु हैं।

अत्यधिक राग से ग्रसित व्यक्ति इन्द्रियों के अधीन हो जाता है और इन्द्रियों के प्रति राग उसे काल का ग्रास तक बना देता है। पाँच इन्द्रियों के 23 विषय और 240 विकार हैं। इन्द्रियों के विषय खतरनाक नहीं होते, अपितु उनके विकार अर्थात् उन विषयों पर राग या द्वेष आत्मा का अहित करते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र के इसी 32वें अध्ययन में शासन प्रभु ने इन्द्रिय राग से होने वाली

हानि की बहुत ही सरल रूप में व्याख्या की है।

24वीं गाथा में प्रभु फरमा रहे हैं कि चक्षुरिन्द्रिय के राग के वशीभूत होकर पतंगा मृत्यु को प्राप्त होता है। रागाउरे से जह वा पयंगे, आलयलोले समुवेई मच्चुं अर्थात् नेत्रों से अग्नि का प्रकाश दिखने पर, रूप का दीवाना पतंगा अपने प्राणों का विसर्जन उसी अग्नि में कर देता है। गाथा 37 में श्रोत्रेन्द्रिय सम्बन्धी राग का उदाहरण देकर बताया गया कि जंगल में मृग बाँसुरी की मधुर धुन जो कि शिकारी द्वारा मृग को फँसाने के लिए बजायी जा रही है, उसे सुनकर झाड़ियों में छिपा हुआ मृग बाहर निकल आता है और उसे प्राणों की आहुति देनी पड़ती है। 50वीं गाथा में बताया कि औषधि, सुगन्धित पदार्थों की गन्ध से आसक्त हुआ सर्प, अपने बिल में से बाहर निकल आता है और सपेरे द्वारा कैद कर लिया जाता है।

63वीं गाथा में कहा कि रसनेन्द्रिय के राग में अपना भान भूलकर उस मांस अथवा आटे के टुकड़े के चक्कर में मछली काँटे को देख नहीं पाती, जैसे ही कुछ खाने के लिए लपकती है वह काँटा जो मछुआरे द्वारा पानी में डाला गया है उसके गले में फँसकर उसका प्राणान्त कर देता है।

76वीं गाथा में प्रभु जागृत कर रहे हैं कि स्पर्श के सुख, काया के राग के चक्कर में, भैंस गंदे पानी में पड़ी रहती है, उसे ध्यान नहीं रहता कि कब मगरमच्छ उसके पास आकर उसे पानी में घसीट कर काल कवलित कर देगा।

गाथा 89 में हाथी का उदाहरण देते हुए प्रभु फरमा रहें हैं कि मन या भावों का राग भी कितना खतरनाक हो सकता है। हथिनी के प्रति आकृष्ट कामगुणों में आसक्त, रागातुर हाथी विनाश को प्राप्त होता है। यों तो हाथी इतना बलशाली प्राणी है कि उसे एकाएक कैद नहीं किया जा सकता है, उसे पकड़ने के लिए शिकारी एक बड़ा और गहरा गड्ढा खोदकर उसे घास आदि से छिपा देते हैं और उसके ऊपर-कागज की हथिनी बनाकर रख देते हैं। उसे देखकर राग से ग्रसित हाथी वहाँ आता है

और स्वयं को शिकारी की कैद में करा देता है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 31वें अध्ययन की तीसरी गाथा में तो राग-द्वेष को पाप का मार्ग बता दिया है।

राग की आग है बड़ी खतरनाक,

कितनों को ही इसने कर डाला खाक।

दिखती मासूम है, पर होती बड़ी चालाक,

अपनी जीवन गाड़ी को इससे दूर ही हाँक।।

स्थानाङ्गसूत्र के दूसरे ठाणे में राग-द्वेष को कर्मों का बन्धक बताया है। इनसे दूरी ही अच्छी है। यह आगम वाणी का दर्पण राग की इस भयंकर सत्यता को दिखला रहा है। द्वेष से राग का जन्म नहीं होता, पर राग तो द्वेष को भी जन्म दे देता है। क्योंकि जिस व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति आदि पर राग होता है उस तक पहुँचने में बाधक बनने वाले जीव से द्वेष उत्पन्न हो जाता है। इन्द्रियों का ही नहीं, अपितु व्यक्ति, वस्तु, आहार, सत्ता, देह का राग भी खतरा पैदा करता है, इतिहास के कुछ उदाहरणों से समझने का प्रयास करेंगे।

वस्तु पर राग किया कोणिक की महारानी ने-अपना हिस्सा सत्ता में मिलने के बाद भी छोटे राजकुमारों के पास रहे सेचनक हाथी और हार पर राग का ऐसा ज्वार उठा कि जिसकी लहरों में महासंग्राम खड़ा कर दिया, लाखों लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई। **व्यक्ति पर राग किया रावण ने**-सीता के प्रति रागासक्त होकर राम से युद्ध लड़ने को तैयार हो गया, परिणाम लंका का विध्वंस। **एक जीव, पशु स्वर्ण मृग पर किया राग**-सीता ने लक्ष्मण रेखा लाँघ डाली। कितना विरह, दुःख सहा, अग्नि परीक्षा देनी पड़ी। **सत्ता पर राग किया कुण्डरीक ने**-मात्र कुछ दिन की सत्ता ने सातवीं नारकी में पहुँचा दिया। कौरवों के इसी राग ने महाभारत करा डाली। **धन पर राग किया सम्भूम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने**-उन्हें भी सातवीं नरक का द्वार देखना पड़ा। **नारी पर राग ने श्रेष्ठीपुत्र कपिल और सिंह गुफावासी मुनि को याचक और इलायची कुमार को नट बना दिया। आहार पर राग**

किया आचार्य मंगू ने—व्यन्तर जाति के देवों में जन्म लेना पड़ा, पूर्व भव में आहार के राग ने मुम्मण सेठ को नरक का मेहमान बना दिया। काया पर राग किया तो चण्डप्रद्योत को एक राजा होते हुए भी दासी के चोर की पट्टिका सिर पर लिखवानी पड़ी। रूप पर राग किया सनतकुमार ने। देह को 16,000 रोगों की बलि चढ़ाना पड़ा। बावड़ी पर राग किया नन्दन मणिकार ने, उन्हें तिर्यञ्च योनि (मेंढक) में पहुँचा दिया। पुत्र पर राग किया जन्मान्ध धृतराष्ट्र ने, उनको रागप्रज्ञा से भी अन्धा बनाया, परिणाम सम्पूर्ण कुल का विनाश।

इन सभी उदाहरणों से यह बात तो निश्चित रूप से सत्य प्रमाणित होती है कि राग आत्मा का अहित ही करता है। द्वेष से भी ज्यादा सावधान हमें राग से होना पड़ेगा। आगम और इतिहास के उदाहरण के बाद आज की जिन्दगी में इस राग के खेल को समझें। एक व्यक्ति पर उत्पन्न हुआ राग एक जैन बालिका को एक मांसाहारी घर की वधू बना रहा है। धन, बंगले, कार पर पैदा हुआ राग अनीति से पैसा कमाने को मजबूर कर रहा है। विदेश जाने का राग, अपने देश की मिट्टी से, अपने माता-पिता से दूर कर रहा है। स्वादिष्ट खाने का राग भक्ष्य-अभक्ष्य की रेखा लाँघ रहा है। फैशन एवं सुन्दर दिखने का राग जीव हिंसा का भी भागीदार बना रहा है। सुख-सुविधा का राग धर्म से दूर कर रहा है। ज़मीन-ज़ायदाद का राग भाई को भाई से दूर कर रहा है। अनेक भवों को बढ़ा रहा है, दुर्गति का टिकिट तैयार कर रहा है। अब इस राग के खेल को समझें और बचने का पुरुषार्थ करें। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. से सुना है कि राग से मुक्ति, भक्ति बढ़ाती है तब होता है अनुराग, अनुराग से बढ़ता है वैराग्य, वैराग्य एक दिन अवश्य बनाता है वीतराग। राग के ज़हर को जाने, समझें, इससे बचें और वीतरागता के पथ पर अग्रसर बनें।

राग को सदैव बन्धन ही समझना,

हर पल हर क्षण इससे सम्भलना।

राग-द्वेष में सम बने रहे तो,

सरल हो जाएगा सिद्ध प्रभु से मिलना।।

राग और मोह, स्नेह और मैत्री, प्रेम सब दिखने में एक से लगते हैं, परन्तु उनमें अर्श से फर्श तक का अन्तर होता है। राग और मोह का दायरा संकीर्ण होता है उसमें मात्र किसी एक या कुछ व्यक्तियों, वस्तु आदि के प्रति रतिभाव रहता है जबकि स्नेह, मैत्री, प्रेम का दायरा उदार होता है उसमें जगत् के प्रत्येक जीव के प्रति हित भावना निहित होती है।

एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय जीवों पर, स्थावर से लेकर त्रस जीवों पर, सूक्ष्म से लेकर बादर जीवों पर, पशु-पक्षी-मानव, निर्धन-धनवान, सन्नी-असन्नी प्रत्येक जीव पर हृदय में असीम स्नेह, नेत्रों में अपार करुणा, रोम-रोम में अनुकम्पाभाव, रग-रग में वात्सल्यभाव, रक्त में अनन्त संवेदना बसती है। राग में व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है, पर स्नेह-मैत्री में निःस्वार्थता का बसेरा होता है। राग में जो व्यक्ति प्रियपात्र है उसकी पीड़ा सहन नहीं होती, परन्तु स्नेह में जगत् के एक जीव की परेशानी भी विचलित कर डालती है। राग संसार में रुलाने वाला, अटकाने वाला, भटकाने वाला है। प्राणिमात्र के प्रति स्नेह संसार मिटाने वाला और मोक्ष दिलाने वाला होता है। राग किंपाक फल के समान है देखने में, सुनने में अतिसुन्दर, मनमोहक, खाने में भी रसीला, स्वादिष्ट, लेकिन परिणाम इतना घातक कि जिन्दगी का हरण कर ले। स्नेह, प्रेम, मैत्री आग्रवृक्ष की भाँति होते हैं दिखने में भी सुन्दर, हरे-भरे और खाने में भी मधुर, रसभरे। स्नेह जहाँ पसरा होता है वह घर-आँगन स्वर्ग तुल्य लगता है। निःस्वार्थ प्रेम अतीव आनन्द प्रदाता होता है। समस्त जीवों से मैत्री भयरहित बना देती है। एक रागी, दूसरे का वैरी हो सकता है पर सबका स्नेही, हितैषी कभी भी किसी का भी वैरी नहीं हो सकता। कहा भी है—मिती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई।

राग और स्नेह भले ही एक से दिखाई देते हैं, पर उनमें बहुत अन्तर होता है, उनकी भेद रेखा को ज्ञान की पैनी नज़र से ही परखा जाता है। महापुरुष इस राग का त्यागकर वैराग्य भाव में समाहित हो वीतरागता को प्राप्त हो जाते हैं और संसारी जीव इस राग के मायाजाल में

फँसकर हाथ में आए अनमोल मानव भव को कोड़ियों के भाव में बेच देते हैं। गुरु भगवन्त बार-बार प्रेरणा देते हैं, बार-बार चेताते हैं, अपने ज्ञान से राग का खेल समझाकर हम अज्ञानियों को राग के जाल से बचाने का हर सम्भव

प्रयास करते हैं तो उनकी वाणी को जीवन में उतारने का पुरुषार्थ करें ताकि राग का राक्षस हमें भटका न पाए और आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त हो सके।

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर (राज.)

माता-पिता की महिमा

डॉ. दिलीप धींग

सदा पूजनीय देवतुल्य जो, श्रद्धा के आधार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।
दुर्लभ मानव जीवन हमने, उनकी खातिर पाया है।
प्रथम गुरु वे और उन्होंने, सद्गुरु से मिलवाया है।
सद्गुरु से भी पहले जिनका, बहुत-बहुत उपकार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥1॥

जिनकी गोदी में, हाथों में; खेले, पले और बड़े हुए।
जिनके ही आशीर्वादों से, दुनिया में हम खड़े हुए।
जन्मदाता, जीवनदाता, का करते सत्कार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥2॥
बने सन्तान सुयोग्य इसी में, अपना चित्त लगाया है।
रात-रात भर जाग-जाग कर, सोया भाग्य जगाया है।
सन्तति के सुख की खातिर, झेला कष्ट अपार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥3॥

बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर,
हुआ समर्पित जिनका क्षण-क्षण।
उनके उपकारों से उपकृत,
जीवन और जगत् का कण-कण।
उनके होने से खिल उठता, घर-आँगन परिवार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥4॥

मात-पिता की त्याग-तपस्या,
क्या जानें नादान बिचारे।
देखो! उन्हें सताकर कितने,
भटक रहे किस्मत के मारे!
उन्हें तिरस्कृत करने वालों, को मिलता धिक्कार है।

नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥5॥

उसने बोला, वे ऐसे हैं; उसको मैंने बोला, देखो!
कैसे भी हैं, माँ-बाप हैं, उनका आदर करना सीखो।
उनसे ही पाया तुमने यह, जीवन झिलमिल हार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥6॥

जो नहीं मात-पिता का होता, वह कब किसका होता है?
अपने ही कन्धों पर अपना, अभिशप्त जीवन ढोता है।
हो जाते ऐसे व्यक्ति के, बन्द पुण्य के द्वार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥7॥

पूछें उनके हाल-चाल हम, बतियाएँ कुछ समय बिताएँ।
कर्ज चुकाएँ, फर्ज निभाएँ, नहीं कभी एहसान जताएँ।
उनकी आज्ञा, सेवा-भक्ति, से जीवन गुलजार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥8॥

माता-पिता हमारे कारण, कभी न लज्जित होने पाएँ।
करें साधना ऐसी हम कि, उनका मन हर्षित हो जाए।
अच्छे काम हमारे उनकी, खुशियों के आधार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥9॥

माँ ममता की मूरत है तो, पिता अनुशासन का नाम।
पावन दिल के देवालय में, दोनों ही श्रद्धा के धाम।
वात्सल्य का निर्झर हैं वे; उत्सव हैं, त्योहार हैं।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥10॥

आगम उपनिषद् रामायण, जिनका गाते गौरव-गान।
राम, कृष्ण और महावीर भी, जिनका करते थे सम्मान।
सचमुच! माता और पिता की, महिमा अपरम्पार है।
नमस्कार उन मात-पिता को, करते बारम्बार हैं।॥11॥

शोध-प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन
कॉलेज, 3, मैडले रोड, टी. नगर, चेन्नई-600017

तीर्थङ्कर का स्वरूप

श्री प्रमोद महजोत

तीर्थङ्कर जैनधर्म का एक पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ होता है, तीर्थ का कर्ता अर्थात् रचना करने वाला, स्थापना करने वाला अथवा तीर्थ का, संघ का संस्थापक।

तीर्थ की स्थापना का एकमात्र प्रयोजन है धर्म की स्थापना। हमारी आत्मा को संसार-सागर से तिराने वाला एकमात्र स्रोत धर्म (अहिंसा-सत्य आदि) ही है अतः धर्म को तीर्थ कहना शब्द शास्त्र की दृष्टि से भी उपयुक्त है। धर्म की साधना करने वाले साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका इन चारों के संयुक्त संगठन को चतुर्विध-संघ कहा जाता है इसे तीर्थ की भी संज्ञा देते हैं एवं इस धर्म तीर्थ की रचना करने वाले तीर्थङ्कर कहलाते हैं।

तीर्थङ्कर का संसार में जन्म एक असाधारण घटना होती है। अपने मनुष्य जन्म के दौरान संसार की मोह-माया का परित्याग कर, त्याग और वैराग्य की अखण्ड आत्म-साधना में रमकर अनेक कष्टों को समभाव से सहकर, पहले स्वयं सत्य की पूर्ण ज्योति का दर्शन करते हैं और फिर मानव-जगत को धर्म का उपदेश देकर उसे सत्य-पथ बतलाते हैं तथा संसार में सुख-शान्ति का आध्यात्मिक साम्राज्य स्थापित करते हैं।

जैनधर्म के अनुसार सभी प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ प्राणी है। जैन शास्त्रों में मनुष्यों को सम्बोधन करते हुये 'देवानुप्रिय' शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका भावार्थ है- 'देवों का भी प्रिय।' क्योंकि मात्र मनुष्य ही अपने भीतर विद्यमान अनन्त शक्तियों को जागृत करने की क्षमता रखता है। वह स्वयं स्वरूप की अपेक्षा सिद्ध अर्थात् ईश्वर का रूप है, परन्तु संसार की मोह-माया के कारण अपने ही कर्म-मल से छिपा हुआ है, ढका हुआ

है। अतः सम्यक् रूप से अपना प्रकाश प्रसारित नहीं कर पा रहा।

परन्तु, जैसे ही वह होश में आता है, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है, अपने स्वभाव में, आत्म गुणों में, स्थिर हो जाता है, तो धीरे-धीरे निर्मल, शुद्ध एवं स्वच्छ होता जाता है और एक दिन अनन्त ज्योति का प्रकाश प्राप्त कर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, शुद्ध, बुद्ध, परमात्मा बन जाता है। ऐसे सर्वज्ञ अरिहन्त ही परमार्थ की दृष्टि से संसार को सत्य का प्रकाश (अर्थात् ज्ञान) देते हैं और अन्त में निर्वाण प्राप्त कर मोक्ष-दशा में सदा काल के लिए अजर-अमर-अविनाशी सिद्ध अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं।

अतः तीर्थङ्कर भी जन्मापेक्षया साधारण मनुष्य होते हैं। वे कोई दैव सृष्टि के प्राणी, ईश्वर, अवतार या ईश्वर के अंश जैसे कुछ नहीं होते, पर वे अपने राग-द्वेष को क्षय कर, पूर्ण रूप से वीतराग भाव का सम्पादन करके सर्वज्ञता-सर्वदर्शीपना प्राप्त कर तीर्थङ्कर पद को प्राप्त कर सकते हैं।

संसार में अनन्त आत्माएँ केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्राप्त कर मुक्त हुई हैं। सामान्य केवली तथा तीर्थङ्कर का ज्ञान बल समान होता है। जो कुछ भेद है वह धर्म-प्रचार की मौलिक दृष्टि का एवं अन्य अदभुत अतिशयों का है। तीर्थङ्कर तीर्थ के संस्थापक होते हैं, वे अपने अद्वितीय तेज-बल से अज्ञान एवं अन्धविश्वासों के अन्धकार को समाप्त कर मानव-संसार की कायापलट कर देते हैं। तीर्थङ्कर का शरीर पूर्ण स्वस्थ एवं निर्मल रहता है। उनकी उपस्थिति में प्राकृतिक उपद्रव जैसे-सूखा, अति बारिश, भूकम्प तथा महामारी आदि नहीं होते। हिंसक और क्रूर प्राणी भी

उनके उपदेश श्रवण कर शान्त हो जाते हैं। उनकी भाषा का अतिशय होता है कि जगत् के सभी प्राणी उनकी दिव्यवाणी का भावार्थ समझ लेते हैं।

इस प्रकार तीर्थङ्कर चौतीस अतिशय और पैंतीस वाणी के अतिशय (सिद्धियों) के स्वामी होते हैं। 34 अतिशयों में जन्म से चार अतिशय होते हैं, पन्द्रह अतिशय देवकृत होते हैं तथा शेष 15 अतिशय केवलज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् उपलब्ध होते हैं। जबकि सामान्य केवली के रूप में मुक्त होने वाली आत्माओं में ये अतिशय नहीं होते। तीर्थङ्करों को गर्भ से ही तीन ज्ञान प्राप्त होते हैं (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान) तथा मुनि दीक्षा ग्रहण करते ही चौथा ज्ञान (मनःपर्यव ज्ञान) प्रकट हो जाता है।

सामान्य केवली अपना अन्तिम लक्ष्य अवश्य प्राप्त कर लेते हैं, पर शासन की दृष्टि से जनता पर अपना चिरस्थायी आध्यात्मिक प्रभाव जमाने में संलग्न नहीं होते। ये खास विशेषताएँ हैं, जो तीर्थङ्कर और सामान्य केवली में भेद करती हैं।

तीर्थङ्कर पुरुषों में उत्तम होते हैं। उनका बाह्य और आन्तरिक परिवेश अनूठा होता है, अतः उन्हें

पुरुषोत्तम की संज्ञा दी गई है। उनके दिव्य शरीर में एक-से-एक उत्तम एक हजार आठ लक्षण होते हैं, यह उनका बाह्य ऐश्वर्य है। तीर्थङ्कर देव, अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त वीर्य (शक्ति) के धारी होते हैं। यह उनका आन्तरिक वैभव है।

तीर्थङ्कर पूर्ण वीतरागी होते हैं। अतः उनकी प्रत्येक प्रवृत्ति केवल करुणा भाव से होती है। उनकी जन कल्याण की श्रेष्ठ भावना ही धर्म प्रचार के मूल में निहित है और कुछ नहीं। तीर्थङ्कर भगवान महावीर केवल ज्ञान पाने के बाद तीस वर्ष तक निष्काम भाव से जन-जन को बोध देते रहे, जबकि उनका अपना आध्यात्मिक विकास हो चुका था और कुछ भी साधना शेष नहीं रही थी, फिर भी विश्व-कल्याण की भावना से जीवन के अन्तिम क्षण तक जन-जन को सन्मार्ग का उपदेश देते रहे।

अतः तीर्थङ्कर सिर्फ एक व्यक्ति नहीं रहते, बल्कि विश्वमय बन जाते हैं। जिनका चिन्तन विश्व-हित का होता है, वे ही सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, तीर्थङ्कर होते हैं।

-स्री 345, हंसमार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017
(राजस्थान)

लक्ष्य रहे सदा वीतरागता का

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

दुनिया में लगी है होड़
अर्थ के पीछे है सारी दौड़
रिश्ते तक को देते हैं तोड़
जीवन का कैसा है यह मोड़ ?
छोटी-छोटी बातों से
हो जाता है मनमुटाव।
भ्रान्तियों से है भटकाव
बढ़ रहा है आपसी दुर्भाव
सौहार्द का है अभाव।
बने कैसे बिगड़ी बात

निभना-निभाना है कला
निभाना जानें हम सदा
मान-अभिमान को दें गला
अपना भला, सबका भला
संकल्प बने सदा जागता
कषाय दूर रहे भागता
समता रस का बना रहे स्वाद सदा
लक्ष्य रहे सदा वीतरागता का
सद्गुरु से मिलता रहे सद्ज्ञान सदा
तब मुक्ति रहे क्यों दूर भला ?

-‘हुकम’ 5 ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-
342008 (राज.)

अनमोल मोती (6)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

81. स्वरूप प्राप्ति का नाम अमृत है। जो अमृत जैसा दिखने वाला तत्त्व स्वयं नष्ट हो जाए तथा दूसरों को अमर बनाये वह असली अमृत नहीं हो सकता। अमृत तो खुद भी अमरत्व गुण युक्त होता है।
82. दान देकर यदि उसमें अहंकार किया तो पुण्य का नहीं बल्कि पाप का बन्ध है।
83. सुनने और सुनाने के पश्चात् जीवन में न उतरे तो ज्ञानीजनों ने उस श्रोता को श्रवण विलास और उस वक्ता को वाणी विलास वाला कहा है।
84. दुःखी जीव को बचाने का पुरुषार्थ करना अपने आत्मभावों का पालन करना है, जबकि उस जीव का बचना उसके स्वयं के पुण्य-पाप पर आधारित होता है।
85. अभाव की स्थिति हो या अपराध की स्थिति, हर स्थिति में साधर्मिक को ऊपर उठाने का कार्य प्रत्येक धर्मी का है।
86. सम्यग्ज्ञान का अंश जहाँ प्रकट हुआ, वह एक दिन पूर्ण ज्ञान को अवश्य प्राप्त करा देगा, यह नियम है। जैसे दूज के चाँद में पूनम का चाँद बनने की क्षमता निहित है।
87. ज्ञानीजन व्यवहार कार्यों में अनासक्ति रखते हैं यानी सोते हैं और अन्दर में जागते हैं। अज्ञानी व्यवहार कार्यों में आसक्ति रखते हैं यानी जागते हैं और अन्दर में सोते हैं।
88. धर्म के अनुरूप जो क्रिया होती है उसे व्यवहार धर्म कहा जाता है।
89. राग 'पर निमित्त' से होता है, ज्ञान को 'पर निमित्त' की आवश्यकता नहीं। जहाँ राग हावी हो वहाँ ज्ञान को आगे रखने का नाम ही मोक्षमार्ग है।
90. जहाँ-जहाँ कीचड़ होगा वहाँ-वहाँ पानी अवश्य होगा ही, लेकिन जहाँ पानी होगा वहाँ कीचड़ होना आवश्यक नहीं। वैसे ही जहाँ-जहाँ राग-द्वेष है वहाँ-वहाँ आत्मा होगी ही, लेकिन जहाँ-जहाँ आत्मा है वहाँ-वहाँ राग-द्वेष होना आवश्यक नहीं।
91. अज्ञानी दूसरे की आँखों का (अन्य की दृष्टि में जँचू) तथा अपने कानों का (अपनी प्रशंसा सुनूँ) गुलाम बना रहता है। साधना के सोपान पर चढ़ते समय इन पर विजय पाना जरूरी है।
92. लोभी चाहे धन, कामी चाहे तन, भूखा चाहे अन्न और जिज्ञासु चाहे अध्ययन।
93. सदाचार की भूमिका बिना सम्यग्दर्शन, तीन काल में सम्भव नहीं।
94. जैसे दूध के साथ रहा हुआ पानी दूध के साथ ही मापा जाता है वैसे ही निश्चय धर्म के साथ रहा हुआ व्यवहार धर्म भी धर्म नाम का उपनाम पाता है, अन्यथा व्यवहाराभास है।
95. अतीत की प्रतीति, भविष्य की कल्पना और वर्तमान का व्यामोह जीव को आगे बढ़ने नहीं देता।
96. जैसे पानी में प्यास बुझाने की क्षमता है, लेकिन बुझाता उसी की है जो पीता है वैसे ही धर्म में दुःख दूर करने की क्षमता है, लेकिन जो धारण करता है सिर्फ उसी के।
97. संसार में परिवार की सम्पत्ति पुत्र को प्राप्त होती है, वैसे ही परमार्थ की प्राप्ति के लिए सुपात्र बनना आवश्यक है।
98. काले रंग वाला मोक्ष जा सकता है, लेकिन काले परिणाम वाला कभी भी नहीं।
99. शाश्वत सत्य कहने वाले बदल सकते हैं, लेकिन शाश्वत सत्य नहीं।



क्षमा का अमृत

श्री पदमचन्द्र गाँधी

क्षमा जीवन का अमृत है। क्षमा मैत्री का प्रथम सोपान है। क्षमा आत्म शुद्धि का द्वार है, जिसके द्वारा कटुता, वैमन्यस्य, राग, द्वेष मिटा कर आत्मा को शुद्ध, पवित्र एवं निर्मल बनाया जा सकता है। मनुस्मृति 6.33 में धर्म के दस लक्षणों में क्षमा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। क्षमा कषाय मुक्ति की परम औषधि है। क्रोध को क्षमा के द्वारा शान्त किया जा सकता है। क्षमा अर्थात् सहनशील होना और क्रोध पैदा न होने देना तथा उत्पन्न क्रोध को विवेक से निष्फल कर देना।

‘क्षमा वीरस्य भूषणम्’ अर्थात् क्षमा वीर का आभूषण है। जो शक्तिशाली होकर सहनशीलता रखता है तथा किसी तरह का प्रतिकार न करते हुए क्षमा कर देता है, वह शूरवीर है। क्षमा आन्तरिक शत्रुओं को जीतने की खड्ग है, पवित्र आचार है और रक्षा करने का बख्तर है। शुद्ध भावों से असह्य दुःख में परिणामों से क्षमा रखने वाला मनुष्य भव सागर तिर जाता है। क्षमा भावना में वह शक्ति निहित है, जिसमें मनुष्य को परम पावन जीवन-जीने की सुखद राह प्राप्त होती है। क्षमा ही वह अलौकिक तत्त्व है, जिससे जीवन में मृदुता आती है, सद्भावना का सञ्चार होता है, पारस्परिक कटुता मिटती है तथा मैत्री भावना का विकास होता है।

क्षमा मानवीय गुण—क्षमा मानवीय गुण है, इसलिए विश्व के सभी धर्मों में इस गुण की प्रतिष्ठा है। क्षमा आत्म स्वतन्त्रता की रणभेरी है। इससे जीवन का कोई भी संघर्ष जीता जा सकता है, इससे निजी शक्ति एवं साहस का ज्ञान होता है। एक छोटा सा शब्द ‘सॉरी’ बोलने से सामने वाले का पचास प्रतिशत गुस्सा शान्त हो जाता है और यदि मुस्कुरा कर प्रेम एवं विनम्रता से बोले तो गुस्सा पूरा शान्त हो जाता है।

बर्टेण्ड रसेल ने कहा—“वह मनुष्य सुखी है जो

अन्य पुरुषों के साथ अपने सम्बन्धों को न तो अचानक तोड़ देता है और न उनमें विषैलापन उत्पन्न होने देता है।” इस प्रकार क्षमा जीवन का अमृत है। अलेक्जेंडर पोप ने कहा—“गलती करना मानवीय कार्य है और क्षमा करना ईश्वरीय। मानव की महानता क्षमा करने में है।” सन्त तुकाराम ने कहा—“जिस भक्त के हाथ में क्षमा रूपी शस्त्र है, उसका दुष्ट भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यदि दावाग्नि में तृण न पड़े तो वह स्वयं ही बुझ जायेगी।” गुरु गोविन्द सिंह ने तो यहाँ तक कहा—“कोई कमजोर तुम्हारा अपमान करे तो तुम उसे क्षमा कर दो। यही तुम्हारी वीरता है।” कुरान सरीफ 3/114 में हजरत मुहम्मद पैगम्बर ने स्पष्ट किया—“क्षमायाचना का मूल उद्देश्य है भाव शुद्धि। इससे आत्मा मलरहित होती है। जो गुस्सा पीकर लोगों को माफ कर देते हैं, अल्लाह ऐसी नेकी करने वालों को प्यार करते हैं।” महात्मा गाँधी ने कहा—“दण्ड देने की शक्ति होने पर भी दण्ड नहीं देना सच्ची क्षमा है।” ईसामसीह ने क्रोस पर लटकते समय क्षमा का सन्देश देते हुए कहा—“हे प्रभो! इन्हें क्षमा करना, ये अज्ञानी नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।” प्रभु महावीर ने कहा—“जे कम्मे सूरा, ते धम्मे सूरा” अर्थात् जो कर्म में शूर हैं वे धर्म में शूर हैं। अर्जुनमाली, गजसुकुमाल आदि अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने क्षमा के द्वारा मुक्ति पायी है।

सुनने में आता है जो अमृत को पी लेता है, वह अमर हो जाता है, अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। जैनदर्शन ऐसा नहीं कहता है, क्योंकि जिसने जन्म लिया है वह मृत्यु को वरण करता ही है। लेकिन यह सत्य है, जिसने क्षमा का अमृत पिया है वह निश्चित रूप से अमर हो जाता है, जन्म मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। जिसकी आत्मा निर्मल होती है, पवित्र होती है वही क्षमा

के गुणों को अपनाता है तथा क्षमा के अमृत के स्वाद को चखता है। अतः स्पष्ट है क्षमा ही अमरत्व की औषधि है और अमर बनने का मन्त्र भी। आज देखने में आता है कि क्षमा तो माँगी पर 'क्षार' गया नहीं, क्योंकि हम केवल शब्दों से क्षमा माँगते हैं, हृदय एवं अन्तर्मन से नहीं। संवेदनाओं के साथ सरलता से नहीं माँगते। लेकिन यह सच है कि हृदय से माँगी गयी क्षमा अमृत है। क्षमा में दूसरों की कमियों को तथा भूलों को देखने का स्थान नहीं होता, केवल स्नेह और मैत्री भाव होता है। जहाँ मैत्रीभाव होता है वहाँ कोई शत्रु नहीं होता, लेकिन जीवन में 'खार' जब तक होता है तब तक कुटिलता एवं मलिनता रहती है। अतः अनुभवी ने कहा है—“हे जीव तूने क्षमा माँगी, फिर भी मन में खार रूपी राग-द्वेष हैं, कषाय हैं तो सच्ची क्षमा नहीं है। तुझे यह क्षमापना का सुनहरा अवसर मिला है। सभी जीवों के साथ मैत्री भाव रखने का साहस प्राप्त हुआ है। लेकिन फिर भी हृदय में क्रोध की ज्वाला का शमन नहीं हुआ। क्षमा की सच्ची रीत को नहीं समझा यह तेरा दुर्भाग्य है।” इस प्रकार वास्तव में जिस प्रकार क्षमा माँगनी है, वहाँ तक हम पहुँच नहीं पाते, क्योंकि हमारा अभिमान बीच में दीवार बन जाता है। आपसी रज्जिश, दुश्मनी बीच में आ जाती है तथा मैत्रीभाव नदारद हो जाता है। अतः हे देवानुप्रिय! क्षमा का अमृत तो तभी सिद्ध होगा, जब दवा पीए और दर्दी का दर्द मिट जाये अर्थात् आत्मा का क्षार-क्षीण हो जाये या गल जाय।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।

मिन्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं ण केणई।।

यह गाथा तीन बातें सिद्ध करती है—

1. क्षमा का दान स्वयं अपने अन्तर्हृदय से दो। इसमें कोई शर्त एवं अपेक्षा नहीं हो।
2. सभी जीव मुझे क्षमा करें, लेकिन जरूरी नहीं कि वे मुझे क्षमा करेंगे। हम केवल याचना करते हैं, उन पर दबाव नहीं बनाते तथा न कोई शर्त एवं स्वार्थ रखते हैं। यदि ऐसा होता है तो क्षमा केवल औपचारिक होती है।

3. जगत् के सभी प्राणी मेरे मित्र हैं यह बात निःस्वार्थ भाव से ग्रहण करनी है और जब जगत् के सभी मित्र होते हैं तब किसी से वैरभाव नहीं होता है और शत्रुरहित बनना स्वतः सिद्ध हो जाता है।

क्षमाशील बनना एक प्रक्रिया है—क्षमा की पात्रता के लिए सतत साधना की आवश्यकता होती है। इसकी प्रक्रिया को अपनाना पड़ता है। क्षमा करना एवं क्षमा माँगने का भावनात्मक सम्बन्ध होता है, जिसका परिणाम कषाय मुक्त होना है। क्षमाशील बनने के लिए स्वाध्याय, दर्शनविशुद्धि, ध्यान आदि के साथ अनित्य, अशरण आदि बारह भावना एवं मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ भावना आदि इन सभी प्रकार की भावनाओं के साथ प्रार्थनाओं का नियमित अभ्यास करना एवं कराना आवश्यक है। ऐसा करने से भीतर में व्याप्त क्रोध, मान, माया और लोभ कषायों की मन्दता से क्षमा धर्म उत्पन्न होता है। विचारों में उदारता एवं विशालता पनपती है। वैर को नष्ट करने की भावपूर्ण क्रिया की जाती है, वही सच्ची क्षमापना है।

क्षमा साधना के उपाय—क्षमा के अमृत से अन्तर्मन की क्रोध अग्नि को शान्त किया जा सकता है। इसके लिए क्रोध के निमित्त कारणों को खोजना तथा की हुई गलतियों एवं भूलों पर ध्यान देना होगा। दोष निमित्त को नहीं स्वयं को दें। यह सोचें—दोष मेरा है, भूल मेरी है, मैं ही निमित्त हूँ। यदि ऐसा सोचेंगे तो क्रोध का निग्रह होगा। क्रोध रूपी कषाय को जीतने के लिए सरल बनना होगा, बाल स्वभाव का चिन्तन करना होगा। इससे हमारे भीतर में ग्रन्थियाँ उत्पन्न नहीं होंगी। इसलिए गलतियों को नज़रअन्दाज करना भी लाभदायक बन जायेगा। यदि आपसे कोई गलती हो भी गई हो तो यह समझने का प्रयास करें कि मेरे पूर्वकृत कर्म थे जो उदय में आये हैं ऐसा समझने से मन में सरलता प्रकट होगी। क्षमा साधना के लिए सोचें—‘क्षमा धारण करने से चित्त स्वस्थ रहता है। अतः तू क्षमा धारण कर। क्षमा अमृत की धारा है जो क्रोध के विष को समाप्त कर देती है। क्षमा रूपी शस्त्र जिसके हाथ में है, दुर्जन उसका कुछ भी नहीं

बिगाड़ सकते। क्षमा अन्तःकरण के ताप को शान्त करती है। इस प्रकार क्षमा के गुणों का चिन्तन करने से हृदय एवं मन शान्त होता है।

इस प्रकार क्षमा का अमृत जब बरसता है तो क्रोध की अग्नि तो शान्त होती ही है, साथ में सर्वत्र मैत्री भी नज़र आती है क्योंकि जहाँ क्षमा है वहाँ शत्रु का उदय नहीं हो सकता। क्षमा से चित्त में प्रसन्नता आती है, आत्मा विशुद्ध बनती है, निर्मल बनती है। इस प्रकार

क्षमा का अमृत स्पष्ट करता है कि-

वैर बन्धन है, स्नेह सन्धि है। वैर में विकृति है, स्नेह में संस्कृति है। वैर में भँवर है, स्नेह में कमल है। वैर में विलाप है, स्नेह में मिलाप है। वैर में विसर्जन है, स्नेह में सर्जन है। अतः जो क्षमा के अमृत का पान करता है, निश्चित रूप से मोक्षगामी बनता है। इसलिए हम क्षमा के गुणों को अपना कर क्षमाशील एवं धीर-गम्भीर बनें।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

माँ का आशीर्वाद

श्री मंगलचन्द्र टाटिया

माँ संसार का सबसे खूबसूरत शब्द है। विश्व के सारे शब्द कोषों में माँ या मदर से ज्यादा प्यारा शब्द कोई नहीं है। माँ तो बीज की तरह छोटा शब्द है और बरगद की तरह विशाल है। माँ अपने आप में संसार का सम्पूर्ण शास्त्र है। जिसमें दुनिया भर के सारे शास्त्र और उसका सत्य आकर समाहित हो जाते हैं। माँ अपने आप में संसार का सम्पूर्ण शास्त्र है। जिसमें दुनिया भर के सारे शास्त्र और उसका सत्य आकर समाहित हो जाते हैं। माँ अपने आप में मज़हबों का मज़हब है जिसमें विश्व के सारे पन्थ और परम्पराएँ आकर सुख और सुकून बयाँ करती हैं। माँ तो ममता का महाकाव्य है।

माँ ममता का महाकाव्य है

त्याग का महायज्ञ है, माँ से

ही जीवन की शुरूआत है और

माँ ही हर दुःख दर्द की दवा है

माँ ही मन्दिर, माँ ही पूजा की थाली

बिन माँ के जीवन ऐसा ज्यों बगिया बिना माली

स्वामी विवेकानन्द अमेरिका जाने के पूर्व अपनी ममतामयी माँ शारदाजी से आशीर्वाद लेने गये और कहा-“माँ मैं अमेरिका जा रहा हूँ। आपका आशीर्वाद मुझे चाहिये।” माँ ने अनसुनी कर दी।

फिर स्वामीजी ने माँ से कुछ कहा। थोड़ी देर बाद माँ ने स्वामीजी से कहा मेरे कमरे में एक चाकू पड़ा है। उसे लेकर आओ, चाकू लाकर स्वामीजी ने अपनी माँ को दे दिया। पर आशीर्वाद में चाकू का क्या सम्बन्ध? चाकू प्राप्त करते ही माँ ने आशीर्वाद की झड़ी लगा दी। स्वामीजी अचरज में पड़ गये। चाकू और आशीर्वाद का क्या तात्पर्य। माँ ने मुस्कराते हुए जवाब दिया बेटा-“जब मैंने तुमसे चाकू माँगा तो तुम चाकू का अगला भाग तो अपने हाथ में पकड़े रहे और दूसरी तरफ से चाकू मुझे थमा दिया। मैं समझ गयी कि तुम समस्त बुराइयों को अपने पास रखकर मानव जाति की भलाई करने में आनन्द का अनुभव करते हो। अतः मैं हृदय में अन्तर्मन से तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ।

माँ के प्यारे शब्दों को सुनकर स्वामीजी गद्गद् हो गये और प्रसन्नता का अनुभव करने लगे और माँ से कहा कि मैंने ऐसा सोचा भी नहीं था कि चाकू का फलक इस कारण से मैं पकड़ रहा हूँ जिससे आपको कहीं चोट न लगे। यह सुनकर माँ को बड़ी प्रसन्नता हुई और कहा-जहाँ जाओगे, सफलता तुम्हारे साथ रहेगी। तुम्हारे स्वभाव में दया, करुणा का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। राग और द्वेषों से सदा तुम दूर रहोगे। एक दिन अवश्य तुम महान् सन्त बनकर भारतीय संस्कृति का परचम विश्व में फहराओगे। ऐसे महान् उपकारी विश्व सन्त की माँ पर हमें गर्व है।

-81, ए.पी.आर. कॉलोनी, कटंगा, जबलपुर

अहंकारी नहीं, संस्कारी बनें

श्री गौतम पारख

एक आलेख के शीर्षक 'अहंकार का अन्धियारा' पर मेरा ध्यान टिक गया। मैं सोचने लगा कि अहंकार न तो अन्धियारे का आभास होने देता है और न ही स्वीकारने देता है। अहंकार तो 'मैं' को ही पुष्ट करता है। पुण्यवानी से प्राप्त शक्ति, सामर्थ्य और उपलब्धि पर इतराने, इठलाने और अकड़ने का दूसरा नाम ही तो अहंकार है। सम्यक् चिन्तन, सम्यक् पराक्रम और अनासक्त भावों से प्राप्त सफलता कभी अकड़ती नहीं, इतराती नहीं, इठलाती नहीं। अहंकारी व्यक्ति को पुण्यवानी के योग से सफलता तो मिल जाती है, परन्तु सत्य पर कोहरा छा जाता है फिर भी उसे लगता है कि मैं ही शक्तिमान हूँ। मेरा निर्णय उचित और लाभदायी रहा। भीड़ मेरे पीछे खड़ी है। प्रशंसक मेरी परिक्रमा कर रहे हैं। सत्य यह है कि जिन्हें वह प्रशंसक समझ रहा है वे तो केवल और केवल उगते सूरज को नमन करने वाले लोग हैं। वास्तव में जी हजुरी करने वालों की फौज प्रशंसकों का नहीं चापलूसों का कुनबा है। उसका अहंकार पुष्ट होने लगता है। 'मैं', 'मैं', 'मेरा, मेरा' फुँकार लगाने लगता है। भाग्योदय से प्राप्त पुण्यवानी से मानो वह पापों की गठरी बाँध रहा हो। परन्तु विडम्बना यह है कि उसका अहंकार यह एहसास, उसे होने नहीं देता, बल्कि उसके अभिमान का पोषण करने लगता है।

कभी-कभी स्वीकार भाव, आत्मा के किसी कोने से अहंकारी को समझाने लगता है। अन्दर से आवाज आती है- 'रुक जा, तेरा अहंकार तुझे ही ले डूबेगा।' कदाचित् अन्तर आत्मा की आवाज उसे सुनाई भी देती है तो वह सुनकर भी उसे अनसुना कर देता है। संस्कृत में मैं को अहम् कहते हैं। मानो अहंकारी व्यक्ति अहम् की कार में बैठकर यात्रा कर रहा हो। वह सोचता है कि मैं कितनी आरामप्रद, ऊँची, सुविधायुक्त कार में

सफर कर रहा हूँ। लेकिन भूल जाता है कि वह यदि ब्रेक मारने की कला नहीं सीख पाया तो कार को दुर्घटनाग्रस्त होने में समय भी नहीं लगेगा। कहते हैं कि अहंकार के अन्धे व्यक्ति को न तो अपनी गलतियाँ दिखती हैं और न ही दूसरे इन्सानों की अच्छी बातें। ज़िन्दगी में कभी भी अपने हुनर, सफलता, सम्पन्नता का घमण्ड मत करना, क्योंकि पत्थर जब पानी में गिरता है तो अपने ही वजन से डूब जाता है।

सत्संग सभा में सुना हुआ एक प्रसङ्ग मेरे स्मृतिपटल पर उभरकर आ गया। स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के दो शिष्य कई विद्याओं में निपुण थे। दोनों को शास्त्रों का भी विशद ज्ञान था। दोनों को अपनी अपनी विद्वत्ता पर कुछ अधिक ही नाज़ था। कभी-कभी दोनों का अहंकार फुफकारने लगता था। संयोगवश, दोनों किसी बात पर आपस में भिड़ गए। एक-दूसरे से कहने लगे कि मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ, मेरी विद्वत्ता को कोई चुनौती नहीं दे सकता। अन्त में, दोनों का अहंकार टकराने लगा। किसी वृद्ध सन्त ने उन्हें गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के पास जाकर समाधान करने का प्रस्ताव रखा। दोनों गुरुदेव के पास उपस्थित हुये। अपनी-अपनी विद्याओं, कलाओं और शास्त्रीय ज्ञान का विवरण देने लगे। स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी भी असमञ्जस में पड़ गये। दोनों ही मेरे होनहार शिष्य हैं। वे मन ही मन सोचने लगे कि इन्हें अहंकार के सर्प ने डस लिया है। अन्त में उन्होंने मुस्कराते हुये कहा कि जो दूसरों को ज्ञानी समझता है, जो दूसरों का सम्मान करता है, जो दूसरों से सीखने, जानने का जुनून रखता है, वही विद्वान् कहलाता है। दोनों शिष्यों की आँखे खुल गईं। अहंकार का नशा उतर गया। गुरुदेव के समक्ष ही दोनों एक-दूसरे को सम्मान देने लगे। एक-दूसरे की विद्वत्ता

को प्रणाम करने लगे।

मैं सोचने लगा कि विनय ही सभी धर्मों का प्राण है। झुकना, नमना ही तो हमारी संस्कृति की पहचान है। विनय, विनय बना रहे, कदाचित् विनय, चापलूसी का स्थान लेने लगे, तो समझना चाहिये कि चापलूसी करने वाला एक दिन खुद भी डूबेगा और हमें भी डुबायेगा। अहंकार और संस्कार में फर्क यह है कि अहंकारी दूसरों को झुकाकर खुश होता है, संस्कारी स्वयं झुक जाता है।

स्वाध्याय के क्षणों में पढ़ा हुआ एक काल्पनिक प्रसङ्ग स्मृतिपटल पर सहज ही उभरकर आ गया। एक गाँव में एक मूर्तिकार रहता था। वह मूर्तियाँ बनाता था। मूर्तियों को देखकर हर किसी को मूर्तियों के जीवन्त होने का भ्रम हो जाता था। आसपास के सभी गाँवों में उसकी प्रसिद्धि थी। मूर्तियों को खरीदने वालों को उससे अग्रिम बुकिंग करानी पड़ती थी। उसे अपनी कलाकारी और सफलता पर अहंकार हो गया था। समय बीतता गया। मूर्तिकार वृद्ध हो गया। उसे अहसास होने लगा कि मृत्यु उसके निकट खड़ी है। उसने अपने ही समान दस मूर्तियाँ बनाईं। मूर्तियों को देखने से लगता था कि मानो मूर्तिकार साक्षात् खड़ा है। उन्हीं दस मूर्तियों के बीच वह भी उसी मुद्रा में जाकर खड़ा हो गया। मृत्यु का समय आया। काल्पनिक कथानक के अनुसार यमराज स्वयं उसे लेने आये। वे भी मूर्तियों की एकरूपता एवं साक्षात् जीवन्तता को देखकर, आश्चर्यचकित रह गये। इनमें मूर्तिकार वास्तव में कौन है पहचानना उसके लिए कठिन हो गया। मृत्यु का समय टाला नहीं जा सकता। यमराज ने एक युक्ति लगाई। वे जानते थे कि मानव के स्वभाव

में सबसे बड़ा दुर्गुण है अहंकार। यमराज ने कहा— मूर्तिकार ने अद्भुत, अविश्वसनीय, साक्षात् मूर्तियाँ बनाई हैं, परन्तु उसने इनमें एक कमी रख दी। काश मूर्तिकार मेरे सामने होता तो मैं बतलाता कि कहाँ चूक हो गई, कमी रह गई। यह सुनते ही मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा। सोचने लगा चूक, वह भी मुझसे हो गई? ऐसा हो ही नहीं सकता और तत्काल बोल उठा—गलती कहाँ रह गई? यमराज ने भी तत्काल उसे उठा लिया और कहने लगे कि मूर्तियाँ बोल नहीं सकती। तुम्हारे अहंकार ने तुम्हें बोलने हेतु विवश कर दिया। यह तो रूपक मात्र है, जैन धर्मानुसार तो कर्म के अनुसार ही एक भव से दूसरे भव में काल करके जाया जाता है। लेकिन यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए रूपक बताया है कि अहंकारी को अपनी प्रशंसा सुनने की अति इच्छा रहती है।

किसी भी क्षेत्र में अपने आप को पूर्ण समझ लेना। मेरे जैसा कोई नहीं हो सकता, ऐसा सोचना ही जीवन की सबसे बड़ी भूल है। कहावत भी है कि—

“अहंकार में तीन गये, धन, वैभव और वंश।

न मानो तो देख लो रावण, कौरव और कंस।”

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो! खुद पर किया गया गर्व, अहंकार होता है और दूसरों पर किया गया गर्व सम्मान होता है। अतः हमें दूसरों से सीखने, दूसरों को सम्मान देने, दूसरों से प्रेरणा लेने का महामन्त्र सिखा देना। अहंकार आते ही अन्धकार छाने लगता है। हे प्रभो! हमें अहंकार के अन्धियारे से निकालकर आत्मचिन्तन के उजाले में जाने का सामर्थ्य देना।

बम विस्फोट

श्री निपुण डागर

हे आत्मन! तू अब तक क्यों सोया है
जाग! जाग! ये वक्त नहीं है सोने का,
ये वक्त नहीं है मनुज जन्म खोने का,
ये वक्त! ये वक्त है कुछ कर दिखाने का,
भीतर के निज ज्ञान को प्रकटाने का,

उठो! उठो! कर दिखाओ इस बार कुछ ऐसा कि,
मोह की नींद से अब सम्यक् सवेरा हो,
एक बम विस्फोट हो जिससे ये रूह काँप जाए,
चितरे-चितरे कर इस शरीर की असलियत दिखा जाए
गूँज हो इतनी तेज की आत्म-स्पन्दन का आस्वादन हो जाये
‘मैं’ मर जाऊँ और मैं का सच्चा जन्म हो जाये॥

—बी 13, सेटी कॉलोनी, जयपुर-302004 (राज.)

शराब और अन्य नशे से बचें

सुश्री वृद्धि ढङ्गा

नशा कोई भी हो, खराब होता है। नशे में व्यक्ति को कुछ ध्यान नहीं रहता, वह अपना होश खो बैठता है। उसका व्यवहार सामान्य नहीं रहता। नशा करते समय तो वह उसका आनन्द लेता है। लेकिन उसका यह आनन्द तीन पीढ़ियों को खराब कर देता है, क्योंकि बच्चे बड़ों का अनुसरण करते हैं।

शराब से शारीरिक, मानसिक और नैतिक पतन होता है। पीने वाले को शुरू में तो ताज़गी महसूस होती है, लेकिन इसकी लत लग जाने के बाद जैसे-जैसे शराब की मात्रा बढ़ती है, चेहरा स्थाई रूप से काला पड़ने लगता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक शराब सेवन से अवसाद, बेचैनी, लीवर सिरोसिस, पेनक्रियाटाइटिस, आत्महत्या की प्रवृत्ति, हिंसा और दुर्घटना जैसे मामले बढ़ जाते हैं। प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है। घर की आर्थिक स्थिति और जिम्मेदारियाँ प्रभावित होती हैं।

यह सब जानते हुए भी नशा करने वालों की संख्या खतरनाक रूप से बढ़ती जा रही है। शुरू में शहर की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में शराब की खपत ज्यादा थी, लेकिन अब पढ़े-लिखे शहरी की दिनचर्या का भी यह हिस्सा बन गई है। वे इसे स्टेटस सिम्बल मानने लगे हैं। इसे स्वयं पीने और मेहमानों की आवभगत करने में अपनी शान समझते हैं। पीने-पिलाने की पार्टियाँ होती हैं। युवाओं को तो कौन समझाएगा, जब उनके परिवार के बुजुर्ग ही इस नशे में लिप्त हैं। भारत में करीब 16 करोड़ लोग शराब का सेवन करते हैं। इनमें 95 प्रतिशत पुरुष हैं, जिनकी आयु 18 से 49 के बीच है। देश में हर साल अरबों लीटर शराब की खपत होती है।

प्रश्न यह उठता है कि शराब की बिक्री पर सरकार

प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाती? कहने को भारत में बिहार, गुजरात, लक्षद्वीप, मणिपुर, मिजोरम और नागालैण्ड में शराब प्रतिबन्धित है और शराब बिक्री पर सख्त सजा का प्रावधान है। गैरकानूनी तरीके से शराब बेचने पर 10 साल की सजा और 5 लाख रुपये का जुर्माना है। पर अफ़सोस की बात है कि पिछले दिनों शराब बन्दी वाले राज्य गुजरात में ही ज़हरीली शराब से अनेक लोगों की मृत्यु हो गई और कइयों की हालत गम्भीर हो गई। जिन राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में शराब बन्दी नहीं है, वहाँ शराब को जीएसटी से बाहर रखा गया है। राज्य सरकारें अपने-अपने हिसाब से शराब पर टैक्स लगाती हैं, कमाती हैं और अपना खर्चा चलाती हैं।

ऐसे में यही एक उपाय है कि शराब सेवन के खिलाफ अभियान चलाए जाएँ। लोगों को इसके दुष्परिणाम समझाए जाएँ। उन्हें बताया जाए कि अपने जीवन को बरबाद होने से बचाने का यही उपाय है कि वे शराब तथा अन्य नशे को छोड़कर अच्छा जीवन अपनाएँ। अनन्त पुण्यवानी से जो यह मनुष्य जीवन मिला है, उसे सार्थक बनाएँ। शराब की लत वाले लोगों की सज़्जति न करें। अपनी दिनचर्या बदलें। सूर्योदय से पहले उठें। प्रकृति का आनन्द लें। बड़ों को प्रणाम करें। योग करें। अच्छा साहित्य पढ़ें। अच्छा खाएँ। इससे तन और मन दोनों प्रसन्न रहेंगे। यह भी सन्तोष रहेगा कि मैंने अच्छा काम किया है। समाज में इज्जत भी बनेगी। आर्ये, हम सब नशे का बहिष्कार करें और मनुष्य जन्म को सार्थक करें।

-ढङ्गा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
(राज.)



THE SPIRIT OF RECONCILIATION OF DIFFERENT IDEOLOGIES AND FAITH AS EXPOUNDED BY TĪRTHANKARA MAHĀVĪRA IN SŪTRAKṚTĀNGA SŪTRA

D.Reshma, Assistant Professor.

INTRODUCTION

Today, humanity is facing its most difficult challenge in the form of corruption, casteism, religious fundamentalism, selfish motives, and interests. We find ourselves in the whirlpool of ever-increasing violence and acrimony. Moreover, we live in a materialist and sensually over-stimulated society which adds greater burden on our limited resources and leading to hoarding of resources creating inequality. There is an urgent need to address these issues and find amicable solutions to end the chaos of violence at a physical and intellectual level and restore moral order and peace. The advancements of science and technology has played the role of a double-edged sword. On one hand advancements in health sector have helped us fight the pandemic while weapon technology has destabilised many regions and made peace volatile.

ROLE OF RELIGION

Religion has a very important role to play to solve these pressing issues; it is an integral part of life and commands great reverence from all mankind irrespective of religious affiliations. It holds great power which is evident from human history as some of the worst wars that have been fought were in the name of religion and today it has become a divisive force. Violence related to religious fundamentalism along with intolerance and a supremacist attitude is on the rise. Religion alone can resolve these dangerous tendencies

before it results in complete fragmentation of society. It must play a unifying role and religious leaders from all religions must work together to remove the seeds of discord and mistrust to ensure a moral and just society in the future. The onus lies greatly on religious leaders to work beyond selfish and petty interests and nurture the spirit of reconciliation.

When we talk about reconciliation, the most important first step is to understand that there is a conflict and all those involved must take equal responsibility for it. Acceptance of differences is the first step towards reconciliation. Acceptance of mistakes require great courage and indicates humility which is the first step towards self-realization. Acceptance leads to identification of the problem and promotes empathy and understanding. The next step is preparation for reconciliation, in other words, what one is prepared to do to reconcile? Finally, the actions that are necessary for change and striving to make the change.

For a long time, religion and scriptures have been the guiding system for man. They have provided man with solutions for everything. All religions talk about peace, love, righteousness, and harmony. Each school gives its own set of well-defined rules and laws for man with liberation or salvation as its end goal. But absolutistic beliefs regarding religion have divided humanity like no other. The problem begins when religions start to propagate their truth as the only truth

and reject all others. Tīrthankara Mahāvīra came up with a solution to negate the absolutistic viewpoints of other religions. Jainism can act as a unifying philosophy as it rejects absolutism of any kind. Tīrthankara Mahāvīra has proposed a well etched out path for reconciliation based on non-absolutistic principles. In this paper I am going to look at the spirit of reconciliation as expounded by Tīrthankara Mahāvīra in Sūtrakṛtāṅga Sūtra.

Jaina philosophy is considered as one of oldest living systems of the world, Propagated by Tirthankaras who are Vītrāgī, Sarvajña and Hitopasdeśī. Every half time-cycle produces twenty-four Tīrthankaras. Tīrthankara Rīṣabha was the first Tīrthankara and Tīrthankara Mahāvīra is the last Tirthankara of this Avasarpini time-cycle. After attaining Kevala-Jñāna Tīrthankara Mahāvīra, showered his infinite compassion by reciting the Tripadi and his Gaṇadharas (prime disciples) then collectively scripted them and gave us the Āgamas or scriptures. The Āgamas are the essence of the sermons delivered by Tīrthankara Mahāvīra and most ancient form of Jaina literature. After the Nirvana of Tīrthankara Mahāvīra, the Jaina congregation made great efforts to preserve them. Deep studies of the Āgamas help the Jiva remove the veil of ignorance and helps him rediscover his true self and put him on the path of spiritual purification. The Āgamas consist of twelve Aṅga-āgamaś which are known as the Dvādaśāṅga. The Sūtrakṛtāṅga Sūtra is the second Aṅga-Āgama of the series.

INTRODUCTION TO SŪTRAKṚTĀṄGA SŪTRA

Tīrthankara Mahāvīra discouraged a one-sided focus on knowledge, faith or conduct. He never looked at knowledge, faith and conduct from a point of exclusivity. He always propounded for integration of

knowledge, faith and conduct. For instance, in the Ācārāṅga Sūtra we see greater emphasis on conduct and the knowledge portion treated as an auxiliary part, whereas in the Sūtrakṛtāṅga Sūtra, knowledge is the prime focus while conduct is secondary. Coordination has always been the goal of Jaina philosophy.

Sūtrakṛtāṅga Sūtra is the second of the Aṅga Āgamas in the Dvādaśāṅga but from the point of view of philosophical studies, it is considered more important than Ācārāṅga Sūtra. It contains description of the schools prevalent during the times of Tīrthankara Mahāvīra. While some of the schools are related to conduct, some schools are based on philosophical ideologies. While describing these schools a similar pattern was followed; firstly, these schools are introduced, and their ideologies explained and in the second part they are refuted. We find similar patterns in texts of other schools. The Buddhist text Abhidhammapitika is also composed in the same style. Similar philosophical discussions are found in the ancient texts like the Upanishads.

Tīrthankara Mahāvīra looked at conduct from various perspectives and in Sūtrakṛtāṅga Sūtra conduct is analysed from a philosophical perspective. It begins with Bujjhejja which signifies to know and acquiring right knowledge is the theme of the text. With removal of ignorance as the prime focus Tīrthankara Mahāvīra has given description of various schools to promote awareness amongst newly initiated ascetics not to fall prey to their sweet nectar dipped words of others schools.

Sūtrakṛtāṅga Sūtra has two Śrutaskandhas and the first Śrutaskandha is comparatively older than the second. There is a belief that the second Śrutaskandha was added by later Jaina Acāryas. The first

Śrutaskandha has sixteen chapters and the second has seven chapters. The text predominately delves upon the doctrines of other philosophies. Newly initiated ascetics study the Sūtrakṛtāṅga Sūtra to understand these doctrines and enables to differentiate between right and wrong and analyse the doctrines propensity. The importance of Sūtrakṛtāṅga Sūtra from a philosophical perspective is unique. It is a perfect amalgamation of knowledge and conduct.

The Sūtrakṛtāṅga Sutra records several old doctrines regarding soul, creation and mortality. The Panchmahabhūtavāda regards the soul as an evolute of the five elements viz, earth, water, air, fire and sky. The soul is destroyed when these five elements dissolve. Some believe that there is an

intelligent principle who appears in various forms in the universe. The Ātmaśāsthavāda regard the soul as the sixth element and insist that the world and the soul both are eternal and promote determinism. The Buddhist advocate that the universe is made up of five momentary aggregates known as skandhas, which are neither identical nor different : neither caused nor uncaused. The Niyativāda believe that suffering is due to fate. Then there are the sceptics who did not know anything for certain. With regards to creation there are some who believe that the universe is created by gods, some believe that the universe is created by Brahmana; some believe that Īsvara is the creator. While some advocated that the universe is derived from the Pradhāna element. *(Continue)*

जलवायु परिवर्तन से जंग जीतने के दस सुनहरे नियम

श्री दिलीप कुमार गाँधी

1. नित्य प्रयोग में आने वाले विशेषतः खाद्य पदार्थ का क्षय रोके।
2. पुराने कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक एवं विद्युत् उपकरण आदि का यथास्थान ज़िम्मेदारी से निपटान करे।
3. कागज़ तब तक प्रिंट नहीं करें जब तक आवश्यक न हो।
4. जहाँ तक हो सके सीढ़ी का प्रयोग करें, लिफ्ट का प्रयोग टालें।
5. हर वक्त पुनरुपयोग वाले कपड़े या थैला संग रखें, ताकि खरीददारी के समय पॉलीथिन का उपयोग न हो पाए।
6. जहाँ तक हो प्लास्टिक प्लेट, पानी की बोतल, चम्मच, फ़ॉर्क, स्ट्रॉ को नज़रअन्दाज़ करें, इससे पर्यावरण का क्षय होता है।

7. ऊर्जा और बिजली का कभी भी अनावश्यक उपयोग नहीं करें, स्विच बन्द करने की आदत डालें।
8. पौधे लगाने की आदत डालें, कम से कम एक पौधे को पेड़ बनाने की जवाबदारी लें। वर्ष में एक पौधा अवश्य लगायें।
9. पैदल चले अथवा साइकिल का उपयोग करें।
10. निजी के बजाय सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग अधिक करें।

मैं समझता हूँ कि इन दस लघु नियमों को दैनिक जीवन में आत्मसात् करें तो आकाश में बढ़ने वाले कार्बन को कम कर सकते हैं। इन सभी नियमों का अनुपालन या कुछेक नियमों का पालन करें तो जलवायु प्रदूषण पर काफ़ी अंकुश लगा सकते हैं। आइए हम परिवार, दोस्तों, सहकर्मियों और जान-पहचान वालों को इन नियमों को अपनाने के लिए प्रेरित करें और स्वच्छ एवं हरित सुधार पर क़दम बढ़ायें।

10 सितम्बर 2022

जिनवाणी 60

ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

जैनदर्शन : विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में-डॉ. अनिल कुमार जैन। **प्रकाशक**-इंफिनिटी एजुकेशन, श्री हेमन्त जैन, ए-30, अनीता कॉलोनी, गाँधी नगर रेलवे स्टेशन, जयपुर-302015 (राज.) फोन 9650992378, **प्राप्ति-स्थान**-(1) मैनेजर-जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिथय क्षेत्र, श्री महावीरजी-322220 (राज.), (2) कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, 584, महात्मा गाँधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर-452001 (मध्यप्रदेश), (3) मैत्री समूह-पोस्ट बॉक्स नं. 15, विदिशा (मध्यप्रदेश) फोन 9425424984, (4) डॉ. अनिल कुमार जैन, डी-197, मोती मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन 9925009499, **संस्करण**-प्रथम, 2021, **पृष्ठ**-235 + 16 = 251, **मूल्य**-180/- रुपये। ISBN : 978-81-945538-6-1

प्रस्तुत पुस्तक 'जैनदर्शन : विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में' में लेखक ने जैनदर्शन से सम्बन्धित अपने 21 विशिष्ट लेखों को संयोजित किया है। पुस्तक में संगृहीत लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न लेखों में लेखक ने जैनदर्शन के विभिन्न सिद्धान्तों एवं मान्यताओं का वैज्ञानिक दृष्टि से परीक्षण कर अपने विचारों से जैनदर्शन के सिद्धान्तों की पुष्टि करने का प्रयास किया है। भाग्य और पुरुषार्थ के लेख में पुरुषार्थ की प्रधानता को स्पष्ट किया है। अकाल मृत्यु के बारे में भी विशद विवेचन कर विविध दृष्टिकोणों से विषय को स्पष्ट किया गया है। कर्मसिद्धान्त का सुन्दर विवेचन किया है और यह बताया है कि किस प्रकार से हम तपस्या एवं समभाव के द्वारा कर्मों की स्थितिघात एवं रसघात कर उनमें परिवर्तन कर सकते हैं और उनकी निर्जरा कर सकते हैं। जैन भोजन-पद्धति का अहिंसात्मक सूक्ष्म विवेचन करते हुए उसको

वैज्ञानिक दृष्टि से परिपुष्ट किया है और उसे स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद बताया है। व्रत-उपवास के लेख से स्पष्ट होता है कि ये केवल तप ही नहीं हैं, अपितु स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक हैं। प्रासुक जल का भी वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है, जो ज्ञानवर्धक है और प्रासुक जल पीने एवं उपयोग में लेने की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार से सौर-ऊर्जा, वनस्पतिकाय, वृद्धावस्था एवं मृत्यु से सम्बन्धित लेख भी महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने वाले हैं। इसी प्रकार अण्डा एवं जल में जीवत्व का विचार किया गया है। परमाणु के मूलभूत गुणों की चर्चा करने के अतिरिक्त स्कन्धों पर भी वैज्ञानिक दृष्टि से तुलना की गई है।

पुस्तक में वर्णित सभी लेख महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक सामग्री से समृद्ध हैं, जिनका विज्ञान एवं तर्क की कसौटी पर सम्यक् परीक्षण किया गया है।

पुस्तक के प्रारम्भ में विद्वान् सन्त मुनि महेन्द्रकुमारजी की भूमिका है, मुनि प्रमाणसागरजी का मंगल आशीर्वाद एवं आचार्य विजयनन्दिघोषसूरिजी का अभिमत है। पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट भी महत्वपूर्ण है, जिनमें कतिपय प्रश्नों का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट में ही The Ultimate Particle of Matter, Colour और जैनदर्शन में Solar Energy के के सिद्धान्त के बारे में विस्तार से विशद वर्णन किया गया है।

लेखक ने सभी लेखों में अपने शोधपूर्ण विचार वैज्ञानिक एवं आगमिक दृष्टि से परीक्षण कर प्रस्तुत किये हैं, जो सामयिक एवं उपयोगी हैं।

जैन न्याय प्रदीपिका-प्रो. वीरसागर जैन। **प्रकाशक**- भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड़, नई दिल्ली-110003 फोन 011-24626487, 9350536020, Email : bjnanpith@gmail.com, **प्रथम संस्करण**-2022, **पृष्ठ**-288, **मूल्य**-335 रुपये। ISBN : 978-93-94212-24-4

प्रस्तुत पुस्तक 'जैन न्याय प्रदीपिका' में लेखक ने

विभिन्न अवसरों पर प्रस्तुत अपने 48 लेखों का संग्रह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। जैन न्याय जैसे क्लिष्ट विषय को प्रस्तुत पुस्तक में सरल एवं सुबोध भाषा शैली में प्रस्तुत किया गया है। जो विद्यार्थी या पाठक जैन न्याय की जानकारी नहीं रखता है, उसको भी इस पुस्तक के अध्ययन से न्यायशास्त्र की विपुल जानकारी सहज में ही हो जाती है। प्रारम्भ में ही जैन न्याय का प्राथमिक परिचय देते हुए बतलाया गया है कि जिसके द्वारा वस्तु-स्वरूप को भली-भाँति जाना जाये, वह न्याय है। जैन न्याय के दो अवयव हैं—प्रमाण और नय। न्यायशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता बतलाते हुए उसके दैनिक जीवन में उपयोगिता पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक के एक लेख में अन्य दर्शनों से जैन न्याय का वैशिष्ट्य बतलाया गया है। लेखक ने जैन न्याय से सम्बन्धित 201 ग्रन्थों की सूची भी प्रस्तुत की है। जैन न्याय को समझने के साथ-साथ अन्य दर्शनों के ज्ञान की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। पुस्तक में सूत्र के 32 दोषों का भी स्पष्ट एवं संक्षिप्त विवेचन किया गया है। 'आप्तमीमांसा' ग्रन्थ का अनुशीलन करते हुए विस्तृत परिचय दिया गया है।

अनेकान्त, स्याद्वाद और सप्तभङ्गी का संक्षिप्त, किन्तु स्पष्ट एवं बोधप्रद विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अनेकान्त का अर्थ है—अनेक (अनन्त) धर्मों/गुणों वाली वस्तु। जैनदर्शन के अनुसार प्रत्येक वस्तु में अनन्त धर्म/गुण होते हैं। स्याद्वाद अनेक धर्मों वाली वस्तु को कहने की एक पद्धति/शैली है, जिसमें हर वाक्य के साथ 'स्यात्' लगाकर बोला जाता है। सप्तभङ्गी अर्थात् सात प्रकार से उसका कथन किया जा सकता है। स्याद्वाद का अन्य दर्शनों में उल्लेख प्रदर्शित करते हुए 'स्यात्' पद का विशिष्ट महत्त्व भी बतलाया गया है। इसके साथ

ही प्रश्नोत्तर के माध्यम से विषय को स्पष्ट किया गया है। अनेकान्तवाद को स्वीकार करने से समस्याओं का समाधान पाकर सामाजिक सौहार्द कायम हो सकता है।

इसके साथ ही आत्मानुभूति में भी न्याय शास्त्र की अहम् भूमिका बतलाई है। सर्वज्ञसिद्धि के विषय को प्रश्नोत्तर से स्पष्ट समझाया गया है। जैनदर्शन की कार्य-कारण व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए बतलाया गया है कि प्रत्येक कार्य की निष्पत्ति में पाँच कारण (पञ्च-समावय) का होना आवश्यक है। चतुरंगवाद की भी चर्चा की गई है और जैनदर्शन में अभाव की अवधारणा का भी विवेचन किया गया है। प्रमाण और नय की विस्तृत व्याख्या करने के साथ ही निक्षेप का भी विवेचन किया गया है। इसके साथ ही जैन न्याय ग्रन्थों में उपलब्ध सूक्तियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं। न्यायशास्त्र के अध्ययन से होने वाले लाभों की चर्चा के साथ ही यह भी बताया गया है कि इससे मिथ्यात्व का नाश होता है। अज्ञान को दुःख का मूल कारण बतलाया गया है। धर्म, दर्शन और न्याय में अन्तर स्पष्ट करते हुए प्रमेय को विस्तार से स्पष्ट रूप से समझाया गया है। प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख विशेषता यह है कि प्रश्नोत्तर के माध्यम से विषय को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया गया है। वर्तमान में प्रमुख नैयायिकों का परिचय भी दिया गया है। पाठकों के लिए जैन न्याय का संक्षिप्त लक्षण कोष एवं शब्द कोष भी पुस्तक में उपलब्ध है और अन्त में विद्यार्थी के लिए छह आवश्यक कर्तव्य बतलाये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'जैन न्याय प्रदीपिका' विद्यार्थी एवं सभी जिज्ञासु पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी। वे जैन न्याय का हार्द समझ सकेंगे।

—पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'ज्यणार', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महाराजगी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

❖ पापों में डूबा हुआ मानव भी यदि धर्म-जागरण करे, आत्म-स्वरूप का चिन्तन करे, तो अपने आपको ऊपर उठा सकेगा और जीवन धन्य बना सकेगा।

—आचार्यश्री हस्ती

सांवत्सरिक क्षमायाचना

छद्मस्थता में त्रुटि स्वाभाविक है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हमने भाद्रपद शुक्ला पञ्चमी, बुधवार, 31 अगस्त, 2022 को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवों से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की है। हम पूज्य आचार्यप्रवर, भावी आचार्यश्री एवं समस्त सन्त-सतीवृन्द से अविनय-आशातना के लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं, वहीं संघ-समाज के सभी भाई-बहिनों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं। विगत वर्ष के कार्यकाल में हमसे वचन-व्यवहार एवं कार्यप्रणाली द्वारा किसी भी संघ-सदस्य की भावनाओं को ठेस पहुँची हो, इसके लिए हम अन्तःकरण से क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

प्रकाश टाटिया मनीष मेहता धनपत सेठिया
अध्यक्ष कार्याध्यक्ष महामन्त्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

आनन्द चौपड़ा डॉ. धर्मचन्द जैन विनयचन्द डागा अशोककुमार सेठ
अध्यक्ष कार्याध्यक्ष कार्याध्यक्ष मन्त्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

अलका दुधेड़िया संगीता बोहरा मोनिका डांगी श्वेता कर्णावट
अध्यक्ष कार्याध्यक्ष कार्याध्यक्ष महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

विवेक लोढ़ा सिद्धार्थ आर. बाफना श्रेयांस भाण्डावत विकासराज जैन
अध्यक्ष कार्याध्यक्ष कार्याध्यक्ष महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

सुभाष हुण्डीवाल सुनील संकलेचा
संयोजक सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

अशोक बाफना आकाश चौपड़ा
संयोजक सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

राजेश कर्णावट महावीर कोठारी
संयोजक सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर

एवं

समस्त सदस्यगण, संचालन समिति एवं कार्यकारिणी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ व सहयोगी संस्थाएँ

विवाह के पश्चात् सम्बन्ध-विच्छेद क्यों?

श्री जसराज देवड़ा (जैन)

वर्तमान में हमें यह देखने में आ रहा है कि विवाह जैसे पवित्र सम्बन्धों में विकृति आने लगी है। विवाह होने के पश्चात् सम्बन्ध विच्छेद हो रहे हैं। हमारे देश में पश्चिम की संस्कृति की नकल करने का प्रयास हो रहा है, जबकि पश्चिम में विवाह सम्बन्ध अपेक्षाओं पर आधारित होते हैं। अहंकार का टकराव नित्य रहता है। समर्पण तथा सन्तानों के प्रति भावनात्मक सम्बन्धों का प्रायः अभाव रहता है। लिव इन रिलेशनशिप का बोलबाला हो गया है। भोग का महत्त्व अधिक होने से वहाँ विवाह संस्था जर्जर होती जान पड़ती है। इसी वजह से वहाँ का जीवन अपने देश की तुलना में ज्यादा तनाव वाला और दुःखमय है। हमारे देश के आध्यात्मिक जीवन में भोग से ज्यादा त्याग का महत्त्व है, इसीलिए पश्चिमी देशों के लोग हमारा आध्यात्मिक जीवन जीने को लालायित रहते हैं।

विवाह के पश्चात् सम्बन्ध विच्छेद हो रहे हैं, इसके लिए निम्न कारण मुख्य हैं-1. समानता एवं स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्ति की इच्छा-प्रत्येक परिस्थिति में समानता के अधिकार की इच्छा के कारण सामञ्जस्य का अभाव हो जाता है। पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादाओं को छोड़कर स्वतन्त्रता प्राप्त करने को लालायित रहने के कारण मेल-जोल भी नहीं रह पाता है। 2. अहंकार-अहंकार किसी भी स्थिति में एक-दूसरे के समक्ष झुकने नहीं देता और 3. पीहर प्रश्रय-अपनी समस्याओं के निराकरण में पीहर पक्ष का बेवजह हस्तक्षेप होना।

जीवन में शिक्षा का उपयोग सुख-शान्ति एवं सुसंस्कृति के लिए होता है। फिर आज की शिक्षा में

इतना विरोधाभास क्यों पैदा हो रहा है कि सर्वाधिक विवाह-विच्छेद शिक्षित परिवारों में ही होते हैं। सबसे बड़ी वजह है त्वरित सञ्चार माध्यम, सेलफोन, वाट्सएप्प, ईमेल, इण्टरनेट आदि जिससे पल-पल की खबर इधर से उधर पहुँच जाती है और कुछ लोग आग में घी डालने का काम भी कर देते हैं।

अतः सुखी जीवन के लिए छोटा-सा सूत्र याद रखें-जहाँ समर्पण है, वहाँ स्वर्ग है। जहाँ कुतर्क है, वहाँ नरक है। स्त्री-पुरुष दोनों से कहना है कि जीवन का आनन्द लेना है तो समर्पण से जीना सीखना होगा। मन अहंकार में चले तो, उसकी सुनना नहीं चाहिये। मन अकड़ने को कहे तो उसकी मानना नहीं चाहिये। झुककर जीना सीखें, ताकि पति-पत्नी आपस में तो क्या, सारा संसार अपना हो जाये, जीवन में स्वर्ग उतर आये। जिनदगी में कभी धन-दौलत को महत्त्व मत दीजिए। दम्पती और परिवार में सामञ्जस्य है, तो समृद्धि स्वयं आयेगी। आपकी विवाहिता स्त्री अपने माँ-बाप को छोड़कर आपके साथ जीवन बिताने आई है, उसके सुख-दुःख को बाँटो। परिवर्तन करने से कोई जरूरी नहीं है कि पहले से अच्छा साथी मिल जायेगा।

विवाह तो धूमधाम से होते हैं, समधी-समधन एक-दूसरे से आदर एवं प्रेम से मिलते हैं और जिस जोड़ी को अच्छा माना जाता है वही सम्बन्ध विच्छेद होने पर एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। सम्पूर्ण विवाह-पद्धति नकली बनकर रह जाती है। जन्मपत्रियों में 36 गुण मिलने के पश्चात् भी तलाक हो जाता है।

अतः आवश्यकता है सामाजिक जागरण की, जिससे सम्बन्धों में समरसता बढ़े।

-काचीगुड़ा, हैदराबाद (तेलंगाना)

समाचार विविधा

आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यप्रवर की सन्निधि में महामन्दिर में तपस्या एवं धर्मध्यान का अनूठा ठाट

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 श्री ओसवाल जैन स्कूल महामन्दिर में, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 शक्ति नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में तथा व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 सामायिक-स्वाध्याय भवन महामन्दिर में चातुर्मासार्थ सुखे-समाधौ जोधपुर में विराजित हैं।

2-3 अगस्त, 2022 को 13 अठाई, दो नौ की तपस्या, एक बारह की तपस्या, एक इक्कीस की तपस्या, एक तेईस की तपस्या के प्रत्याख्यान हुए, अब तक हुई बड़ी तपस्याओं (अठाई से ऊपर) की सूची आगे दी जा रही है। एकाशन, आयम्बिल, उपवास, बेला, तेला, पचौला और अनेक तपस्याएँ अगणित हो रही हैं। 3 अगस्त को शासन सेवा समिति के संयोजक सहित सभी सदस्य मार्गदर्शन हेतु पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में उपस्थित हुए।

4 से 6 अगस्त तक अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें भावी आचार्यप्रवर सहित सन्त प्रवरों ने श्राविकाओं को संघभक्ति, गुरुभक्ति आदि विषयों पर मार्मिक उद्बोधन दिया। इस शिविर में देशभर से शताधिक श्राविकाओं ने भाग लिया।

6 अगस्त को भावी आचार्यश्री का 69वाँ जन्मदिवस उन्हीं की जन्मभूमि महामन्दिर में विविध आध्यात्मिक आयामों सहित साधना, आराधना एवं धर्मोल्लास से मनाया गया। जिसमें अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन, आयम्बिल, उपवास आदि तप किये तथा युवाओं ने विशेष रूप से रात्रि में संवर-साधना की। प्रवचन में महासतियों में महासती श्री सुप्रियाश्रीजी, महासती श्री भाग्यप्रभाजी, महासती श्री शारदाजी तथा सन्तवृन्दों में श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी, श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी, श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ने महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय भावी आचार्यश्री के गुणों की यथार्थ अभिव्यक्ति करते हुए अपनी-अपनी श्रद्धा अर्पित की।

13 अगस्त को महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ने 36 की तपस्या का अर्घ्य गुरुचरणों में अर्पित किया। प्रतिदिन प्रातः युवाओं की धार्मिक कक्षा में पच्चीस बोल, भक्तामर स्तोत्र का अर्थ, भावार्थ श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. रोचक शैली में फरमा रहे हैं। वीरभ्राता सुश्रावक श्री नरेशजी संकलेचा ने भावी आचार्यश्री के 69वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में चातुर्मासकाल में 69 दया गुरुचरण सन्निधि में करने का संकल्प किया।

वीर मातुश्री सुश्राविका श्रीमती शशिकलाजी गाँधी ने 22 अगस्त को गुरुचरणसन्निधि में 41 की तपस्या के प्रत्याख्यान किये। श्राविका मण्डल जोधपुर द्वारा 18 अगस्त को 'गुरुदर्शन एवं व्रत का महत्त्व' विषयक कार्यक्रम रखा। 24 अगस्त को 'नम्बर मिलाओ उत्तर पाओ' ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता, 25 अगस्त को भक्तिमय अन्त्याक्षरी एवं 26 अगस्त को भी अन्त्याक्षरी भाग-2 का कार्यक्रम गुरुचरणसन्निधि में रखा गया। दर्शन, वन्दन, मांगलिक श्रवण के साथ गुरु भगवन्तों एवं सन्त-मुनिराजों से प्रेरणा प्राप्त की एवं जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग पुस्तक की परीक्षा का आयोजन 21 अगस्त को प्रवचन के पश्चात् महामन्दिर में रखा गया। लघुदण्डक की मासिक परीक्षा भी सञ्चालित है।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की गुरुचरणसन्निधि में साधना-आराधना, तप-त्याग हेतु हर वर्ष की भाँति भारत के चहुँओर से श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन 21 अगस्त से ही प्रारम्भ हो गया। 23 अगस्त को नवरंगी आराधना प्रारम्भ हुई। 24 अगस्त से नमस्कार महामन्त्र का अष्टदिवसीय अखण्ड जाप प्रारम्भ हो गया। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना हेतु जोधपुर वासियों का जनसैलाब प्रतिदिन प्रातः आठ बजे से ही जैन स्कूल महामन्दिर में, प्रवचन, जाप, आगम (अंतगडदसा एवं कल्पसूत्र) वाचन, धार्मिक प्रतियोगिताओं, गुरुभक्ति अन्त्याक्षरी आदि, देवसिय प्रतिक्रमण, रात्रि में ज्ञानचर्चा, पौषध, संवर, दया आदि साधना-आराधना के साथ धर्मोल्लासमय वातावरण में गतिशील है। चातुर्मास की विनति हेतु श्रीसंघों, श्रद्धालुओं का भी आवागमन हुआ और हो रहा है।

आगत श्रीसंघों, श्रद्धालुओं की आवास-निवास, भोजन आदि की व्यवस्थाएँ जोधपुर श्रीसंघ के तत्त्वावधान में महामन्दिर क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं, बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों के द्वारा उत्कृष्ट आतिथ्यभाव एवं सेवाभाव के साथ की जा रही हैं। सन्त-सतीवृन्द के साथ गोचरी-पानी की सेवा में सुव्यवस्थित रूप से युवावर्ग सक्रिय है एवं सर्वतोभावेन सेवा-सम्भाल, व्यवस्था का सुन्दरस्वरूप गतिशील है।

जोधपुर में सम्पन्न तपस्याओं की सूची-41 दिवसीय (एक)-श्रीमती शशिकलाजी श्री इन्दरचन्दजी गाँधी, **31 दिवसीय (नौ)**-1. श्रीमती सुमित्राजी श्री दिनेशजी पारख, 2. श्रीमती प्रेमलताजी श्री गौतमचन्दजी तातेड़-मेड़तासिटी, 3. श्री पारसमलजी स्व. श्री कुन्दनमलजी गिड़िया, 4. श्री महेन्द्रजी स्व. श्री हरकचन्दजी सुराणा, 5. श्रीमती रेखाजी श्री उम्मेदराजजी लोढ़ा, 6. श्रीमती मंजूजी श्री चन्द्रशेखरजी लोढ़ा, 7. श्रीमती प्रमिलाजी श्री राजेन्द्रप्रसाजी धाड़ीवाल, 8. श्रीमती ज्योतिजी श्री प्रवीणजी टाटिया, 9. श्रीमती सूरजजी श्री अशोकजी साण्ड, **30 दिवसीय (तीन)**-1. श्रीमती अंकिताजी श्री पवनजी बाफना, 2. श्रीमती मधुजी श्री स्वरूपचन्दजी मोहनोत, 3. श्रीमती सन्तोषजी श्री तरुणजी चौपड़ा, **28 दिवसीय (एक)**-श्रीमती सीमाजी श्री उमेशजी टाटिया, **26 दिवसीय (एक)**-श्री दशरथमलजी श्री मोतीलालजी गोलेच्छा, **24 दिवसीय (एक)**-श्रीमती जयन्तीजी श्री राजेशजी बाघमार, चेन्नई, **23 दिवसीय (एक)**-श्रीमती मंजूजी श्री गणपतजी देसरला, **21 दिवसीय (एक)**-श्रीमती शोभाजी श्री अशोकजी सिंघवी, **20 दिवसीय (एक)**-श्रीमती शर्मिलाजी श्री दिलीपजी चोरडिया, **17 दिवसीय (एक)**-श्री गणेशजी श्री जौहरीमलजी लुंकड़, **15 दिवसीय (एक)**-सुश्री मुस्कानजी श्री मंगलचन्दजी चौपड़ा, **13 दिवसीय (दो)**-श्री रविन्द्रजी श्री कनकराजजी कुम्भट, श्री रजतजी चौपड़ा, **12 दिवसीय (एक)**-श्री दिलीपजी स्व. श्री घेवरचन्दजी मेहता, **11 दिवसीय (तीन)**-सुश्री वंशिकाजी श्री लक्ष्मीचन्दजी भण्डारी, श्री हर्षितजी श्री पदमचन्दजी कोठारी, निमाज, सुश्री भुवीजी श्री महेन्द्रजी नाहर, **10 दिवसीय (एक)**-श्रीमती कंचनजी श्री भगराजजी बाफना, **9 दिवसीय (सात)**-1. श्री रमेशजी स्व. श्री हरीशचन्दजी भण्डारी, 2. श्रीमती रजनीजी श्री अनिलजी भण्डारी-बेंगलोर, 3. श्रीमती चन्द्राजी श्री रतनलालजी बोथरा-हीरादेसर, 4. श्रीमती दीक्षिताजी श्री निखिलजी बालड़, 5. श्रीमती नीलमजी श्री विनीतजी बाफना, 6. श्रीमती चन्दाबाईजी रांका, 7. सुश्री सीमाजी श्री छोटमलजी लोढ़ा, **8 दिवसीय (उनतीस)**-1. श्रीमती राजकुमारजी श्री विमलजी मेहता, 2. सुश्री दिशुजी श्री संजयजी बाफना, 3. श्रीमती रेणुजी श्री रौनकजी डाकलिया, 4. सुश्री खुशीजी श्री विकासजी सिंघवी, 5. श्रीमती कमलाजी श्री राजेन्द्रजी कोठारी, 6. श्री अनिलजी श्री जेठमलजी मुणोत, 7. श्री रोहितजी श्री गौतमचन्दजी जीरावला, 8. श्रीमती शशिजी श्री अभिनन्दनजी भण्डारी, 9. श्रीमती अनिताजी श्री चन्द्रशेखरजी सिंघवी, 10. श्रीमती पिंकीजी श्री प्रेमप्रकाशजी लुंकड़, 11. श्री सौरभजी श्री सत्येनजी पारख, 12. श्रीमती अंजूजी श्री प्रिन्सजी टाटिया, 13. श्रीमती सपनाजी श्री देवेन्द्रजी मेहता, 14. सुश्री जियाजी श्री सम्पतराजजी बालड़, 15.

सुश्री खुशीजी श्री सुरेशजी चौपड़ा, 16. श्री नारायणचन्दजी श्री रावतमलजी चौपड़ा, 17. श्री गजेन्द्रजी श्री नारायणचन्दजी चौपड़ा, 18. श्रीमती विमलाजी श्री बुधमलजी चौपड़ा, 19. श्री आकाशजी श्री हंसमुखराजजी चौपड़ा, 20. श्रीमती सन्तोषजी श्री तरुणजी चौपड़ा, 21. श्रीमती चाँदनीजी श्री पंकजजी कोठारी, 22. श्रीमती पूनमजी श्री आशीषजी कोठारी, 23. श्रीमती हंसाजी श्री अमेचन्दजी डोसी, 24. श्रीमती सुनीताजी श्री मनोजजी कांकरिया, 25. श्रीमती सीमाजी श्री महावीरजी कांकरिया, 26. श्रीमती विमलाजी श्री सुरेन्द्रजी मुल्तानी, 27. श्री विमलराजजी मेहता, 28. सुश्री महकजी श्री मनीषजी लोढ़ा, 29. सुश्री आस्थाजी श्री अक्षयजी बाफना-चेन्नई।

-गिरिज जैन

सन्तप्रवरों के चातुर्मासों में धर्मसाधना एवं तपस्या का आकर्षण

मदनगंज-किशनगढ़-मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के मदनगंज विराजने से आत्माराधना, तपाराधना आदि विविध धार्मिक गतिविधियाँ पूरे यौवन पर हैं। मदनगंज का हर निवासी किसी भी धार्मिक गतिविधि के आह्वान पर अपने आपको शामिल कर धन्य अनुभव कर रहा है। मौसम की अनुकूलता के कारण तपस्या का ऐसा रंग जमा कि दरड़ा परिवार की बहन विनीताजी श्री प्रकाशजी दरड़ा ने मासक्षण (31 की तपस्या) कर चातुर्मास में एक इतिहास बनाया, तो कई सारे भाई-बहनों ने बेला, तेला तथा अठाइयाँ करके चातुर्मास में तप का माहौल बनाया, इसी प्रकार सोनी परिवार की चेतनाजी सोनी ने 31 दिवसीय आयम्बिल तप करके अपने आपको तप से जोड़ा।

दो दिवसीय 30-31 जुलाई का बालिका जागृति शिविर (स्मार्ट गर्ल) रखा गया, जिसमें 150 अविवाहित बालिकाओं जिनकी आयु 13 से 25 वर्ष के बीच थी, भाग लिया, जिसमें बी.जे.एस. के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी लुंकड़ ने स्वयं ट्रेनर बनकर दोनों दिन बालिकाओं को Self Mirroring, Self defence, Self confidence and Empowerment and how to choose your friend आदि विषयों पर प्रभावी प्रेरणा दी और उनके आत्मविश्वास को जागृत किया। इस शिविर के प्रारम्भ और समापन पर श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने भी अपना मूल्यवान समय देकर मार्गदर्शन किया। समापन पर उपस्थित बालिकाओं के साथ उनके माता-पिता जो वहाँ उपस्थित थे, उनको उद्बोधन देते हुए मुनिश्री ने फरमाया कि एक बालिका अगर मर्यादित और अनुशासित संस्कारों से समृद्ध बनती है तो केवल परिवार ही नहीं समाज और राष्ट्र भी सुसंस्कारों से समृद्ध बनता है इसीलिये आप अपने जीवन के बारे में अवलोकन करें, मुझे क्या बनना है और कैसा बनना है। मुनिश्री ने एक बालिका का उदाहरण देते हुए फरमाया कि एक बालिका ने आई.आई.टी. करने वाले हॉस्टल में रहकर के भी रात्रि-भोजन का एवं जमीकन्द का त्याग रखा परिणामस्वरूप उसका फ्रेण्ड सर्किल उसके कारण से दिन में और बिना जमीकन्द के पार्टियाँ देता है। सीखने की बात है, संकल्प अगर मजबूत है और इरादे यदि नेक हैं तो 'जमाने से हम नहीं हमसे जमाना है' इस प्रकार विविध उद्बोधनों के साथ मुनिश्री ने फरमाया कि इस शिविर को समापन नहीं समझें, जीवन में संस्कारों की खुराक लेकर अपने आपको सुसंकल्पों से मजबूत बनायें।

6 अगस्त के दिन स्थानक में सुबह से ही रौनक थी, चल-पहल थी, हर कोई सामायिक के साथ स्वाध्याय कर रहा था, क्योंकि आज रत्नसंघ के भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 69वाँ जन्मदिवस था। मुनिश्री ने सामायिक की नवरागी का आह्वान कर रखा था। इसीलिये पूरा स्थानक सामायिक वालों के परिवेश से भरा हुआ था। तीनों सन्तों के मार्मिक प्रवचन हुए। सभी ने भावी संघनायक के स्वस्थतायुक्त जीवन एवं दीर्घायु की मंगल भावना व्यक्त की।

हर रविवार प्रातःकालीन संगोष्ठी अलग-अलग विषयों पर हो रही है। उसमें श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति अपने-आप में मदनगंज के लिए इतिहास बना रही है। सुदूर एवं करीब के गाँव-शहरों से दर्शनार्थियों का निरन्तर आवागमन बना हुआ है। जो एक बार धार्मिक गतिविधियों, प्रवचन एवं कार्यक्रम में भाग ले लेता है, बरबस दूसरी बार आने के लिए आतुर रहता है। यही कारण है कि प्रवचन की उपस्थिति अद्भुत, अनुपम एवं प्रशंसनीय है। पर्वधिराज पर्युषण के मंगलमय पावन प्रसङ्ग पर 108 तेलों का आह्वान किया गया। पर्युषण के इस उत्साह भरे माहौल में हर उम्र के श्रद्धालुओं ने मुनिश्री के आह्वान को साकार करने के लिए अपने-आपको सम्मिलित करते हुए धन्यता का अनुभव किया और पर्युषण के तीसरे दिन अनेकानेक लोगों ने तेलों की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। जिसमें कई सारे भाई-बहिन तपस्या के क्रम में आगे बढ़ने का संकल्प रखते हैं। इस पर्व के उत्साह भरे माहौल में क्या मध्याह्न, क्या सायंकाल जब देखो बड़ी रौनक रहती है। मध्याह्न में ज्ञानवर्धक धार्मिक प्रतियोगिताओं का जो आयोजन होता है विशेष कर बहिनें बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं। जिसमें म्यूजिकल अन्त्याक्षरी, प्रश्नमञ्च, मेरी भावना आदि प्रतियोगिताएँ गतिशील हैं। अष्ट दिवसीय अखण्ड नमस्कार महामन्त्र जाप भी चल रहा है। इस पुण्यवर्द्धन कार्य में सभी अपने आपको सम्मिलित करके अपना अहोभाग्य मानते हैं। स्थानक की तीनों मञ्जिलों में रात्रिकालीन संवर करने वालों की संख्या भी अच्छी बेजोड़ है। पर्युषण पर्व की आराधना के लिए बाहर से ग्राम-नगरों से अनेक श्रद्धालु भक्तों ने यहाँ सन्तों की सेवा में पहुँचकर आत्मारोधना में अपने आपको सम्मिलित किया।

-प्रमोद कुमार मोदी

प्रतापनगर, जयपुर-सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 श्योपुर रोड़, टोंक रोड़, प्रतापनगर स्थित श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश पश्चात् सुखे-समाधौ विराज रहे हैं।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. की प्रेरणा से धर्मस्थान पर 'चातुर्मासिक मिशन : क्लियर हो विजन' गतिमान है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप के क्षेत्र में साधना का क्रम चल रहा है। अगस्त माह में आपश्री प्रतिदिन विशेष विषयों पर प्रवचन फरमा रहे हैं। आपने नमस्कार महामन्त्र, तिक्खुत्तो, इच्छाकारेणं, तस्स उत्तरी, कायोत्सर्ग, लोगस्स, मित्रता, करेमि भंते, नमोत्थु णं, एयस्स नवमस्स, विधि (नियम), रक्षाबन्धन (निःस्वार्थ प्रेम), स्वप्न, स्वाध्याय, भारत बनाम इण्डिया, सोलह सती, गणधर, विहरमान, वासुदेव, चक्रवर्ती, बलदेव, तीर्थङ्कर, खटपट से दूर रहो, दृष्टि को दीर्घ रखो, कान को पक्का रखो, जीभ को नरम रखो, पेट को गहरा रखो, सामाचारी को याद रखो, नाक ऊँची न रखो, मस्तिष्क को ठण्डा रखो आदि विषयों पर प्रवचन फरमाएँ हैं।

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. नेमिकुमार चरित्र, सन्त महापुरुषों के जीवन दृष्टान्त, उपयोगी उदाहरण, प्रेरक कथाएँ आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रवचन कर रहे हैं। पर्युषण में आपने सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, दान, शील, आत्मशुद्धि, क्षमा पर धर्मसभा को बोध कराया।

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. अंतगडदसासूत्र का वाचन कर चारित्र आत्माओं के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। मुनिश्री धर्म श्रद्धालुओं को संयम लेने की प्रेरणा कर रहे हैं। दोपहर में कल्पसूत्र वाचन में तीर्थङ्कर महापुरुषों के जीवन, भव, साधना पर प्रकाश डाला गया।

सन्तों के सान्निध्य में दर्शन-वन्दन, त्याग-तपस्या एवं धर्मसाधना गतिमान है। श्रीमान् अजितजी सकलेचा, प्रतापनगर 31 दिवसीय मासक्षण 4 अगस्त को पूर्ण कर फिर से तपाराधना कर रहे हैं।

2 से 5 अगस्त को श्राविका मण्डल प्रतापनगर द्वारा धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर में 75 श्राविकाओं ने भाग लिया। शिविर में श्री हेमन्तजी डागा, श्रीमती खुशबूजी कर्णावट, डॉ. धर्मचन्दजी जैन, श्री पदमचन्दजी गाँधी ने ज्ञानार्जन कराया। इस शिविर में कक्षा से पूर्व प्रतिदिन श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने

महावीराष्टक की दो-दो गाथाओं का विशद विश्लेषण कर भाव समझाए। 6 अगस्त को भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 69वें जन्मदिवस पर 108 वन्दना कर गुरुभक्तों ने अपार उत्साह दिखाया।

7 अगस्त को मित्रता दिवस पर युवती मण्डल ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये। Share your story before friendship day. “Tell us how your friend influenced you positively or not so positively. श्रेष्ठ कहानियों को धर्मसमा में प्रतियोगियों ने प्रस्तुत भी किया। श्राविका मण्डल प्रतापनगर ने भी रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। रविवारीय सामूहिक सामायिक कक्षा में युवाओं की संख्या खूब रही है। 7 अगस्त को डॉ. राकेशजी हीरावत ने ‘आहार जीवनशैली और जैनदर्शन’ पर बड़ी उपयोगी आचरणीय बातें रखी तथा जैनदर्शन में आहार और जीवनशैली के प्रावधान भी बताये। 14 अगस्त को श्री रितुलजी पटवा ने ‘जैन आचार्यों की गौरव गाथा भाग-2’ द्वारा ऐतिहासिक धार्मिक जानकारियाँ प्रदान की। 21 अगस्त को श्री जितेन्द्रजी डागा ने ‘आगम की उपयोगिता’ पर वक्तव्य बेहद नपी-तुली प्रामाणिक सामग्री के साथ रखा। विविध आगमों में उल्लेखित जिनरूपित आगमवाणी से सभी युवाओं को बोध कराया। 28 अगस्त को श्री आनन्दजी चौपड़ा ने ‘कैसे हो संघसेवा में युवाओं का योगदान’ पर महत्त्वपूर्ण और प्रेरक विचार प्रकट किये। उदाहरण, दृष्टान्तों के माध्यम से युवा धर्मसंघ से जुड़ें, सक्रियता के साथ कार्य करें, सहयोग करें, सेवा करें, समर्पण भाव रखें आदि भावनाएँ मन में जगायीं।

पर्युषण पर्व में पचरंगी, सामूहिक सामायिक, दया, संवर, पौषध, प्रतिक्रमण, तपस्या, तेले, अठाई करने में अपार उत्साह है। प्रवचन प्रत्येक रविवार एवं पर्युषणपर्व में गुलाब विहार में किये जा रहे हैं जहाँ हाल खचाखच भर जाता है। श्रावक-श्राविकाओं ने सिद्धिपद की आराधना पूर्ण की। श्रीमती किरणजी कोठारी ने पहली बार पञ्च परमेष्ठी आराधना तप की 35 उपवास कर लड़ी पूर्ण की। पर्युषणपर्व में धर्मश्रद्धालुओं ने प्रतिदिन 5-18 सामायिक नियमित की है। प्रवचन में जयपुर शहर एवं सभी उपनगरों से धर्मश्रद्धालु श्रद्धाभक्ति से आकर धर्म साधना करते रहे हैं।

संवत्सरी को धर्मश्रद्धालु गुलाब विहार स्थित प्रवचन हॉल में 7.30 बजे से आकर सामायिक, प्रत्याख्यान के साथ बैठने लगे और 8 से 12 बजे तक धर्मसभा पूर्ण शान्ति से जिनवाणी श्रवण में मग्न हो गई। श्रद्धाभक्ति एवं अनुशासन का नज़ारा देखते ही बनता है। जिनवाणी सुनने जब धर्मश्रद्धालु चारों ओर विराजे हुए थे, और जब धाराप्रवाह जिनवाणी शुरू हुई तब बीच-बीच में उपवन के मूर्यों की ध्वनि सुनाई पड़ती थी। श्रोता और अधिक आनन्दित हो रहे थे। जिनवाणी में भावी आचार्य पद घोषणा दिवस घटना प्रसङ्ग, पापों का प्रतिक्रमण करने के लिए प्रतिक्रमणसूत्र के 50 पाठों के भावों को जानना, अहंकार एवं क्रोध न करना, क्षमा करना एवं प्रायश्चित्त से मुक्ति आदि विषयों पर गहन विश्लेषण सुनने को मिला।

संवत्सरी महापर्व पर अठाई 24, 9 के चार, दस के एक, 14 के एक, 21 के दो, मासक्षपण 2, एकाशन मासक्षपण 2, 30 से अधिक तेले, 70 से अधिक धर्मस्थान में पौषध-संवर आदि तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। श्री मननजी समदड़िया के मासक्षपण प्रत्याख्यान से धर्मसभा हर्ष-हर्ष के जयघोष से गूँज उठी, तपस्वी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

इस माह पोरवाल, पल्लीवाल, मारवाड़, चेन्नई, रायचूर, मैसूर, सूरत, इन्दौर, बालाघाट, अहमदाबाद, हैदराबाद आदि कई क्षेत्रों से दर्शनार्थी यहाँ पधारे। गुरु दर्शन-वन्दन कर सन्तसेवा की। -ऋषभ कुमार जैन, मन्त्री

साध्वीप्रमुखा एवं महासतीवृन्द के चातुर्मासों में धर्मसाधना

कृष्णासागर-राधानिकुञ्ज, जयपुर-साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-8 सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ से एकाशन, आयम्बिल, नीवी, उपवास, तेला एवं अठाई की लड़ी सुचारुरूप से चल रही है। 31 जुलाई को भिक्षु दया का कार्यक्रम रखा गया जिसमें लगभग 45 श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अब तक 11

उपवास 1, 10 उपवास 2, 9 उपवास 2, अठाई 14, पचोला 5, चौला 1, तेला 35, बेला 2 की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त सामायिक की नवरंगी, लगभग 108 सामूहिक एकाशन हुए। पर्युषणपर्व में अष्ट दिवसीय सिद्ध पद साधना, अष्ट दिवसीय अखण्ड नवकार जाप, संवत्सरी के दिन 103 पौषध और 32 रात्रि संवर की आराधना सम्पन्न हुई। आठों ही दिन दोपहर में श्राविकाओं एवं बच्चों हेतु विभिन्न धार्मिक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं जिनमें उपस्थिति सराहनीय रही। संवत्सरी के दिन प्रतिक्रमण में लगभग 400 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

-प्रजनलाल जैन, मन्त्री

नागौर-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 सुखसातापूर्वक विराजमान है। समस्त सती मण्डल के स्वास्थ्य में समाधि है। भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 69वें जन्मदिवस पर लगभग 15 उपवास के तेले एवं 65 एकाशन के तेले हुए हैं। 21 अगस्त को बहनों में भिक्षुदया का आयोजन रखा गया जिसमें लगभग 17-18 बहनों ने भाग लिया। पर्वाधिराज पर्युषण के आठों दिन प्रवचन में 200-250 के आस-पास उपस्थिति रही। महासती मण्डल की प्रेरणा से भाई-बहनों में 8 दिन अखण्ड नमस्कार मन्त्र का जाप, अलग-अलग भाई-बहनों में दया, उपवास से पंचरंगी, अब तक 30-35 तेले, 8-10 अठाइयाँ हुईं। कई भाई-बहनों ने मौन की अठाइयाँ, एकाशन, सिद्धि तप, 5-7 एकाशन के मासखमण हुए। प्रातः 8.30 से 9.30 तक अन्तगडदसासूत्र का वाचन, 9.30 से 10.45 तक आठ दिन अलग-अलग विषय पर प्रवचन, 1.30 से 2.30 तक कल्पसूत्र का वाचन, 2.30 से 3.30 तक आठ दिन अलग-अलग प्रतियोगिताएँ हुईं।

झरवाड़ (अजमेर)-व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 का मंगल चातुर्मास धर्मध्यान, त्याग-तपस्या, जप-तप आदि धार्मिक कार्यक्रमों के साथ गतिमान है। प्रवचन में प्रतिदिन व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. द्वारा भविष्यदत्त चरित्र पर बहुत ही सुन्दर व्याख्या की जा रही है। महासती श्री रक्षिताजी म.सा. द्वारा भगवान महावीर स्वामी की वाणी भगवतीसूत्र के माध्यम से हृदयंगम करायी जा रही है। दोपहर में महिलाओं को प्रश्नव्याकरणसूत्र पर वाचनी, गति-आगति, कर्मप्रकृति थोकड़े, पुच्छिसु णं, प्रतिक्रमण, 25 बोल, सामायिकसूत्र आदि सिखाये जा रहे हैं। दशवैकालिकसूत्र के चार अध्ययन भी सीखे जा रहे हैं। महिला वर्ग में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की कक्षाओं का पाठ्यक्रम एवं थोकड़े की परीक्षा की तैयारी भी चल रही है।

रविवार को दोपहर में बच्चों की धार्मिक कक्षा चल रही है। जिसमें सामायिकसूत्र, पच्चीस बोल आदि सिखाये जा रहे हैं। कक्षा में लगभग 30-40 बच्चों की उपस्थिति रहती है। प्रवचन में प्रतिदिन लगभग 100 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है। परम श्रद्धेय श्री सागरमलजी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का पुण्य स्मृति दिवस एवं भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 69वाँ जन्मदिवस तप-त्याग एवं गुणानुवाद के साथ मनाया गया।

चातुर्मास में तपस्या नियमित रूप से गतिमान है। अब तक एक अठाई, 6 तेले, एक बेला, एकाशन के मासखमण, सिद्धि तप, सावन-भादवा के एकान्तर तप, दस पच्चक्खाण आदि तपस्याएँ चल रही हैं। आगे भी तपस्याएँ गतिमान हैं। एकाशन, आयम्बिल एवं उपवास की लड़ी नियमित रूप से चल रही है।

-वीरेन्द्र कुमार कक्कड़, मन्त्री

हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-9 चातुर्मासार्थ सुख-साता पूर्वक हाउसिंगबोर्ड, जोधपुर में विराजमान हैं। महासती श्री मान्याप्रभाजी म.सा. के 30 उपवास की तपस्या सुखसातापूर्वक सम्पन्न हुई। पर्युषण परारधना के अवसर पर हाउसिंगबोर्ड क्षेत्र में श्रावक-श्राविकाओं ने साधना-आराधना, तप-त्याग में अच्छा पुरुषार्थ किया। पर्युषण के छठे दिवस को महासती श्री प्रणतिश्रीजी म.सा. के 16 की

तपस्या एवं महासती श्री प्रार्थीप्रभाजी म.सा. के 6 की तपस्या चल रही है। प्रातः 8 से 9 बजे तक विशेष कक्षा 'एक कदम धर्म की ओर' निरन्तर गतिमान है, जिसमें सभी जन लाभ प्राप्त कर रहे हैं। तेले से ग्यारह तक की कई छोटी-बड़ी तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए हैं तथा निरन्तर चल रहे हैं। पर्युषण पर्वाराधना में सिद्धितप आराधना में कई श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया तथा आराधना की। प्रवचन सभा में स्थानक खचाखच भरा हुआ रहा।

बाइभेर-व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही धर्म आराधना अच्छी चल रही है। प्रवचन में भी उपस्थिति अच्छी रहती है। उपवास की लड़ी, उपवास के एकान्तर, सिद्धितप आदि अनेक तपस्याएँ चल रही हैं। 25 से 27 जुलाई को सामूहिक उपवास के तेले, एकाशन के तेले, दया, संवर के तेले अच्छी संख्या में हुए। प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिता का आयोजन होता है। भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म. सा. के जन्मदिवस पर लगभग 100 की संख्या में सामूहिक एकाशन हुए तथा यह दिवस तप एवं त्याग के साथ मनाया गया।

-मूलचंद गोगड़, मन्त्री

नागपुर-व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 वर्धमान नगर स्थानक में सुख-साता पूर्वक विराजित हैं एवं धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है। बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका दर्शन-वन्दन, व्याख्यान, ज्ञान-ध्यान का लाभ उठा रहे हैं। चातुर्मास के दौरान 24 तीर्थङ्कर की आराधना बहुत ही व्यवस्थित एवं ज्ञान-ध्यान से सम्पन्न हुई। इसमें 24 श्राविकाओं ने 24 दिन स्थानक में दिन-रात रहकर धर्मध्यान किया। इस प्रकार यह शिविर काफी सफल रहा। सुबह की कक्षा में युवक-युवती बड़ी संख्या में ज्ञान-ध्यान सीख रहे हैं, पर्युषण पर्व में लगभग 700 श्रावक-श्राविका व्याख्यान में रोज उपस्थित रहते थे। संवत्सरी को स्थानक परिसर से बाहर तक लगभग 1000 लोगों की उपस्थिति थी। पर्युषणपर्व के दौरान एक मासखमण, 16 की तपस्या, 9 की तपस्या, कई अठाई, कई तेले एवं गुप्त तपस्याएँ भी काफी संख्या में सम्पन्न हुईं। चातुर्मास के शुरुआत से एकाशन, आयम्बिल, उपवास, तेले की लड़ी बराबर चल रही है। महासती श्री भावनाश्रीजी म.सा. का आगम के ऊपर जबरदस्त प्रवचन जारी है। महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. का मधुर भजन, महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. का अंतगडदसासूत्र का वाचन प्रभावी रहा।

-मन्त्रोज बोहरा, संयोजक

कोयम्बटूर-व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा-5 का मंगल प्रवेश 09 जुलाई, 2022 को ओपनकारा (वर्धमान स्थानक) में बिना सूचना के प्रवेश हुआ। महासती मण्डल के मंगलमय पदार्पण से कोयम्बटूर के सभी मतावलम्बियों में हर्ष की लहर छा गई। सभी संघ संगठित होकर उत्साह से धर्माराधना में तत्पर हैं। महासती मण्डल के सान्निध्य में सभी क्षेत्रों में ज्ञानाराधना, धर्माराधना, व्रत, नियम एवं निरन्तर ज्ञानार्जन आदि में महासतीजी ने भरपूर प्रेरणा देकर धर्मप्रभावना की। कईओं ने ज्ञानार्जन एवं प्रवचन से लेकर सभी धार्मिक गतिविधियों में भाग लिया और अभी भी सेलम, ईरोड़, त्रिपुर, मेट्टुपाल्यम आदि सभी क्षेत्रों से श्रद्धालुजन दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण आदि का लाभ लेने कोयम्बटूर आते रहते हैं।

13 जुलाई से प्रातः 7.15 बजे से प्रार्थना, आगम अध्ययन, थोकड़ा, प्रतिक्रमण आदि की कक्षा में ज्ञानाभ्यास 8.15 बजे तक कराया जाता है। फिर 9.15 से 10.15 तक प्रवचन में भारी उत्साह रहता है। रविवार को प्रवचन में लगभग 500 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है। दोपहर में 2.30 से 4 बजे तक धार्मिक कक्षा और गुरुवार को दोपहर में बहिनों का 150 की संख्या में ज्ञानार्जन हो रहा है। रविवार को बालक-बालिकाओं की कक्षा रहती है। सभी उत्साहित होकर ज्ञानार्जन कर रहे हैं। सायंकाल प्रतिक्रमण और बाद में आगम थोकड़े की ज्ञान-चर्चा, पुनरावर्तन, भजन, चौबीसी आदि का अच्छा लाभ उठाया जा रहा है। महासती मण्डल अपने सान्निध्य में आने वालों को धर्म प्रेरणा करके धर्म प्रभावना कर रहे हैं।

आयम्बिल, एकाशन, उपवास, तेले की लड़ी चार माह के लिए लगी हुई है। सामूहिक एक घण्टे का जाप प्रतिदिन होता है एवं लगभग 100 भाई सामूहिक रूप से 13 जुलाई से 31 अगस्त तक वज्रधर तप में लगातार एकाशन कर रहे हैं। शनिवार, रविवार को बच्चों का शिविर एवं सामूहिक एकाशन रहता है। रविवार को साप्ताहिक बोल थोकड़ों की परीक्षा तथा छुट्टी के दिनों में भी प्रतियोगिता आदि में सभी उत्साहपूर्ण भाग ले रहे हैं और अष्टप्रहरी पौषध, 16, 24, 25 प्रहरी पौषध तथा संवर साधना में कई लोगों ने भाग लिया है। इनके अलावा भी फुटकर एकाशन, नीवी, उपवास समय-समय पर अच्छी संख्या में हो रहे हैं। कई भाइयों ने चार माह के लिए टीवी का त्याग किया, कड़्यों ने रात्रि-भोजन त्याग, ब्रह्मचर्य आदि के यथाशक्ति नियम ग्रहण किये। कड़्यों ने बड़ी स्नान, मिठाई का प्रमाण, विगय का त्याग समय मर्यादा और जीवन भर के लिए किए। यहाँ पर सामूहिक बेले, तेले दो बार हुए। धर्मचक्र एक बार हुआ, पंचरंगी (11-11 सामायिक एवं उपवास की) तीन बार हुई। नवरंगी एक बार हुई। 8 दिन पर्युषण में 12 घण्टे का जाप और 8 दिनों में विभिन्न प्रतियोगिताओं में भारी उत्साह रहा। लगभग 100 से अधिक तेले की तपस्या, पाँच की 10, 6 की एक, 7 की एक, अठाई 51, 9 की ग्यारह, 11 की चार, 15 की एक, मासखमण 31 दो, एकान्तर तप 41, 16 की एक तपस्या पूर्ण हुई।

श्रद्धेय श्री सागरमुनिजी म.सा. की पुण्यतिथि, पूज्य आचार्यश्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की पुण्यतिथि के पावन अवसर पर प्रवचन में गुणगान एवं तेले आदि सम्पन्न हुए तथा भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 69वें जन्मदिवस पर लगभग 200 सामूहिक एकाशन एवं तीन-तीन सामायिक अनेकों ने की। 11 सामायिक का आराधन और एक मासखमण तथा एक के 15 की तपस्या एक के 8 की तपस्या भी हुई। एक के मासखमण की तपस्या चल रही है और काफी संख्या में संवर-पौषध हुए। गुरु गुणगान कर सभी ने धन्यता अनुभव की। अनेक जन प्रतिक्रमण, थोकड़े तथा आगम कण्ठस्थ करने में पुरुषार्थ कर रहे हैं।

स्थानीय संघ समर्पित भाव से स्वधर्मी भाई-बहिनों के स्वागत के लिए सोत्साह भावना से कार्यरत है। सभी संगठित होकर संघ की सेवा का लाभ लेकर आनन्दित हैं। श्रीमती विमलाजी, बाबूलालजी मेहता ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। कड़्यों के बड़ी तपस्या प्रारम्भ की है। प्रवचन में प्रतिदिन लगभग 500 और पर्युषणपर्व में लगभग 1000 तक उपस्थिति रही।

-रजेश बोहरा

हिण्डौनसिटी-व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का मंगल प्रवेश 09 जुलाई, 2022 को वर्धमान नगर से चातुर्मास स्थल सामायिक-स्वाध्याय भवन नई मण्डी में प्रातः 8.15 बजे हुआ। मंगल प्रवेश के अवसर पर मण्डावर, खेड़ली, महवा, बरगमा, फाजिलाबाद आदि स्थानों से लगभग 200 श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। महासती मण्डल की प्रेरणा से 09 जुलाई से निरन्तर आयम्बिल, एकाशन, उपवास एवं तेले की लड़ी चल रही है। सुबह प्रार्थना, प्रवचन 8.30 से 9.45 तक, दोपहर 2.00 से 3.00 बजे शास्त्र वाचन, सायं प्रतिक्रमण होता है। प्रवचन में प्रतिदिन अच्छी उपस्थिति रहती है। 06 अगस्त को भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 69वाँ जन्मदिवस विशेष तप-त्याग से मनाया गया। इस दिन 125 एकाशन, 5 उपवास, 2 पचोला, आयम्बिल अनेक, 11 एवं 9 सामायिक, संवर आराधना हुई। भावी आचार्यश्री के 69वें जन्मदिवस पर आबालवृद्धों ने 108, 216, 400 वन्दना करके आचार्यश्री के चरणों में अपनी शुभकामनाएँ अर्पित की। दोपहर में 25 बोल की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रवचन के पश्चात् अनेक श्रावकों ने भावी आचार्यश्री के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये। प्रवचनों में एवं समय-समय पर महवा, मण्डावर, खेड़ली, गंगापुर, भरतपुर, हरसाना, बरगमा, फाजिलाबाद आदि विभिन्न नगरों से श्रावक-श्राविकाएँ महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन हेतु पधारते रहते हैं।

ऊटी (तमिलनाडु)-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-4 की सन्निधि में धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। प्रतिदिन प्रातः 7 से 7.30 बजे कक्षा 'आगम मेरे लिए है' तथा 9.15 से 10.15 बजे तक प्रवचन

एवं प्रत्येक रविवार को प्रवचन का समय 7.30 से 8.30 तक रहता है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही उपवास, आयम्बिल, एकाशन, संवर, बियासन, तेले की लड़ी चल रही है। प्रतिदिन 30 से 35 एकाशन होते हैं। चातुर्मास की शुरुआत से अभी तक लगभग 30 तेले, 13 अठाई, 4 नौ, 6 दस, 2 ग्यारह, 1 सतरह, 1 इक्कीस की तपस्या हो चुकी है।

06 अगस्त को भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 69वाँ जन्मदिवस एवं श्रद्धेया महासती श्री रचनाश्रीजी म.सा. की 34 की तपस्या का अनुमोदना दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। इस दिन 69 उपवास, 15 तेले, 15 अठाई, 3 दस, 1 ग्यारह, 1 सोलह एवं 105 एकाशन एवं तीन दिन तक नमस्कार मन्त्र के जाप (12 घण्टे) हुए। श्री ललितजी रूणवाल के 18 की तपस्या चल रही है। महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा ने कण्ठस्थ अंतगडदसासूत्र का वाचन अर्थसहित किया जो सभी श्रावक-श्राविकाओं को अभिभूत करने वाला रहा। दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

संवर, सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण, दया, एकाशन, उपवास, बेला, तेला, पचोला, अठाई एवं नौ की तपस्या के पच्चकखाण हुए। पर्युषणपर्व के 8 दिनों में धर्मध्यान की लहर से सम्पूर्ण संघ हर्षित एवं उत्साहित रहा एवं निरन्तर जिनवाणी श्रवण का लाभ लिया। जयपुर, बेंगलोर, हुबली, मैसूर, चेन्नई, कोयम्बटूर, कुन्नूर आदि विभिन्न क्षेत्रों से दर्शनार्थियों का पदार्पण हुआ है।

-जयचन्द कोटडिया, मन्त्री

कुन्नूर (तमिलनाडु)-व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 सुखसातापूर्वक कुन्नूर स्थानक में विराजमान हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ से तेला, उपवास, आयम्बिल, नीवी, एकाशन, बियासन, संवर की लड़ी निरन्तर चल रही है। प्रार्थना, कक्षा, प्रवचन, वाचनी, तत्त्वज्ञान का कार्यक्रम निरन्तर गतिमान है। 17 जुलाई को 75 श्रावक-श्राविकाओं ने सामूहिक नीवी की आराधना की। 24 जुलाई को एकाशन दिवस पर लगभग 180 श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों ने एकाशन किए। 30 जुलाई को सामूहिक दया दिवस पर 61 श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों ने सामूहिक दया की। भावी आचार्यश्री के जन्मदिवस पर लगभग 69 उपवास, नीवी, एकाशन, बियासन एवं तीन अठाई और एक 29 के पच्चकखाण हुए। महासती श्री रचनाश्रीजी की 36 तपस्या का पूरा भी तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। कुन्नूर श्रीसंघ में दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। वे दर्शन, वन्दन प्रवचन का लाभ ले रहे हैं। अभी तक 10 अठाई, 1 सात, 2 पचोले, 11 तेले, 2 सोलह, 1 सतरह, 1 चौदह के पच्चकखाण हुए हैं। मैसूर के श्रावक श्री महावीरचन्दजी दरड़ा ने महासतीजी के मुखारविन्द से 29 के पच्चकखाण ग्रहण किये, धर्मध्यान, तप-त्याग का ठाट लगा हुआ है। सभी में धर्म के प्रति विशेष जागृति है। वाणी और पानी का निरन्तर प्रवाह रहा है। तेरस, चौदस एवं अमावस्या को महापुरुषों के पुण्यस्मृति दिवस पर 40 एकाशन के तेले हुए।

-रणजीत चोरडिया, मन्त्री

बजरिया, सवाई माधोपुर-व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 8 के पावन सान्निध्य में परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. का जन्म दिवस 6 अगस्त को सामूहिक एकाशन दिवस के रूप में मनाया गया। 'जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग' खुली किताब प्रतियोगिता 3 चरणों में सम्पन्न हो चुकी है। सुबह प्रार्थना के बाद ज्ञानार्जन, प्रवचन के पश्चात् श्रावक-श्राविकाओं को पाठ देने एवं सुनने का क्रम रहता है। रविवार को प्रातः श्री जैन रत्न युवक परिषद् की विशेष कक्षा विभिन्न विषयों पर रहती है। मंगलवार, बुधवार और गुरुवार को श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कक्षा चलती है, नगर परिषद क्षेत्रीय मासिक कक्षा 20 अगस्त को संपन्न हुई। नदी सूत्र कंठस्थ करने का क्रम अनवरत है। आठ, नौ, ग्यारह, पन्द्रह की तपस्या हुई हैं। 41 दिवसीय तप साधना श्री मोहनलालजी जैन एण्डवा वालों ने की है। श्री राधेश्यामजी गोटेवाला परिवार में 31 दिवसीय मासखमण की तप

साधना श्रीमती नीतूजी जैन धर्मसहायिका श्री प्रदीपकुमारजी जैन पुत्रवधू श्री डिग्गीप्रसादजी जैन (करेला वाले) सुपुत्री श्री बाबूलालजी जैन (बगावदा वाले) ने की है। बड़ी तपस्या की अनुमोदना में सभी श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अपनी भावनानुसार 1 माह के लिए त्याग प्रत्याख्यान लिये गये, जो अनुमोदनीय है। एकाशन, आयम्बिल, उपवास, तेले की लड़ी चल रही है। बड़ी तपस्या करने वाले श्रावक जी एवं श्राविका जी का शाखा बजरिया की ओर से अभिनन्दन किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा बजरिया के निर्णयानुसार पर्युषण पर्व के 8 दिवसों में व्यवसाय प्रतिष्ठान बन्द रखकर धर्म आराधना की गई। प्रथम बार बड़ी संख्या में लगभग 61 सामूहिक अठाई पर्वाधिराज पर्युषण में हुई। पर्युषण में दोपहर में 25 क्रियाओं की जानकारी की कक्षा, प्रश्न मञ्च ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ हुई। 14 अगस्त को टोंक-सवाई माधोपुर सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया ने मुखवस्त्रिका धारण कर दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। दर्शनार्थियों का आवागमन जारी है। -*पदमचंद जैन गोटेवाला, शाखा मन्त्री*

चौथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर)-व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 स्थानक भवन में सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं। महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. द्वारा प्रवचन के माध्यम से 'सुखविपाकसूत्र' द्वारा अनमोल वचन प्रदान किये जा रहे हैं। महासती श्री भविताश्रीजी म.सा. द्वारा दोपहर में थोकड़ों की कक्षा के माध्यम विभिन्न थोकड़ों का ज्ञान कराया जा रहा है। प्रतिदिन एकाशन, आयम्बिल, उपवास, तेले की लड़ी के साथ चार, पाँच की तपस्याएँ चल रही हैं। अब तक सुश्री दीपाजी प्रभुलालजी के 11, श्रीमती चन्दनबालाजी श्री महेन्द्रजी के 9, श्री पवनजी श्री रामप्रसादजी के 9, श्रीमती अलकाजी श्री मनोजजी के 9, श्री मुकेशजी (पांवडेरा वाले) के 9, सुश्री निहारिकाजी श्री महावीरजी के 8, श्रीमती रंजीताजी श्री पदमजी के 5 एवं श्री जितेन्द्रजी श्री नरेन्द्रजी के 5 की तपस्या सम्पन्न हो चुकी है। श्रीमती सुनीता श्री मनीषकुमारजी जैन (रानीपुरा वाले) 5 के प्रत्याख्यान ग्रहण कर आगे की ओर अग्रसर हैं। पर्युषण महापर्व पर प्रतिदिन 24 घण्टे के नमस्कार महामन्त्र के जाप एवं लगभग 45 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 'सिद्धितप आराधना' की जा रही है। दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। इसी क्रम में अब तक सवाईमाधोपुर, कुशतला, पचाला, अलीगढ़, पांवडेरा, जयपुर, सुमेरगंजमण्डी आदि विभिन्न स्थानों के श्रावक-श्राविकाओं सहित वीर परिवारजनों ने महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन-प्रवचन का लाभ लिया। -*महेन्द्र जैन, मन्त्री*

आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2022 तथा संघ द्वारा प्रदत्त अन्य सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

(1) आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विद्वान् को 'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ 25 सितम्बर 2022 तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जाएगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

- विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
- सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
- प्रकाशित कृति सन् 2018 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
- पूर्व में किसी भी संस्था से पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।

- (E) कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
 (F) कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
 (G) सम्मान के रूप में 1 लाख की रुपये की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवेदन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित संघ कार्यालय के पते पर प्रेषित करें।

(2) युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

- (A) प्रशासनिक चयन- राज्यस्तरीय एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
 (B) प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव एवं अन्य प्रोफेशनल पाठ्यक्रम में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
 (C) शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा एवं जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
 (D) संघ-सेवा- चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

(3) विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

(4) न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान

संघ द्वारा प्रदत्त न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र-छात्रा को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें।

(5) डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्ताओं को 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

- (A) जिन शोधकर्ताओं ने 18 फरवरी 2021 से 17 फरवरी 2022 की अवधि में पी-एच.डी./डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से 1 पी-एच.डी. उपाधिधारक तथा 1 डी.लिट् उपाधिधारक को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
 (B) आवेदन-पत्र के साथ पी-एच.डी./डी. लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
 (C) सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।

उक्त सभी सम्मानों हेतु अपनी प्रविष्टियाँ संघ के निम्नांकित पते पर संबंधित सम्मान का नाम लिखते हुए 25 सितम्बर 2022 से पूर्व प्रेषित करें।

-धनपत सेठिया, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

संघ एवं संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन तथा सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 15-16 अक्टूबर, 2022 को सूर्यनगरी जोधपुर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गुणी-अभिनन्दन समारोह, संघ की सञ्चालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा का आयोजन शनिवार एवं रविवार, दिनांक 15-16 अक्टूबर, 2022 को सूर्यनगरी जोधपुर (राजस्थान) में किया जाना सम्भावित है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की त्रिदिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 4 से 6 अगस्त, 2022 तक त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन जैन स्कूल, महामन्दिर-जोधपुर में किया गया। इस कार्यशाला में समीपवर्ती और सुदूरवर्ती ग्राम-नगरों से 200 श्राविकाओं ने भाग लिया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में इस कार्यशाला में प्रवचन के माध्यम से श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा आत्मा का स्वरूप, श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने गुरु बिना जीवन नहीं, महान अध्यवसायी परम श्रद्धेय भावी आचार्यप्रवर पूज्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 'जीवन में संघ का महत्त्व' के बारे में सम्बोधित किया। सायं श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में शासन सेवा समिति की सदस्य डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर ने जिज्ञासा-समाधान विषय पर अपना उद्बोधन दिया।

द्वितीय दिवस पर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड में महासती मण्डल तथा व्याख्यानी श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के नेहरू पार्क में प्रवचन श्रवण एवं दर्शन-वन्दन के पश्चात् कार्यशाला का कार्यक्रम पलाश बाग में रखा गया। कार्यशाला की अध्यक्षता श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने की। रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशजी टाटिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया, शासन सेवा समिति की सदस्य डॉ. मंजुलाजी बम्ब, श्राविका मण्डल परामर्शदाता श्रीमती मंजूजी भण्डारी, पूर्व श्राविका मण्डल अध्यक्ष डॉ. सुषमाजी सिंघवी, महासचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट मञ्चासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती प्रभाजी गिड़िया और प्रीतलजी गिड़िया द्वारा नवकार महामन्त्र से किया गया। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने कार्यशाला में पधारे सभी सदस्यों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया तत्पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों से पधारी उपस्थित सभी श्राविकाओं ने अपना-अपना परिचय दिया। पूर्व अध्यक्ष डॉ. सुषमाजी सिंघवी-जयपुर ने 'श्राविका मण्डल को आगे कैसे लाना' विषय पर अपना उद्बोधन दिया। श्रीमती अनुपमाजी गोलेच्छा-पाली ने श्रमणोपासिका का महत्त्व और दायित्व पर प्रभावी प्रेरणा की। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्राविकाओं और बच्चों का धर्म एवं संघ के प्रति जुड़ाव

होना आवश्यक है। धर्म में प्रवेश करने से हम-सब तिर जाते हैं। उन्होंने श्राविकाओं के जबरदस्त उत्साह को देखकर हर्ष व्यक्त किया।

श्राविका मण्डल की परामर्शदाता श्रीमती मंजूजी भण्डारी सहित वरिष्ठ पदाधिकारियों ने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चों में धार्मिक संस्कारों की अभिवृद्धि कर उन्हें धर्म की ओर जोड़ने का प्रयास करना चाहिये। भ्रूण हत्या रोकने के लिए श्राविका मण्डल की ओर से विशेष प्रयास करने हेतु प्रतिज्ञा-पत्र वितरित किये। वर्ष भर में सभी शाखाओं द्वारा लगभग 1000 प्रतिज्ञा पत्र भरवाने का संकल्प किया गया। कार्यशाला का सञ्चालन नेहलजी चोरड़िया ने किया।

सायंकालीन सत्र में जोधपुर श्राविका मण्डल द्वारा धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. मंजुलाजी बम्ब द्वारा बहुत ही सुन्दर एवं सरल शब्दों में श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। तृतीय दिवस जैन स्कूल-महामन्दिर में अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित खुली पुस्तक परीक्षा का शुभारम्भ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया द्वारा आचाराङ्गसूत्र पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका का विमोचन किया गया। इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया सहित कई संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, कार्याध्यक्ष श्रीमती मोनिकाजी डांगी, उपाध्यक्ष श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता, रजनीजी जैन, विमलाजी भण्डारी, नेहाजी गाँधी, महासचिव श्वेता कर्नावट सहित वरिष्ठ पदाधिकारी मंजूजी भण्डारी, डॉ. मंजुलाजी बम्ब, डॉ. सुषमाजी सिंघवी आदि उपस्थित थे। श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया ने सदस्यों को बताया कि महिलाओं में धर्म के प्रति रुचि और शास्त्र में ज्ञानार्जन की उत्सुकता रहती है। काफी समय से खुली पुस्तक प्रतियोगिता करवाने की लगातार माँग हो रही थी। प्रतियोगिता आयोजन करने का मुख्य लक्ष्य यही है कि घर-घर में शास्त्र पहुँचे और उसका स्वाध्याय हो। पूर्व में इस तरह की 6 प्रतियोगिताएँ अखिल भारतीय स्तर पर श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित हो चुकी है जिनमें सभी ने भाग लेकर अपना ज्ञानार्जन किया।

अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की सचिव श्रीमती वनिताजी कांकरिया ने त्रिदिवसीय कार्यशाला में पधारे सभी वक्ताओं, पदाधिकारियों एवं सहभागियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। महासचिव श्रीमती श्वेताजी कर्नावट ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा, मंत्री श्री नवरतनजी गिड़िया, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी, सचिव श्रीमती पूजाजी गिड़िया, युवक परिषद् अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा, सचिव श्री लोकेशजी कुम्भट सहित समस्त संघ एवं संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्यकर्त्ताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यशाला में पधारे सभी श्राविकाओं के लिए आवास-निवास, भोजन तथा आने-जाने हेतु वाहन की व्यवस्था हेतु जोधपुर संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया।

-श्वेता कर्नावट, महासचिव

जयपुर में एक दिवसीय स्वाध्यायी कार्यशाला का आयोजन

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में रविवार 14 अगस्त, 2022 को प्रताप नगर में एक दिवसीय स्वाध्यायी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें प्रातः 7.15 से 8.15 तक कुशलवक्ता श्री रितुलजी पटवा द्वारा सामूहिक कक्षा ली गई। तत्पश्चात् 8.45 से 10.15 तक श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने स्वाध्यायी का अर्थ, उसके प्रकारों एवं विशेषताओं का उल्लेख किया।

प्रवचन के प्रश्चात् वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोट, मुख्य अतिथि श्री विमलचन्दजी डागा तथा विशिष्ट अतिथि श्री गौतमचन्दजी जैन (पूर्व

संयुक्त रसद आयुक्त) थे। कार्यक्रम की विधिवत् शुरुआत श्री गजेन्द्रजी जैन के मंगलाचरण की प्रस्तुति के साथ हुई। श्री सुशील कुमारजी जैन (शाखा संयोजक, जयपुर शाखा) द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर की छात्रा आर्ची एवं कोमल ने प्रथम बार पर्युषण में जाने के अनुभव को सारगर्भित शब्दों में व्यक्त किया। तत्पश्चात् वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री रविन्द्रजी जैन द्वारा एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया गया। तदनन्तर मञ्चासीन अतिथियों द्वारा अग्रांकित वरिष्ठ स्वाध्यायियों का माला, शॉल एवं स्मृतिचिह्न देकर स्वागत-सम्मान किया गया—(1) डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन (प्रधान सम्पादक, जिनवाणी), (2) श्री दिलीपजी जैन (अधिष्ठाता, आचार्य श्री हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान), (3) श्रीमती धर्मवतीजी मुणोत-मानसरोवर, (4) श्रीमती लाडबाईजी खारेड़, (5) श्री जितेश कुमारजी जैन-अग्रवाल फार्म, (6) श्री जितेश कुमारजी जैन-मानसरोवर, (7) श्री राकेशजी जैन-मानसरोवर, (8) श्री वीरेन्द्रजी जैन-मानसरोवर, (9) श्री कैलाशचन्द्रजी जैन-एस.एफ.एस, (10) श्रीमती सुजाताजी जैन-मानसरोवर।

वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने अपने विद्वत्पूर्ण उद्बोधन में 'स्वाध्यायी का जीवन गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ कैसे बने?' विषय पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री जितेशजी जैन ने स्वाध्यायी के नैतिकता, प्रामाणिकता एवं ईमानदारी आदि गुणों पर प्रकाश डाला। समारोह के मुख्य अतिथि श्री गौतमचन्द्रजी जैन द्वारा 'स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने हेतु जाते समय क्या-क्या तैयारियाँ करके जाये' इस विषय पर प्रकाश डाला गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री विमलचन्द्रजी डागा ने स्वाध्याय को तप का आन्तरिक भेद बताते हुए चन्द्रप्रज्ञप्ति आगम में स्वाध्याय के महत्त्व का उल्लेख किया। डागा साहब ने अपने धाराप्रवाह वक्तव्य से सबको भावविभोर कर दिया। समारोह के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत द्वारा स्वाध्यायी को अन्तर्मुखी होने के साथ-साथ वर्तमान समय में बहिर्मुखी होने पर भी बल दिया तथा स्वाध्यायी अपने ज्ञान का उपयोग अन्य लोगों को ज्ञानवान बनाने में करे, इस बात पर बल दिया।

अन्त में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था, सांगानेर के मन्त्री श्री ऋषभकुमारजी जैन ने सभी पधारे हुए अतिथियों एवं स्वाध्यायियों को धन्यवाद देते हुए आभार प्रकट किया। इस एक दिवसीय स्वाध्यायी कार्यशाला में 65 स्वाध्यायियों ने भाग लेकर अपना ज्ञानार्जन किया।

अपराह्न में आयोजित प्रथम सत्र में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने वक्तृत्व कला के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला तथा बताया कि एक स्वाध्यायी सफल वक्ता कैसे बन सकता है। श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. ने स्वाध्याय के पाँच भेदों का अर्थ बताया तथा सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने सुलसा श्राविका के कथानक के माध्यम से स्वाध्यायियों को धर्म में दृढ़ रहने की प्रेरणा प्रदान की।

श्री धर्मचन्द्रजी कुशतला, श्री गजेन्द्रजी जैन जयपुर आदि ने भजन गाकर सभा को रसमय बना दिया। अन्त में शाखा संयोजक श्री सुशील कुमारजी जैन द्वारा सभी स्वाध्यायियों का कार्यशाला में पधारकर पूरा समय देने के लिए आभार प्रकट करते हुए जनरल प्राइज का वितरण किया गया। वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान समारोह कार्यक्रम के मञ्च सञ्चालन का कार्य श्री महेन्द्रकुमारजी जैन (सह संयोजक-जयपुर शाखा) द्वारा किया गया।

—महेन्द्र कुमार जैन, सह-संयोजक

तमिलनाडु क्षेत्रीय स्वाध्यायी शिविर का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ तमिलनाडु के तत्त्वावधान में पर्युषण पर्व में सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायी भाई-बहिनों के नवीन ज्ञानार्जन के उद्देश्य से स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 15 एवं 16

अगस्त, 2022 को महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में प्रातः राईय प्रतिक्रमण से प्रारम्भ कर रात्रिकालीन 9.30 बजे तक धर्मचर्चा के रूप में शिविर आयोजित हुआ। महासती मण्डल ने स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी अलग-अलग विषयों पर स्वाध्यायियों को लाभान्वित किया। महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. ने व्याख्यान के माध्यम से एवं महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. तथा महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा. ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, स्वाध्याय, स्मार्ट जिनशासन, श्रावक का थोकड़ा, अंतगडदसासूत्र में वर्णित तप की सरल विधि आदि कई विषयों का अध्ययन करवाया। कुन्नूर संघ के श्रावक श्री धर्मीचन्दजी बाफना, श्री नवरतनजी बाघमार, श्री मनीषजी जैन एवं श्री विनोदजी जैन ने अध्यापन का कार्य कर इस शिविर को सफल बनाया। 17 अगस्त को महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में ऊटी में दर्शन, वन्दन एवं प्रवचन का लाभ लिया। सभी स्थानीय श्रीसंघों ने बहुत ही सराहनीय व्यवस्थाओं का आयोजन किया। कुन्नूर श्रीसंघ ने जिस भक्ति, सौहार्द एवं वात्सल्य पूर्वक सेवा एवं सहयोग प्रदान किया वास्तव में वह अविस्मरणीय रहेगा। स्वाध्यायी शिविर में आने-जाने आदि समस्त लाभ उदारमना सुश्रावकरत्न श्री गौतमचन्दजी मुणोत ने लिया।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 17 जुलाई, 2022 को आयोजित कक्षा 1 से 12 तक की शिक्षण बोर्ड परीक्षा का परिणाम घोषित किया जा चुका है। सभी परीक्षार्थियों को उनका परीक्षा परिणाम SMS द्वारा भिजवाया जा चुका है। सभी केन्द्राधीक्षकों को परीक्षा परिणाम की सूची भी भिजवाई जा चुकी है।

अस्थायी वरीयता सूची

(प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
13444	नेहा शुभमजी बाफना	पाथडी (महा.)	99.85	प्रथम
13404	नेहा मनीषजी सुराणा	बोलाराम (तेलंगाना)	99.75	द्वितीय
16172	आनन्द नीलेशजी जैन	नन्दूरबार (महा.)	99.50	तृतीय
14748	मीनल राजेन्द्रजी जैन	निझर (गुजरात)	99.15	चतुर्थ
13582	पायल सौरभजी खीवसरा	सिन्नर (महा.)	99.00	पंचम
13643	मोनिा संजीवकुमारजी लोढ़ा	उदयपुर (राज.)	98.80	षष्ठ
15396	प्रियंका सौरभजी जैन	सिल्लौड (महा.)	98.75	सप्तम
10244	शीला विनोदजी डुंगरवाल	रायचूर (कर्ना.)	98.70	अष्टम
14752	महावीर सागरजी जैन	नन्दूरबार (महा.)	98.65	नवम
7362	शीतल श्रीकांतजी खीवसरा	रायचूर (कर्ना.)	98.60	दशम

(द्वितीय कक्षा)

11265	आशा कल्पेशजी चौरड़िया	कालम्बोली, मुम्बई (महा.)	99.00	प्रथम
11963	पूजा ध्रुवजी सोलंकी	कोथरुड़, पूणे (महा.)	98.50	द्वितीय
10155	आशा संदेशजी खीवसरा	टोंडापुर(महा.)	98.00	तृतीय
13389	मीनल दीपकजी लोढ़ा	नेहरु पार्क, जोधपुर(राज.)	97.00	चतुर्थ
16030	खुशबू योगेशजी लोढ़ा	चौ.हा.बो., जोधपुर(राज.)	96.50	पंचम
15122	स्वाति सचिनजी सांखला	नाशिक (महा.)	96.00	षष्ठ

10067	प्रियंका अशोकजी जैन	नागपुर (महा.)	95.50	सप्तम
8993	युति प्रशांतजी कोठारी	नाशिक (महा.)	95.25	अष्टम
11275	सोनम राकेशजी रांका	कालम्बोली, मुम्बई (महा.)	95.15	नवम
12243	जिनेन्द्र प्रकाशचंदजी पारख	धन्नारीकलां (राज.)	95.10	दशम
(तृतीय कक्षा)				
7840	भारती शीतलजी ललवानी	सिल्लोड, (महा.)	98.75	प्रथम
14932	सुनिता गौतमजी रुणवाल	बीजापुर (कर्ना.)	95.00	द्वितीय
15428	अल्पा अरविंदजी पालावत	सुबोध बालिका, जयपुर (राज.)	94.50	तृतीय
8503	कोमल तरुणजी चाणोदिया	काचीगुडा (तेलंगाना)	93.00	चतुर्थ
10657	माधवी विकासजी जैन	कुडलुर (तमिलनाडु)	92.00	पंचम
1387	सीमा अभयजी चौरडिया	आकुडीपुणे (महा.)	91.85	षष्ठ
15542	अर्पना कमलेशजी चंगेडिया	कोथरुड, पुणे (महा.)	91.75	सप्तम
7097	संगीता अभिनंदनजी कोठारी	नाशिक (महा.)	91.50	अष्टम
7612	सम्पतलाल रतनलालजी बाबेल	बिजयनगर (राज.)	90.50	नवम
9001	नुपुर आदर्शजी जैन	नाशिक (महा.)	88.50	दशम
(चतुर्थ कक्षा)				
10641	पूजा योगेशजी छाजेड़	सईदापेट, चैन्नई (तमिलनाडु)	96.25	प्रथम
9096	ज्योति किशोरजी खाबिया	कुडलुर (तमिलनाडु)	95.25	द्वितीय
1030	दीपिका विवेकजी बोरा	नागपुर (महा.)	95.00	तृतीय
9100	निरूपा प्रवीणजी बरडिया	कुडलुर (तमिलनाडु)	94.25	चतुर्थ
3720	प्रमिला महेन्द्रजी रांका	शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)	91.75	पंचम
4669	साक्षी जितेन्द्रजीसुराणा	जलगांव (महा.)	91.70	षष्ठ
16181	समता सुनीलजी मेहता	बिजयनगर (राज.)	91.00	सप्तम
4583	साधना नवीनजी समर	डुंगला(राज.)	90.75	अष्टम
927	चेतना अखिलेशजी मेहता	मॉडलटाउन, सूरत(गुजरात)	89.50	नवम
4030	पूर्वी राजेन्द्रजी जैन	मानसरोवर, जयपुर (राज.)	89.00	दशम
(पाँचवीं कक्षा)				
5190	शिखा नमितजी बोथरा	नगल्लुर (तमिलनाडु)	97.00	प्रथम
444	आराधना मनीषजी गुलेच्छा	पाली-मारवाड़ (राज.)	96.50	द्वितीय
5220	शिप्रा रोहितजी मोदी	ब्यावर (राज.)	95.50	तृतीय
2756	मीना नरेन्द्रजी चौधरी	भोपाल (मध्य प्रदेश)	95.25	चतुर्थ
456	आर्ची विमलकुमारजी जैन	सिद्धान्त शाला गर्ल्स, जयपुर	94.25	पंचम
333	अंजू दीपकजी जैन	पाली-मारवाड़ (राज.)	93.50	षष्ठ
2783	मिताली ललितजी भटेवरा	नाशिक (महा.)	93.00	सप्तम
(छठी कक्षा)				
10942	अमिता संजयजी ओटावट	बोरीवली, मुम्बई (महा.)	99.00	प्रथम
1174	दीपाली रूपेशजी सुराणा	सिल्लोड (महा.)	98.75	द्वितीय
14870	राजकुमारी गौतमचंदजी बोहरा	चंगलपेट (तमिलनाडु)	98.00	तृतीय

232	अनिल पुखराजजी भण्डारी	काचीगुडा (तेलंगाना)	96.75	चतुर्थ
5749	स्वाति नीरजजी मेहता	मदनगंज (राज.)	96.25	पंचम
14871	सारसा बाई रतनलालजी जैन	चंगलपेठ (तमिलनाडु)	95.50	षष्ठ
3676	पूनम पुनीतजी पगारिया	पाली-मारवाड़ (राज.)	95.25	सप्तम
(सातवीं कक्षा)				
6034	वंदना अजयजी कासवा	हिंमनघाट (महा.)	99.75	प्रथम
504	आरती श्रेणिकजी भटेवरा	पोलुर (तमिलनाडु)	99.50	द्वितीय
665	बबीता विमलचंदजी गादिया	रेडहिल्स (तमिलनाडु)	98.75	तृतीय
6156	विद्या निर्मलजी छाजेड़	पोलुर (तमिलनाडु)	98.50	चतुर्थ
6821	कोमल प्रकाशचंदजी तातेड़	मेड़तासिटी (राज.)	98.00	पंचम
3514	पायल पानमलजी सांड	विजयवाड़ा(आ.प्र.)	97.00	षष्ठ
5072	सीमा विनोदकुमारजी रांका	पोलुर (तमिलनाडु)	96.50	सप्तम
(आठवीं कक्षा)				
4971	सरिता शिवकुमारजी संकलेचा	अमरावती (महा.)	97.50	प्रथम
2339	ललिता धर्मेन्द्रजी नाहर	हिंमनघाट (महा.)	95.00	द्वितीय
3278	नीलम सुनीलचंदजी कांकरिया	नागौर (राज.)	93.00	तृतीय
1082	धार्मिक धर्मचन्दजी जैन	शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)	91.50	चतुर्थ
13765	आदित्य गौतमचंदजी जैन	महावीरनगर, जयपुर (राज.)	91.45	पंचम
1606	इन्द्रा सम्पतलालजी बाबेल	बिजयनगर (राज.)	91.40	षष्ठ
4958	सरिता सुरेशकुमारजी चौपड़ा	हिंमनघाट (महा.)	91.00	सप्तम
(नवमीं कक्षा)				
7219	स्वाति शांतिलालजी कोठारी	बुलढाणा(महा.)	98.00	प्रथम
5123	शांतादेवी रणजीतसिंहजी पीपाड़ा	कालानीनगर, इन्दौर (म.प्र.)	93.00	द्वितीय
2392	लक्ष्मीकांता सुमेरचंदजी मेहता	चौ.हा.बो., जोधपुर (राज.)	92.75	तृतीय
(दसवीं कक्षा)				
329	अंजू मूलचंदजी चौरड़िया	जानकीनगर, इंदौर (म.प्र.)	99.00	प्रथम
3698	प्रकाशबाई राहुलजी कोठारी	वडपलनी (तमिलनाडु)	98.50	द्वितीय
6711	बीना अनिलकुमारजी मेहता	जानकीनगर, इंदौर (म.प्र.)	96.50	तृतीय
(ग्यारहवीं कक्षा)				
3094	नीलम दिलीपजी लूंकड़	वेस्टसईदापेठ (तमिलनाडु)	96.50	प्रथम
12168	पिंकी नवरतनजी कोठारी	रोयापुरम(तमिलनाडु)	92.50	द्वितीय
555	आशा ललितजी कांकरिया	सेलम (तमिलनाडु)	84.00	तृतीय
(बारहवीं कक्षा)				
5543	सुधा अनिलकुमारजी कोठारी	वैलीचरी (तमिलनाडु)	99.50	प्रथम
402	अंतिमा हरीशकुमारजी जैन	अलीगढ़ (राज.)	97.00	द्वितीय
3841	प्रेमलता सुभाषचंदजी कोठारी	वीरगमबक्कम (तमिलनाडु)	95.50	तृतीय

इस परीक्षा की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

कुल आवेदक	उपस्थित	उत्तीर्ण परीक्षार्थी	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल परीक्षा केन्द्र
4311	2533	1928	76.11	200

सभी केन्द्राधीक्षकों, निरीक्षकों, प्रश्न-पत्र निर्माताओं, उत्तरपुस्तिका जाँचकर्ताओं ने तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाएँ-स्वाध्याय संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल, संस्कार केन्द्र आदि के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने उक्त परीक्षा के आयोजन में जो महनीय सहयोग/सेवा/मार्गदर्शन आदि प्रदान किये, उसके लिए शिक्षण बोर्ड हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता है।

कक्षा 1 से 12 तक जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों) की आगामी परीक्षा 8 जनवरी, 2023 को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-अशोक बाफना, संयोजक-9444270145, आकाश चौपड़ा, सचिव-9413033718, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-9351589694 शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-फोन: 0291-2630490, 2636763, व्हाट्स अप नम्बर 7610953735 Website:- jainratnaboard.com, E-Mail:- shikshanboardjodhpur@gmail.com
-आकाश चौपड़ा, सचिव

आचाराङ्गसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 06 अगस्त, 2022 को महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 69वें जन्म-दिवस पर आचाराङ्गसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया गया है। पुस्तक का मूल्य ₹ 70/- तथा प्रश्न पुस्तिका का मूल्य ₹ 30/- रखा गया है।

इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार ₹ 21,000/-, द्वितीय पुरस्कार ₹ 15,000/-, तृतीय पुरस्कार ₹ 11,000/- तथा प्रथम 20 प्रतियोगियों को ₹ 1,000/-, विशेष पुरस्कार 90% या इससे अधिक प्राप्तांक वालों को ₹ 500/-, 80% से 89% तक प्राप्तांक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को ₹ 200/-, 60% से 79% तक प्राप्तांक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

प्रश्न पुस्तिका को पूर्ण कर जमा कराने की अन्तिम तिथि 29 दिसम्बर, 2022 (परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के तृतीय स्मृति दिवस) रखी गई है। आचाराङ्गसूत्र पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका प्राप्ति तथा जमा कराने का स्थान-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-324003 (राज.) फोन 0291-2636763, 9413132362

विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट के द्वारा भेजी जायेगी। अतः प्रतियोगिता प्रतिभागी प्रश्न-पुस्तिका में अपना नाम, बैंक का नाम, बैंक खाता संख्या, आई.एफ.सी. कोड के साथ बैंक विवरण की जानकारी जैसे बुक पासबुक में मुद्रित हुआ है, वैसा ही साफ खुले अक्षरों में लिखकर भेजे।

-अलका दुधेड़िया, अध्यक्ष

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था

भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजैक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID : 35288297 निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजैक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : Bapu Bazar, Jaipur, Ifsc Code : SBIN0031843 निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

संक्षिप्त समाचार

इन्दौर- Zero Origin India-Netherland नामक गैर सरकारी संगठन ने 2021 में ऑनलाइन सेमिनारों की शृङ्खला के बाद इसकी व्याख्या का अन्तरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रकाशन का निर्णय किया है। इसमें "Zero in Jain Literature" शीर्षक आलेख डॉ. अनुपमजी जैन का है। जैन समुदाय के लिए यह गौरव की बात है। उसके प्रतिनिधि को इस मिशन में सम्मिलित कर जैनाचार्यों के अवदान को यथेष्ट महत्त्व दिया है।

-कृ. तन्निष्का जैन

बीकानेर-शान्त क्रान्ति संघनायक आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. के पावन सान्निध्य में आगम व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 27 जुलाई, 2022 को 'उत्तराध्ययनसूत्र एवं उनकी टीकाओं में प्रतिपादित जीवनशैली के सूत्र' विषय पर जैन विश्व भारती, लाडनू से समागत समणी कुसुम प्रज्ञाजी का विशेष व्याख्यान ढह्वा कोटड़ी में विशाल जनसमूह के

मध्य आयोजित हुआ। समणीजी ने जीवन में सहनशक्ति को विकसित करने के सूत्र आँख और कान के कथानक के माध्यम से सुन्दर रीति से प्रतिपादित किए। इसके अतिरिक्त उन्होंने समय-प्रबन्धन, जीवन-प्रबन्धन और तनाव-प्रबन्धन को उत्तराध्ययन में निहित गाथाओं के माध्यम से जनसमूह के समक्ष रखा। -डॉ. श्वेतर जैन, ज्येष्ठपुर

जयपुर-अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन विद्वत् परिषद् एवं प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में प्राध्यापिका श्रीमती ताराजी डागा द्वारा 7 सितम्बर, 2022 से प्रत्येक बुधवार को दोपहर 2 से 3 बजे तक जूम एप (Zoom App) पर प्राकृत प्रवेशिका पाठ्यक्रम (हिन्दी के माध्यम से प्राकृत शिक्षण) प्रारम्भ किया जा रहा। इच्छुक उम्मीदवार दिये गए QR Code को Scan कर इससे जुड़ सकते हैं।



जयपुर-श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में 15 अगस्त, 2022 को आजादी का अमृत महोत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अतिथिगण के रूप में डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष) संघसेवी श्रेष्ठिवर श्री विनयचन्द्रजी कोठारी तथा जिनशासन की सेवा में तत्पर रहने वाली श्रीमती सुमनजी कोठारी आचार्यश्री हस्ती पूर्व छात्र परिषद् के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व सहायक रसद आयुक्त सुभ्रावक श्री गौतमचन्द्रजी जैन एवं पूर्व छात्र परिषद् के पूर्व सचिव, वन्य जीव संरक्षण में अग्रणी श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले) उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई तत्पश्चात् कार्यक्रम का सञ्चालन सुश्री तृप्तिजी जैन ने अपने स्वरचित मुक्तकों से बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया। नवीन प्रवेश लेने वाली सभी छात्राओं ने अपने यहाँ के नवीन अनुभव सभी के साथ साझा किये। यहाँ का वातावरण और अनुशासित जीवन से नित नई आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त करती है। समय-समय पर सन्त-सतियों के दर्शन-बन्दन और उनके मार्गदर्शन से नवीन ऊर्जा का सञ्चार होता है। -श्रीमती मंजू जैन

चेन्नई-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा का 69वाँ जन्मदिवस जप-तप-त्यागपूर्वक सामायिक साधना दिवस के रूप में मनाया गया। श्री लीलमचन्द्रजी बाघमार, श्री रूपराजजी सेठिया ने भावी आचार्यश्री के गुणगान में गुरु महेन्द्र चालीसा की स्तुति की। स्वाध्यायी बन्धुवर श्री गौतमचन्द्रजी मुणोत ने भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी के चरित्रमय जीवन के विस्तृत रूप से गुणगान किये। सामूहिक प्रत्याख्यान, संकल्प एवं मंगल पाठ के पश्चात् श्रमण भगवान महावीर स्वामी, तीर्थंकरों, आचार्य भगवन्तों, भावी आचार्य, उपाध्याय भगवन्त, चारित्र आत्माओं की जयजयकार के साथ भावी आचार्यश्री का जन्मदिवस कार्यक्रम साधना-आराधनापूर्वक सम्पन्न हुआ। -अशर बरेन्द्र कांकरिखर

बधाई



जयपुर-चि. समकितजी सुपुत्र श्री सुरेन्द्रजी-श्रीमती सुनीताजी, सुपौत्र श्री हेमराजजी-श्रीमती सूरजजी सुराणा ने B.Sc. Hons. (Maths) H. R. College दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।



जयपुर-भारतीय सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा 'रवीन्द्रनाथ टैगोर नेशनल फेलोशिप' के लिए डॉ. ताराजी डागा का चयन हुआ है। यह फेलोशिप उन्हें 'प्राकृत कथा साहित्य में प्रतिबिम्बित पूर्व मध्यकालीन भारतीय संस्कृति' विषय पर शोध हेतु प्रदान की गई है। वर्तमान में डॉ. ताराजी डागा प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर में सञ्चालित जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग की निदेशिका हैं। डॉ. ताराजी डागा द्वारा प्राकृत शिक्षण हेतु ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम सञ्चालित किये जा रहे हैं। प्राकृत

भाषा के क्षेत्र में विशिष्ट शोध हेतु डॉ. ताराजी डागा का चयन सम्पूर्ण जैन समाज के लिए गौरव की बात है। -



जयपुर-श्री अशोक कुमारजी जैन (हरसाना वाले), निजी सचिव, वन विभाग, राजस्थान सरकार को वन एवं वन्यजीव सुरक्षा तथा उनके कार्यालय के उत्कृष्ट कार्य हेतु श्री दीपनारायण पाण्डेय, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, (वन बल प्रमुख) राजस्थान जयपुर द्वारा स्वतन्त्रता दिवस पर राज्यस्तरीय समारोह में प्रशंसा पत्र, प्रतीक चिह्न एवं घर से वन तक पुस्तक प्रदान कर सम्मान किया गया।



धनारी कलाँ-श्री प्रकाशचन्द्रजी पारख वरिष्ठ अध्यापक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धनारी कलाँ (जोधपुर) को 15 अगस्त, 2022 को स्वतन्त्रता दिवस पर कक्षा दशम संस्कृत विषय का माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में लगातार 6 वर्षों से परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहने पर माला, साफा और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। आप सिद्धान्त शाला जयपुर के पूर्व विद्यार्थी हैं तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी भी हैं।

-मनोज कुमार जैन 'यादोत्री', जयपुर



आदित्य संचेती



दीया डागा



पूर्वी भण्डारी



विशाल सिंघवी

जोधपुर-श्री आदित्यजी सुपुत्र श्री अभिषेकजी-श्रीमती ऋतुजी संचेती, सुपौत्र श्री हरीशचन्द्रजी संचेती दोहित्र श्री लालचन्द्रजी बरड़िया ने जेईई मुख्य परीक्षा में 99.637 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जोधपुर में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इसका श्रेय उन्होंने अपने माता-पिता को प्रदान किया है।

जयपुर-सुश्री दीयाजी सुपुत्री श्री राजेशजी-श्रीमती सुरुचिजी डागा, सुपौत्र समाजसेवी श्री उत्तमचन्द्रजी डागा ने सी.बी.एस.सी. की 12वीं वाणिज्य की परीक्षा 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

भीलवाड़ा-सुश्री पूर्वीजी भण्डारी सुपौत्री श्री दलपतसिंह जी-स्व. श्रीमती मोहनदेवीजी भण्डारी सुपुत्री श्री दिनेशजी-श्रीमती प्रतिभाजी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जोधपुर-श्री विशाल जी सिंघवी सुपुत्र श्री राकेशजी-श्रीमती सुषमाजी सिंघवी, सुपौत्र श्री शान्तिलालजी-श्रीमती प्रेमलताजी सिंघवी ने सी.बी.एस.ई. की सीनियर वाणिज्य की परीक्षा 94% अंक से उत्तीर्ण की है। आप बचपन से ही धार्मिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। आपके द्वारा बालस्तम्भ एवं बाल जिनवाणी के अन्तर्गत दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर नियमित रूप से प्राप्त होते हैं।

श्रद्धाञ्जलि

बेंगलुरु-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, सुश्राविका श्रीमती प्रकाशबाईजी धर्मसहायिका श्री यशवन्तराजजी सांखला का 06



अगस्त, 2022 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप मिलनसार, व्यवहार कुशल, मितभाषी, स्वधर्मी सेवा की पुरोधा थी। आपने आचार्यश्री हस्ती द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन में आत्मसात् किया था। आपने सन् 2004 में पूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के शूले-अशोकनगर के चातुर्मास में समग्र चतुर्विध संघ की अपूर्व सेवा भक्ति का अनूठा लाभ उठाया। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा तथा महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा के

बेंगलोर चातुर्मास में तथा व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के बेंगलोर पधारने पर आप सहित समस्त परिवारजनों ने दर्शन, वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप सुपात्रदान, सन्त-सती वैयावच्च, संघ समर्पणता एवं कषाय नियन्त्रण की सतत आराधक गुणग्राही श्राविका थी। सांखला परिवार ने अनेक छोटे-बड़े क्षेत्रों में जीवदया, मानवसेवा, चिकित्सा और शिक्षा हेतु अर्थसहयोग प्रदान किया है। आदरणीय श्री यशवन्तराजजी सांखला वर्तमान में गजेन्द्रनिधि ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। सुपुत्र श्री भरतकुमारजी सांखला श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बेंगलोर शाखा में मन्त्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आपकी पुत्रवधू श्रीमती गुणवन्तीजी सांखला भी बेंगलूरू रत्नसंघीय 'श्राविका मण्डल' की पूर्व अध्यक्ष रही। धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत आपका पूरा परिवार तन-मन-धन से संघ समर्पित है। आप अपने पीछे भरापूरा खुशहाल संस्कार सम्पन्न परिवार छोड़कर गई हैं।

-*श्वेतपत्त सेठियार, महामन्त्री*

कोटा-अनन्य गुरुभक्त, संघ सेवक श्री बंसीलालजी मुणोथ (जैन) का 81 वर्ष की आयु में 30 जुलाई, 2022 को कोटा में स्वर्गवास हो गया। बचपन से ही धर्म के प्रति निष्ठा एवं रुचि होने से सामायिक-स्वाध्याय, संवर-प्रतिक्रमण, पौषध आदि आप समय-समय पर करते रहते थे। आपका जीवन प्रारम्भ से ही संघसेवा और सन्त-सती मण्डल की सेवा में अग्रणी रहा है। जैन स्वाध्याय संस्था (स्थानक) विज्ञान नगर कोटा के काफी वर्षों से अध्यक्ष रहने के बाद वर्तमान में आप संरक्षक पद पर थे। आप अन्य कई सेवी संस्थाओं से भी जुड़े हुए रहे। आप अपने पीछे पत्नी श्रीमती शकुन्तलाजी मुणोथ सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



जयपुर-संघसेवी सुश्राविका श्रीमती कुसुमजी धर्मपत्नी श्री रतनचन्दजी कोठारी का स्वर्गवास 23 जुलाई, 2022 को हो गया। आप धार्मिक, सरल स्वभावी तथा सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धावान थीं। प्रतिदिन सामायिक करती थीं। आपकी आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्दों के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप सुपुत्र श्री मनोजजी, मनीषजी तथा पुत्रवधू श्रीमती अंजूजी और सीमाजी तथा पुत्री-दामाद श्री राजकुमारजी-श्रीमती कविताजी बुरड़ आदि पोते-पोतियों, दोहिते-दोहित्री सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गयी हैं।



बेंगलूरु-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाकँवरजी धर्मपत्नी श्री मीठालालजी छल्लाणी का 25 अगस्त, 2022 को देहावसान हो गया। आप सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति रखती थीं। आप सामायिक-स्वाध्याय के प्रति पूर्ण जागरूक थीं। त्याग-तप से परिपूर्ण आपका जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी था। आपने रात्रि-भोजन त्याग आदि कई त्याग-प्रत्याख्यान अङ्गीकार कर रखे थे। आपकी सुपुत्री श्रीमती मंजूजी भण्डारी अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का अध्यक्षीय दायित्व बखूबी निर्वहन करने के पश्चात् वर्तमान में परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं।



-*श्वेता कर्णाघट, महारसचिब*

नदबई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलाजी धर्मसहायिका पूर्व अध्यक्ष एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, शाखा नदबई के मन्त्री श्री पदमचन्दजी जैन का 2 अगस्त, 2022 को 67 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरलता, सहिष्णुता, विनम्रता, उदारता एवं सादगी जैसे मानवीय गुणों से ओतप्रोत था। आतिथ्य सत्कार एवं सन्त-सती मण्डल की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं तथा नियमित रूप से प्रातः एवं सायं सामायिक-प्रतिक्रमण करती रहती थीं। आप श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की सक्रिय सदस्या थीं। गत 9-10 वर्षों से आपने शीलव्रत का नियम ले रखा था। आपके सुपुत्र श्री



लोकेशजी, श्री नरेशजी, श्री अखिलेशजी जैन श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सक्रिय सदस्य हैं। आपकी दोनों पुत्रियाँ एवं पुत्रवधू धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत हैं।

-नरेश जैन, पूर्व मन्त्री

कोटा-धर्मनिष्ठ, संघसेवी, युवारत्न श्री संदीपजी जैन (शीतल) सुपुत्र श्री महावीरप्रसादजी जैन का 08 अगस्त, 2022 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था। आप नियमित रूप से गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करते थे। माता-पिता से प्राप्त संस्कारों को आपने अपने पूरे जीवन में बनाए रखा। पिताजी श्री महावीरजी तथा चाचाजी श्री प्रकाशचन्द्रजी एवं श्री धर्मचन्द्रजी जैन संघ के वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं।



आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित है। आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 2014 के चातुर्मास में आपने गुरु सन्निधि में चौका लगाकर सेवा का पूर्ण लाभ प्राप्त किया था। श्री प्रकाशचन्द्रजी जैन गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी होने के साथ ही शिक्षा समिति में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं तथा श्री धर्मचन्द्रजी जैन शिक्षण बोर्ड में रजिस्ट्रार के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी आपका परिवार सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में आपके परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती सुशीलाजी कर्णावट धर्मसहायिका स्व. श्री माणकचन्द्रजी कर्णावट का 3



जुलाई, 2022 को 80 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। जीवन में कैन्सर जैसी असाध्य बीमारी से लड़कर उसे हराने का श्रेय सदा गुरु-कृपा को देने वाली सुश्राविका जी सन्त-सतियों के प्रति सदैव श्रद्धा का भाव रखती थीं। विनम्रता, कर्मठता, सेवाभावना, कर्तव्य परायणता, दृढ़धर्मिता आदि अनेक गुणों से अपने जीवन को भावित करते हुए आपने समस्त परिवार को एक सूत्र में बाँधकर रखा। अनेक रोगों से प्रस्त होते हुए भी आपने अन्तिम समय समतापूर्वक धर्मसाधना करते हुए निकाला।

जयपुर-धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती हरकीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री कपूरचन्द्रजी जैन (सोलतपुरा वाले) का



31 जुलाई, 2022 को 77 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। देव, गुरु और धर्म पर आपकी अटूट श्रद्धाभक्ति थी। प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय एवं त्याग-तपस्या में अग्रणी रहती थीं। आप सन्त-सतियों के प्रवचन सुनकर उन्हें गोचरी-पानी बहराकर प्रमुदित अनुभव करती थीं। आपने तेला, पचोला, अठाई आदि अनेक तपस्याएँ की हैं। आपके मझले सुपुत्र श्री कमल कुमारजी जैन वर्तमान में श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर के मानद मन्त्री के रूप में सेवाएँ दे रहे हैं।

किशनगढ़-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कंचनदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री इन्द्रचन्द्रजी बोहरा का 19 अगस्त, 2022



को 103 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन त्याग-तपस्या से परिपूर्ण था। वर्ष 2016 में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा के किशनगढ़ चातुर्मास में तथा अभी वर्तमान में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के किशनगढ़ चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। किशनगढ़ शहर में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की गोचरी-पानी की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थीं। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक गतिविधियों में अग्रणी रहता है। आपके पौत्र श्री नितिनजी (प्रिंस) एवं विपिनजी बोहरा तथा पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित परिवार है।

मदनगंज-किशनगढ़-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती धापूदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री माणकचन्दजी चोरड़िया का 27 जुलाई, 2022 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थी। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के शिवाजी नगर-किशनगढ़ तथा मधुर व्याख्यात्री श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के मदनगंज-किशनगढ़ चातुर्मास में आप सहित समस्त परिवारजनों ने धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। मदनगंज-किशनगढ़ में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की गोचरी-पानी की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थी। संघसेवा, सन्त-सतीवृन्द की विहार सेवा तथा स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी चोरड़िया परिवार सदैव समर्पित है।

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुरेशचन्दजी भण्डारी का 08 अगस्त, 2022 को संधारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आप साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., सरल हृदया महासती श्री सायरकँवरजी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

मैसूर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री राजेन्द्र कुमारजी सुपुत्र श्री चम्पालालजी सुराणा का 1 अगस्त, 2022 को 66 वर्ष की वय में चौविहार संधारे के साथ समाधि मरण हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धाभक्ति थी। शारीरिक परेशानी के होते हुए भी सामायिक, नित्य नियम, स्वाध्याय श्रवण बराबर करते थे। आगन्तुकों को भी धर्म की खूब प्रेरणा करते थे। आपकी मातेश्वरी, धर्म सहायिका, सुपुत्र सभी ने आपकी खूब सेवा की और भावों को उच्च रखने में सहयोगी बने।

-अभय कुमार बाँठिया, अलसूर

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

कायोत्सर्ग के बारे में विशेष जानने योग्य

श्री मनमोहनचन्द बाफना

कायोत्सर्ग पारने के समय कायोत्सर्ग मुद्रा में ही 'नमो अरिहंताणं' बोलकर कायोत्सर्ग पूरा होता है। 'नमो अरिहंताणं' का उच्चारण किए बिना मुद्रा नहीं बदल सकते। हम कायोत्सर्ग लेने से पूर्व अन्नतथ सूत्र की अन्तिम गाथा में बोलते हैं-

जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि,

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

अर्थात् जब तक मैं अरिहन्त भगवान को नमस्कार करके न पाऊँ, न पूर्ण करूँ, तब तक अपने शरीर को स्थिर करके, मौन धारण करके, ध्यान करके शरीर को (अशुभ व्यापारों से) अलग रखता हूँ।

-128/376, एच 2 ब्लॉक, जैन सदन, किंदवई नगर, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

❧ क्षमा-याचना ❧

जिनवाणी के लेखकों एवं पाठकों से हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है। कभी किसी लेखक की रचना प्रकाशित नहीं हो पाती है, कभी हमारे कारण या तकनीकी कारणों से पाठकों को असुविधा होती है, कभी जिनवाणी रसिकों को उनके पते पर जिनवाणी प्रेषित किए जाने पर भी नहीं पहुँचती है। इस प्रकार की सभी त्रुटियों एवं असुविधाओं के लिए सम्वत्सरी महापर्व पर हार्दिक

क्षमा-याचना।

-जिनवाणी सम्पादक, मण्डल एवं कार्यालय सदस्य

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन

(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

- 16328 श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन, अलवर (राजस्थान)
 16329 श्री तरुण कुमारजी जैन, अलवर (राजस्थान)
 16330 श्री रमेशजी मेहता, जोधपुर (राजस्थान)
 16331 श्री कान्तिलालजी छल्लानी, चेन्नई (तमिलनाडु)
 16332 श्री महेन्द्र कुमारजी भण्डारी, हैदराबाद (तेलंगाना)

जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार

- 100000/-मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

- 21000/-श्री ज्ञानचन्दजी-श्रीमती सन्तोषदेवीजी बाघमार, श्री कालाहस्ती, सप्रेम।
 11000/-श्री मोहनलालजी कोठारी 'विनर', दुर्ग, सप्रेम।
 5100/-श्रीमती शकुन्तलाजी, श्री उम्मेदजी-श्रीमती शान्ताजी, श्री योगेशजी-श्रीमती मनीषाजी, श्री लोकेशजी-श्रीमती हीनाजी मुणोत, कोटा, पूजनीय श्री बंसीलालजी मुणोत का 30 जुलाई, 2022 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
 5100/-श्री नन्दलालजी, दिलीपजी, राजेशजी, प्रदीपजी, हीरेनजी, शुभमजी भण्डारी, ब्यावर, पूज्य पिताजी श्री मूलचन्दजी भण्डारी (सी.ए.) की 5वीं पुण्यस्मृति में।
 5000/-श्री रतनचन्दजी कोठारी, जयपुर, श्रीमती कुसुमजी कोठारी का 23 जुलाई, 2022 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
 4100/-श्री अमितजी जैन, मुम्बई, पूजनीय पिताजी-माताजी श्री महेन्द्रसिंहजी-श्रीमती शिमलाजी पीपाड़ा की वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
 3100/-श्री अजीत कुमारजी सकलेचा, जगतपुरा-जयपुर, 31 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में (धर्मसहायिका श्रीमती अर्चनाजी, सुपुत्र श्री नीशुजी (निशान्त) सकलेचा।
 2100/-श्री सुरेन्द्रजी सुराणा, जयपुर, चि. समकित सुपुत्र श्री सुरेन्द्रजी-श्रीमती सुनीताजी, सुपौत्र श्री हेमराजजी-श्रीमती सूरजजी सुराणा के बी.एस.सी. ऑनर्स (गणित) एच. आर. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

में प्रथम स्थान प्राप्त होने के उपलक्ष्य में।

- 2100/-श्री महावीर प्रसादजी, सुनील कुमारजी कोठारी, दूदू, श्रीमती मंजूदेवीजी धर्मपत्नी श्री महावीरप्रसाद जी का 12 अगस्त, 2022 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
 2100/-श्रीमती दाखाबाईजी, ताराचन्दजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, राजेन्द्र कुमारजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पूजनीय स्व. श्री मूलचन्दजी जैन की 8वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।
 2100/-श्रीमती प्रेमदेवीजी पींचा, बड़ोदरा, श्री सागरमलजी पींचा की पुण्यस्मृति में।
 2100/-श्री राजकुमारजी मुणोत, मुम्बई, सुपुत्र श्री आदित्यजी के माइक्रोसोफ्ट इञ्जीनियर बनने के उपलक्ष्य में।
 2100/-श्रीमती चंचलदेवी, हेमन्त कुमारजी, खीवराजजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बेंगलूरु, गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
 2100/-श्री रामलक्ष्मणजी कुम्भट, जोधपुर, श्राविका श्रीमती उगमकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री भजराजजी कुम्भट की पुण्यस्मृति में सप्रेम।
 2100/-श्री ईश्वरचन्दजी सिंघवी, नई दिल्ली, स्व. श्रीमती रतनकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्दजी एवं स्व. श्रीमती रीताजी धर्मपत्नी श्री चंचलचन्दजी सिंघवी, जोधपुर की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य पर सप्रेम।
 2100/-श्रीमती राजकँवरबाईजी, श्री सम्पतराजजी भण्डारी, चेन्नई, सन् 2022 के रायचूर चातुर्मास के उपलक्ष्य में।
 2100/-श्रीमती निर्मलाजी, प्रेक्षाजी चोरड़िया, चेन्नई, सन् 2022 के रायचूर चातुर्मास के उपलक्ष्य में।
 1121/-श्रीमती मंजूजी-श्री गणपतजी सुराणा एडवोकेट, जोधपुर, श्री महावीरराजजी-श्रीमती प्रसन्नजी (सुपुत्री स्व. लाडकँवरजी-स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा) के विवाह की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम।
 1100/-श्री भँवरसिंहजी कक्कड़, सरवाड़-अजमेर, सती मण्डल की सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

- 1100/- श्री महेन्द्रमलजी, श्रीमती ललिताजी गांग, सूरत, श्री अनुपमजी (यू.एस.ए.) के जन्मदिवस पर सप्रेम।
- 1100/- श्री सुभाषजी कटारिया, पीपाइसिटी, सुपुत्र चि. अभिषेकजी संग सौ.कां. अनुश्री का शुभविवाह 26 जून, 2022 को सम्पन्न होने पर।
- 1100/- श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री प्रदीपजी जैन, इन्दौर की ओर से सप्रेम।
- 1100/- श्री भँवरलालजी, रतनलालजी, रविजी, राहुलजी बोथरा (हीरादेसर वाले), चेन्नई, सुश्राविका श्रीमती चन्द्राजी धर्मपत्नी श्री रतनलालजी बोथरा की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर।
- 1100/- श्री के. पदमचन्दजी, कमलनयनजी, करणकुमारजी, नमनकुमारजी बम्ब (निमाज वाले), बेंगलूरु, गुरु चरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
- 1100/- श्री ललित कुमारजी, संजय कुमारजी, मुकेश कुमारजी बोहरा, पहुँना-भीलवाड़ा, पूजनीय पिताजी श्री रोशनलालजी बोहरा की पुण्यस्मृति में सप्रेम।
- 1100/- श्रीमती पदमादेवीजी सुराणा, जोधपुर, श्री सुलतानजी सुराणा की पुण्यस्मृति में सप्रेम।
- 1100/- श्री पारसमलजी सुखाणी, रायचूर, श्री विजयजी सुखाणी की वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य पर सप्रेम।
- 1100/- श्री पारसमलजी सुखाणी, रायचूर, श्री Niev जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम।
- 1100/- श्री विरदराजजी-सुशीलाजी, अमितजी, अरविन्दजी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमती मदनकँवरजी भण्डारी की 19वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य पर सप्रेम।
- 1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी, कमलकुमारजी, ईश्वरकुमारजी जैन (सोलतपुरा वाले, अलीगढ़-रामपुरा), जयपुर, अपनी माताजी श्रीमती हरकीदेवीजी का 31 जुलाई, 2022 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

**श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान
(बालिका) हेतु साभार**

5000/- श्री सुनील कुमारजी जैन, छीपा बड़ौद-बूँदी की ओर सप्रेम।

गजेन्द्र निधि / गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार

श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी, मोहितराजजी जैन (ढहरा-हिंडौन सिटी वाले), जयपुर (राज.)

प्रभु की प्याऊ

संकलित

आपको प्राप्त करने की या आप जैसा बनने की प्यास मेरे मन में कदाचित् अनन्त काल में पहली बार ही पैदा हुई है। इस प्यास को बुझाने के लिए मैं आपकी ओर आने को निकल तो चुका हूँ, किन्तु मेरे और आपके घर के बीच का जो मार्ग है, उस मार्ग पर दूसरी अनेक प्रकार की प्याऊ स्थित हैं। जैसे किसी प्याऊ पर पीने का पानी, किसी प्याऊ पर प्रसिद्धि का पानी, किसी पर सम्पत्ति, शरबत, सफलता, स्वजनों का स्नेह, मित्रता के आनन्द का पानी इत्यादि मिलता है। मैं अनन्त काल तक यही पी-पी कर मार्ग में ही अटक गया, किन्तु यह तो आपकी कृपा हुई कि मैं आप जैसा बनने को लालायित हुआ हूँ। अब मैं आपसे एक निवेदन करूँ कि अब मुझे ऐसी कोई प्याऊ दिखाई ही

नहीं दे या मैं ऐसी प्याऊ की उपेक्षा कर सकूँ, ऐसी शक्ति मुझमें पैदा कर दीजिए। द्रोणाचार्य द्वारा ली गई परीक्षा में जिस प्रकार अर्जुन को चिड़िया की केवल आँख दिखाई देती थी, उसी प्रकार प्रलोभनों की अनेक प्याऊ के बीच मुझे केवल आपकी ही प्याऊ दिखाई दे, ऐसी दृष्टि प्रभु मैं आपसे माँगता हूँ।

नौकर को सेठ के प्रति समर्पित होना ही पड़ता है। ठीक इसी तरह पत्नी को पति के प्रति। नौकर कभी बेसहारा हो सकता है, पत्नी विधवा हो सकती है, किन्तु आपका भक्त तो भगवान बनकर ही रहता है। इसलिये मैं सभी बुराइयों को छोड़कर आपकी शरण में आया हूँ। प्रभु के प्रति हृदय में प्रेम जब जीवन्त और जागृत हो जाता है, तब जिह्वा मौन हो जाती है।

-नवरतन डार्या, 76, लक्ष्य, नेहरुपार्क, जोधपुर
(राज.)

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द्र प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्द्रजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

अनोखी स्वामिभक्ति

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

राहुल ने सोचा कि किसी ने ठीक ही कहा है- “यह मुम्बई है बाबू! यहाँ सब कुछ मिलता है, पर किराये पर घर एक अकेले लड़के को बड़ी मुश्किल से मिलता है।”

राहुल को मुम्बई आये 7-8 दिन हो गये थे। वह अपनी बहन के घर ठहरा था जो भायंदर में रहती थी। राहुल की नौकरी नवी मुम्बई में लगी थी। उसे लगा रोज इतना आना-जाना अपने बस की बात नहीं। अतः वह नवी मुम्बई में किराये पर फ्लैट तलाश रहा था। 3-4 दिनों तक अलग-अलग इस्टेट एजेंटों से मिला, पर पता लगा कि लोग किसी परिवार को घर देना ज्यादा पसन्द करते हैं, अकेले लड़के को नहीं।

बाद में उसे किशन कुमार की याद आई जो अक्सर उनके घर कभी मुम्बई के हापुस आम, तो कभी गाँव से गाय का घी लाता था।

यह किशन कुमार वही था जिसने कुछ सालों पहले उसके पापा से सी.ए. की पढ़ाई के लिए कुछ रुपये ब्याज पर लिये थे। वह एक छोटे से गाँव के किसान का बेटा था। पढ़ने में ठीक-ठाक था, लेकिन मेहनती और

लगन का पक्का था। सी.ए. बनने में वक्त जरूर लगा, लेकिन आखिरकार उसे सी.ए. की डिग्री मिल ही गई और नवी मुम्बई में उसने अपनी प्रेक्टिस प्रारम्भ की। यहाँ उसका कार्य काफी अच्छा चलने लगा। उसने मेरे पापा के ब्याज सहित सब पैसे लौटा दिये थे।

राहुल ने किशन कुमार को फोन किया और कहा-“मुझे यहाँ किराये पर फ्लैट चाहिये। आपके ध्यान में कुछ हो तो बताना।” किशन कुमार ने खुश होते हुए कहा-“आप तो हमारे सेठजी के बेटे हो। आपके लिये कुछ भी काम आना हमारा सौभाग्य है। आप अभी ही फ्लैट की चाबी और गाड़ी की चाबी ले लो। आज मैं जो कुछ भी हूँ सेठजी की बदौलत ही हूँ। उन्होंने समय पर मदद कर मुझे इस योग्य बनाने में भरपूर सहयोग किया है। मेरे पास भगवान की कृपा से 5-6 फ्लैट हैं, 3-4 गाड़ियाँ हैं। मुझे कुछ नहीं चाहिये, आपको जब तक रहना है आराम से रहो।”

राहुल वहाँ 3-4 माह रहा, फिर उसकी नौकरी दूसरी जगह लग गई, इसलिये उसने वह जगह छोड़ दी। राहुल ने भी बाद में उसे पैसे देने की खूब कोशिश की, परन्तु किशन कुमार ने पैसे नहीं लिये और आज भी वह हमारे लिये मन में अथाह प्रेम और सम्मान रखता है।

यह एक सत्य घटना है। नाम में परिवर्तन किया

गया है, पर आश्चर्य है कि आज के युग में भी ऐसे स्वामि भक्त लोग होते हैं। ब्याज सहित पैसा चुकाने के बाद भी, अधिक पैसा कमा लेने के बाद भी ससम्मान उनके पाँवों में प्रणाम करके उन्हें ही जीवन का सूत्रधार मानना आठवें आश्चर्य से कम नहीं है।

ऐसे ही जिस-जिस का हमारे ऊपर उपकार है हम कभी न भूलें।

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड, वर्ली
नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- प्रतिक्रमण की क्या-क्या परिभाषाएँ प्रचलित हैं ?

उत्तर- प्रतिक्रमण की प्रचलित कतिपय परिभाषाएँ हैं-

(1) कृत पापों की आलोचना करना, निंदा करना। (2) व्रत, प्रत्याख्यान आदि में लगे दोषों से निवृत्त होना। (3) अशुभ योग से निवृत्त होकर निःशल्य भाव से शुभयोग में उत्तरोत्तर प्रवृत्त होना। (4) मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग से आत्मा को हटाकर फिर से सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र्य में लगाना प्रतिक्रमण है। (5) पाप क्षेत्र से अथवा पूर्व में ग्रहण किये गये व्रतों की मर्यादा के अतिक्रमण से वापस आत्मशुद्धि क्षेत्र में लौट आने को प्रतिक्रमण कहते हैं।

प्र. 2- प्रतिक्रमण कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर- प्रतिक्रमण दो प्रकार का होता है-(1) द्रव्य प्रतिक्रमण और (2) भाव प्रतिक्रमण। (1) द्रव्य प्रतिक्रमण-उपयोगरहित, केवल परम्परा के आधार पर पुण्य-फल की इच्छा रूप प्रतिक्रमण करना अर्थात् अपने दोषों की, मात्र पाठों को बोलकर शब्द रूप में आलोचना कर लेना, दोष-शुद्धि का कुछ भी विचार नहीं करना 'द्रव्य प्रतिक्रमण' है। (2) भाव प्रतिक्रमण-उपयोगरहित, लोक-परलोक की चाहरहित, यश-कीर्ति-सम्मान आदि की अभिलाषा नहीं रखते हुए, मात्र अपनी आत्मा को कर्म-मल से विशुद्ध बनाने के लिए जिनाज्ञा अनुसार किया जाने वाला प्रतिक्रमण

'भाव प्रतिक्रमण' है।

.- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Question Answer

Q1. What does the popular Jaina phrase "Micchāmi Dukkaḍaṃ" mean?

Ans. The phrase "Micchāmi Dukkaḍaṃ" translates as "May my sins become fruitless." The complete confession which precedes this phrase is : "If I have hurt you, knowingly or unknowingly, in thought, word or deed, I seek your forgiveness. May this act of repentance make my sins void." It thus refers to all actions committed intentionally or unintentionally, knowingly or unknowingly, and by omission or commission.

Greeting others with "Micchāmi Dukkaḍaṃ" has become synonymous with the festival of Saṃvatsarī and is a powerful form of repentance. By doing so, we undo the hurt we have caused others and also cleanse ourselves of guilt.

-Book 'With the ferryman' -Dulichand Jain

जीवन का प्रण

डॉ. रमेश 'मयंक'

मेरे जीवन का बने प्रण, धर्म क्रियाओं का आचरण।

करूँ निर्वाह धर्ममय जीवन

स्वार्थ त्याग का बनाऊँ मन

नहीं करूँ कभी भी कंजूसी

उचित स्थान पर खर्च करूँ धन

असहाय दीनों का रख ध्यान

गुरु चरणों में झुकूँ हर क्षण।

सौहार्द का करूँ सञ्चार, मानव समाज में बड़े प्यार

परिजन मित्र बनकर उत्साही

बढ़ाएँ सहयोग के विचार

पर प्रशंसा से सुख पाऊँ

मात्सर्य भाव का हो क्षरण।

मेरी देह मन वचन जागे, पाप कर्म क्रिया पथ त्यागे

अपशब्द कटुता को छोड़कर
 मृदुल व्यवहार रहे आगे
 लोभ लालच नहीं डिगा सकें
 नहीं हो किसी का शोषण।
 शास्त्र ज्ञान निर्मलता लाए
 प्रवचन सहयोगी कहलाए
 श्रवण चिन्तन भावमय ज्ञान
 सर्वहितकारी पथ अपनाए
 मैत्री करुणा मुदिता हित
 सर्वहित भाव प्रकटीकरण
 सबके हित आत्मीयता को
 निजी जीवन में करूँ धारण।
 -बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

Balance Sheet of Life

Shri Shrikant Gupta

*Our Birth is our Opening Balance!
 Our Death is our Closing Balance!
 Our Prejudiced Views are our Liabilities.
 Our Creative Ideas are our Assets.
 Heart is our Current Asset.
 Soul is our Fixed Asset.
 Brain is our Fixed Deposit.
 Thinking is our Current Account.
 Achievements are our Capital.
 Character & Morals are Stock-in-Trade.
 Friends are our General Reserves.
 Values & Behavior are our Goodwill.
 Love is our Dividend.
 Children are our Bonus Issues.
 Education is Brands/Patents.
 Knowledge is our Investment.
 Experience is our Premium Account.
 The Aim is to Tally the Balance Sheet
 Accurately.
 The Goal is to get the Best Presented
 Accounts Award*

-Jodhpur (Raj.)

धन और धर्म में तुलनात्मक

अन्तर

संकलित

1. धन की रक्षा करनी पड़ती है जबकि धर्म स्वयं हमारी रक्षा करता है।
2. धन के लोभ से हमारी गति बिगड़ जाती है जबकि धर्म से हमारी गति सुधरती है।
3. धन से चारों कषायों में वृद्धि होती है जबकि धर्म कषायों को शान्त करता है।
4. धन हमारी इच्छाओं को बढ़ाता है जबकि धर्म इच्छाओं को कम करता है।
5. धनप्राप्ति पर भी जीव दुःखी रहता है जबकि धर्म से जीव दुःख में भी सुखी रखता है।
6. धन को प्राप्त करने के लिए पाप करना पड़ता है जबकि धर्म करने में पाप का त्याग होता है।
7. धन से हम चारों गतियों में जन्म-मरण करते हैं जबकि धर्म इन चारों गतियों का अन्त करता है।
8. धन मात्र इस भव में साथ देता है जबकि धर्म तो इस भव, परभव और भव-भव में हमेशा साथ रहता है।

-मनोज कुमार जैन (पाटोली), जयपुर

दिमाग के विकास के लिए

खराब आदतें बदलनी होंगी

श्री आभांश जैन

चीनी का अधिक सेवन-हमारे आहार के असन्तुलन का असर हमारी सेहत पर पड़ता है। चीनी का ज्यादा सेवन वैसे भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और यह दिमाग को भी हानि पहुँचा सकता है। चीनी शरीर में पोषक तत्वों और प्रोटीन के अवशोषण को बाधित करती है, जिसकी वजह से दिमाग की कार्य क्षमता पर भी काफी हद तक असर पड़ता है।

अच्छी नींद नहीं लेना-नींद न आना या फिर ज्यादा आना दोनों ही गम्भीर समस्याएँ हैं, यदि आपकी नींद पूरी नहीं होती है तो आपकी याददाश्त कमजोर हो

सकती है। 6-7 घण्टे से कम नींद आती है तो आपको चीजों को याद रखने में दिक्कत हो सकती है। नींद का पूरा होना आपके शरीर के लिए भी जरूरी है, जब आप सोते हैं तो आपके शरीर को आराम मिलता है।

ज्यादा गुस्सा भी पहुँचाता है नुकसान—हम कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर चिल्ला उठते हैं या बहुत जल्दी रिएक्ट (प्रतिक्रिया) करते हैं। क्या आप जानते हैं इससे हमारे दिमाग को बहुत नुकसान पहुँचता है। बात-बात पर ओवर रिएक्ट करने से दिमाग का सन्तुलन बिगड़ता है। दरअसल आप ऐसा करते हैं तो मस्तिष्क की रक्त धमनियाँ सख्त होने लगती हैं। इसकी वजह से आपकी मस्तिष्क की कार्य क्षमता कमजोर होने लगती है।

सुबह का नाश्ता न करना—आप शाम के भोजन के बाद बहुत लम्बे समय तक भूखे रहते हैं, इसलिये सुबह का आहार बहुत जरूरी होता है। सुबह के वक्त शरीर को चीनी एवं अन्य पोषक तत्वों की जरूरत होती है, अगर आप कुछ नहीं खाते हैं तो शरीर के साथ-साथ दिमाग को भी नुकसान पहुँचता है। सुबह सही समय पर आहार करने से आपको दिन भर ऊर्जा मिलती है।

सावधानियाँ—सॉफ्ट ड्रिंक, मद्यपान, धूम्रपान एवं पान मसाला के सेवन से बचें, ये हमारे दिमाग के लिए नुकसानदायक हैं।

—बेस्ट बाजार के सामने, गर्ल्स स्कूल चौराहा के पास, भवानी मण्डी (राज.)

पिता की सीख

डॉ. दिलीप धींग

पिछली सदी में उत्तर भारतीय स्थानकवासी जैन परम्परा में एक प्रभावक मुनिराज श्री सुदर्शनलालजी महाराज हुए हैं। 4 अप्रैल, 1923 को रोहतक (हरियाणा) के धर्मनिष्ठ अग्रवाल जैन परिवार में उनका जन्म हुआ था।

उनके पिता चंदगीरामजी प्रतिष्ठित वकील थे। वे झूठे मुकदमे की पैरवी नहीं करते थे। वे अदालत से

आकर प्रतिदिन स्वाध्याय के साथ एक सामायिक करते थे। व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज की प्रेरणा से उन्होंने उत्तराध्ययनसूत्र भी कण्ठस्थ कर लिया था। ऐसे वकील साहब चंदगीरामजी को विद्यार्थी जीवन में दो स्वर्णपदक मिले थे। जब उनके बेटे सुदर्शन ने दीक्षा का निर्णय लिया तो पिता ने पुत्र से कहा—“तेरी दीक्षा के समक्ष मेरे ये सोने के तमगे तुच्छ हैं।”

वीर-पिता बनने वाले चंदगीरामजी वीर-पुत्र भी थे, यानी उनके पिताजी ने भी दीक्षा ली थी। चंदगीरामजी बहुत ही भावुक और संवेदनशील इंसान थे, इसलिए वे उनके पिताजी और पुत्र के दीक्षा कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हुए।

पुत्र की दीक्षा के बाद चंदगीरामजी पहली बार नवदीक्षित पुत्र-मुनि के दर्शन करने गये। तब भी उन्होंने दीक्षा से पूर्व कही बात दोहराई—“मुझे वाइसराय के हाथों दो स्वर्णपदक मिले हैं, वे इस मुनि-जीवन की तुलना में सर्वथा निस्सार और मूल्यरहित हैं। संयम की कीमत नहीं आँकी जा सकती। इस संयम को सदा आगे बढ़ाते रहना।”

धन्य हैं वे वीर-पिता, जिन्होंने संयम की महिमा के समक्ष अपनी ही शैक्षणिक उपलब्धियों को तुच्छ करार दिया और अपने पुत्र को संयम के प्रति निष्ठा की सीख दी। इसे प्रबुद्ध पिता के शुभाशीष का सुफल कह सकते हैं कि उनके यशस्वी पुत्र श्रमणवर सुदर्शनलालजी महाराज ने जिनशासन की खूब प्रभावना की।

—शोधप्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज, 7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

Kinds of Minds

Collection : Jagrit Jain

Great mind discusses ideas.

Average mind discusses events.

Small mind discusses people.

Think which kind of mind do you have.

-17/729, CHB, Jodhpur-342008 (Raj.)

हिन्दी भाषा का सम्मान

श्रीमती कमला हणमन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अक्टूबर, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

विख्यात कथाकार मन्नु भण्डारी की कहानी 'अकेली' के कुछ प्रश्न हल करने थे। इसलिए सहपाठनियाँ मिलकर पुस्तकालय पहुँच गईं। वहाँ पर बैठे अधिकतर लोग हिन्दी भाषा में बातें कर रहे थे। कुछ लोग अपनी मातृभाषा में विचार-विमर्श कर रहे थे।

शुभांगी को वहाँ का वातावरण अच्छा लगा। मीठे-मीठे स्वर कानों में पड़ रहे थे और उनमें अपनत्व भी झलक रहा था।

शुभांगी-“तृषा! मुझे हिन्दी भाषा में बोलना अच्छा लगता है। सामने बैठे लोग सभी हिन्दी भाषी हैं।”

तृषा-“इसमें क्या आश्चर्य है कि सामने बैठे लोग हिन्दी भाषा में बोलते हैं। हिन्दी हमारी मातृ-भाषा है। मातृभाषा में ही बोलेंगे। तुझे अच्छी लगती है। लगनी भी चाहिए। हमारी प्राकृत, अपभ्रंश एवं संस्कृत भाषा इसके स्रोत हैं।”

शुभांगी-“लेकिन.....।”

तृषा-“लेकिन क्या? रुक क्यों गई?”

शुभांगी-“मेरी माँ मुझे हिन्दी बोलने नहीं देती है। मैं मम्मा को माँ से सम्बोधित करना चाहती हूँ तो वह कहती है, मुझे मम्मा सम्बोधन से पुकारा कर। वह यह भी कहती है कि तेरे पापा का उठना-बैठना उच्च रहन-

सहन में है। वहाँ सभी अंग्रेजी में बात करते हैं। हिन्दी बोलने वालों को गँवार-अनपढ़ समझते हैं। उस दिन पिकनिक गए थे, वहाँ पर प्रथमा धारा-प्रवाह अंग्रेजी बोली थी। मुझे भी तुझे इसी तरह बोलने का अभ्यास करवाना है।”

तृषा-“यह तो बड़ी विडम्बना है। हम भारतीय हैं हमारी रग-रग में यह भाषा बसी हुई है। इसका उपहास कैसे करें, क्यों करें?”

शुभांगी-“माँ कहती है अंग्रेजी का बोल-बाला है। हिन्दी के पीछे पड़े रहेंगे तो पिछड़ जाएँगे, इसलिये हमारे घर में अंग्रेजी भाषा ही बोली जायेगी।”

सारा-“सभी भाषाएँ हमारे लिए सम्माननीय हैं। जिस देश में जो भाषा बोली जाती है वह उस देश की प्राण होती है। जैसे-देश देह है और भाषा प्राण है। देह से प्राण निकल जाय तो पीछे क्या बचेगा? हर देश को अपनी भाषा पर गर्व होता है। हमें भी अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। हिन्दी समृद्ध भाषा है, वैज्ञानिक भाषा है, इसकी सुदृढ़ व्याकरण है। इसका शब्द कोष विस्तृत है। इस भाषा की विशेषता यह है कि जैसे बोलते हैं वैसे ही लिखी जाती है।”

पुस्तकालय से सभी अपने-अपने घर चली जाती हैं। शुभांगी के मन में बहुत हल-चल मच गई कि कब

माँ से भाषा के बारे में स्पष्टीकरण करूँ। सवेरे नाश्ता करने बैठे थे उस समय घर के सभी सदस्य उपस्थित थे। शुभांगी ने भाषा को लेकर बात छोड़ दी।

शुभांगी-“मम्मा! आप विवाह में महिला संगीत में जाती हैं वहाँ तो गीत हिन्दी भाषा में ही गाए जाते हैं।”

मम्मा-“हाँ बेटी!”

शुभांगी-“गीतों के सुन्दर बोल और सुमधुर रागों आनन्दित कर देती हैं। मन करता है वहाँ से उठे ही नहीं। इसमें भाषा की मौलिकता के दर्शन होते हैं। मन्दिर और भक्ति सन्ध्या में जो भजन गाए जाते हैं वे हिन्दी भाषा एवं बोलचाल की भाषा का मिश्रण होता है। उनमें हमारी परम्परागत रागिनियों का अनूठा संगम मिलता है। वर्षों से संजोयी हुई संस्कृति मिलती है। यदि अंग्रेजी भाषा को अधिक महत्त्व देंगे, बोलचाल में उसे प्राथमिकता देंगे तो हमारी शैली की मिठास लुप्त हो जाएगी।”

माँ-“बेटी तू सही कह रही है। पर कुछ वर्षों से पढ़ाई में बहुत बदलाव आया है, इसलिये हमें बदलना पड़ेगा।”

शुभांगी-“नहीं माँ! हिन्दी को जीवित रखना नई पीढ़ी का कर्तव्य बनता है। जब नई पीढ़ी हिन्दी भाषा को अपनायेगी तो स्वतः ही उसका वर्चस्व होगा। हमारे भारतीय संविधान में इसको राष्ट्र भाषा का स्तर प्राप्त है।”

शुभांगी की चार सहेलियाँ बधाई गीत गाती हुई घर में प्रवेश करती हैं।

जन्म-दिन तुम्हारा, धूम मचाएँगे घर में।

ढेरों बधाई, खाएँगे मिठाई, नाचेंगे घर में।।

उसकी बलइयाँ लेने लगी और गले लगने लगी।

शुभांगी गौर वर्ण, रूप-लावण्य की जीती जागती प्रतिमा थी। उसको चिढ़ाने के लिए व्यंग्य होने लगे।

सारा-“इस काली कलूटी बैंगन लूटी की बलइयाँ ले रही हो?”

चिना-“गले भी नहीं लगना चाहिए कहीं हम भी काले न हो जाएँ।”

सभी खिलखिला कर हँसने लगी।

गिन्नी को उस पर इतना प्यार आया कि उसके लाल-लाल गाल और लाल कर दिये।

मौनी ने गाल पर काजल की बिन्दी लगा दी कि इसको नज़र न लग जाय। सभी इतनी हँसी कि पूरा घर गूँजा दिया। लड़कियों की धूम सुनकर ऊपर कमरे में पढ़ रहा शुभांगी का भाई भी उनके साथ हो गया।

सभी लड़कियों ने भजन एवं फिल्मी गानों पर अन्त्याक्षरी करना तय किया। शुभांगी की माँ को गाना गाने का शौक था वह भी उसमें भाग ले रही थी।

तृषा-“आण्टी! मुझे लता मंगेशकर के गाए हुए गाने बहुत अच्छे लगते हैं। उनके उच्चारण कितने शुद्ध हैं। वह मराठी थी और उसे हिन्दी का अच्छा ज्ञान था, तभी उसके गानों की भाषा-शैली सुमधुर है। पूरी दुनिया में लताजी के जितने गाने किसी ने नहीं गाए और उनके गाने ख्याति प्राप्त और चर्चित हैं।”

अन्त्याक्षरी शुरू हुई। दोनों समूह में चीटिंग भी हुई। हा-हुल्लड़ भी हुआ और सभी आत्म-विभोर हो गए।

चीना-“चाची! देखा, हिन्दी भाषा का कमाल। अन्दरूनी खुशी अपनी भाषा में ही मिलती है। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी हिन्दी बोलते हैं और भाषण भी हिन्दी भाषा में देते हैं। हिन्दी भाषा पर उनका वर्चस्व है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारीजी हिन्दी में भाषण देते थे। वे कवि थे और ओजस्वी भाषा में उनके द्वारा गायी हुई कई कविताओं ने भारत में धूम मचा दी थी। राष्ट्रीय कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने पद्य में भारत-भारती पुस्तक लिखकर तहलका मचा दिया था। इसलिये अंग्रेजी सरकार ने इस पुस्तक पर रोक लगा दी थी। फिल्म जगत् को देखिए, बॉलीवुड अधिकांश रूप से हिन्दी भाषा का प्रयोग करता है। हिन्दी भाषा के चलन में उनका प्रशंसनीय योगदान है।”

अलका-“चाची! मैं आपको चाची ही बोलूँगी। चाची शब्द हमारे शब्द कोष में निहित है तो आण्टी से सम्बोधित क्यों करूँ।”

हमारा देश हमारी सुगठित हिन्दी भाषा से

गौरवान्वित है। समझ में नहीं आता है कि इसके प्रयोग से पिछड़ने का डर क्यों बना हुआ है। चीन में चीनी भाषा चलती है जिसकी लिपि याद रखना कितना कठिन है, फिर भी वह प्रगति के शिखर पर है। जापान में जापानी भाषा का प्रयोग है, इससे वह देश पिछड़ा तो नहीं है। वहाँ की राष्ट्रीय भावना, काम करने में निष्ठा, उनकी वस्तुएँ और उपकरण जापानी नाम से बिकते हैं। रूस में रशियन भाषा का प्रयोग होता है। वह भी उन्नति के शिखर पर है।

शुभांगी-“भारत के पिछड़ने का कारण भाषा नहीं है। आपसी फूट के कारण हजारों वर्षों तक हम अन्य लोगों के गुलाम रहे हैं। विदेशी राज्य रहा। उन्होंने हमारा शोषण किया। हमारा जुगाड़ इतना ही रहा कि मुश्किल से दो समय की रोटी सेक सके। रोटी के पीछे वैज्ञानिक क्षेत्र, चिकित्सा क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों में पिछड़ गए। अमेरिका आदि पाश्चात्य देश सम्पन्न थे। वहाँ उक्त क्षेत्रों में विकास हुआ। विज्ञान क्षेत्र, चिकित्सा क्षेत्र की पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी रहा एवं पुस्तकें भी अंग्रेजी भाषा में हैं। प्रशासनिक सेवाएँ, डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. एवं उच्च स्तरीय शिक्षा में तो अंग्रेजी काम लेनी पड़ेगी। नई पीढ़ी नए आविष्कार करेगी तो उसमें हिन्दी का प्रयोग करेगी। नए स्टार्टप में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए जैसा योगा में सूर्य नमस्कार को विदेशों में भी सूर्य नमस्कार ही बोलते हैं ऐसे ही हमारी भाषा का फैलाव बढ़ेगा।”

अलका-“चाची! एक बार भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलालजी नेहरू रूस गए थे। वहाँ उन्होंने अंग्रेजी भाषा में भाषण देना प्रारम्भ किया। रूस के प्रधानमंत्री ने पण्डितजी से कहा-“आप अपनी भाषा में भाषण दीजिए या फिर रशियन भाषा में भाषण दीजिए।” नेहरूजी को हिन्दी भाषा में भाषण देना पड़ा।

अलका-“हमें सभी भाषाएँ अच्छी लगती हैं। अधिक भाषाएँ सीखेंगे तो अधिक ज्ञान बढ़ेगा। हम विदुषी कहलायेंगी, लेकिन अपनी माँ रूपी भाषा को छोड़कर अन्य विदेशी भाषा को इतना महत्त्व देना हमारी मूर्खता है। अपने देश को नीचा दिखाना है।”

शुभांगी की माँ-“अलका बेटा, पर”

अलका-“पर क्या, चाची?”

आप आ जाओ हमारे साथ। हम सब मिलकर हिन्दी पक्षपाती संस्थाएँ खोलेंगे। हिन्दी भाषा का ध्वज लहराएँगे। आ रहा है 14 सितम्बर। हिन्दी भाषा दिवस। उसी दिन से हिन्दी को आगे बढ़ाने का संकल्प दिवस मनाएँगे। बोलो मेरी प्रिय सहेलियों! तुम्हारा क्या विचार है।

शुभांगी सबसे पहले बोली और उठी, मैं करूँगी। सभी बालिकाओं ने तत्परता-उत्सुकता से इस कार्य का बीड़ा उठाया।

जय हिन्दी, जय-जय हमारी हिन्दी।

नाचेंगे, गायेंगे डंके की चोट से फैलाएँगे हिन्दी।।

-ई 123, नेहरू पार्क, ज्योत्सुपुर (राजस्थान)

- प्र. 1 शुभांगी की माँ की हिन्दी भाषा के प्रति क्या राय थी?
- प्र. 2 प्रस्तुत अंश में हिन्दी भाषा की किन विशेषताओं को दर्शाया गया है?
- प्र. 3 शुभांगी के अनुसार हमारी शैली की मिठास कैसे नष्ट हो जाएगी?
- प्र. 4 अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के पिछड़ने के क्या कारण हैं?
- प्र. 5 'हिन्दी भाषा के महत्त्व' पर अपने विचार लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।
- प्र. 6 दिए गए सम्पूर्ण अंश से कोई पाँच अव्यय शब्द छाँटकर उनके भेद भी लिखिए।



बाल-स्तम्भ [जुलाई-2022] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'सोने का पहाड़' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	कु. पूनम किरण अलीझाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	वृद्धि जैन, देई-बूँदी (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	22
	काव्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	22
	सिद्धार्थ जैन, अजमेर (राजस्थान)	21
	धृति दिनेशजी सिंघवी, हैदराबाद (तेलंगाना)	21
	अखिल पालडेचा, विजयनगर (राजस्थान)	21

बाल-जिनवाणी अगस्त, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 अक्टूबर, 2022)

- प्र. 1. चींटी-हवा-पानी से प्राप्त प्रेरणा हमारे जीवन में क्या महत्त्व रखती है ?
- प्र. 2. अरिहंतों और सिद्धों में से पहले किन्हें नमस्कार करना चाहिए और क्यों ?
- प्र. 3. सामायिक के उपकरण हमारे समताभाव को बढ़ाने में कैसे सहयोग प्रदान करते हैं ?
- प्र. 4. 'ऐसी अमीरी किस काम की, जहाँ चेहरे रहे मुझाए' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 5. ज्ञानीजन हमें क्या समझाते हैं ?
- प्र. 6. आज लोगों में एक-दूसरे के प्रति अपनत्व घटने के क्या कारण हैं ?
- प्र. 7. पर्युषण पर्व हमें क्या सन्देश देता है ?
- प्र. 8. क्षमापर्व अन्य पर्वों से किस तरह विशेष है ?
- प्र. 9. What did the monk do when he opened his eyes?
- प्र. 10. Write three synonyms of the given words- Aversion, Monks, Endurance and Alleviate.

बाल-जिनवाणी [जून-2022] का परिणाम

जिनवाणी के जून-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अरिष्ठ कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	नमिष जैन, बारां (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	कु. ममता आर. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	36
	कु. आरोही श्रेणिक छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	36
	अरिन चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

गजेन्द्र निधि द्वारा सञ्चालित
आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक क़दम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

रत्न संघ के अष्टम् पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं सन्त-सती मण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से 16 वर्षों से आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना निराबाध रूप से गतिशील है। वर्ष 2022-2023 के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र योजना समिति से मँगवाकर, उसे भरकर प्रेषित कर सकते हैं।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के आवश्यक नियम -

- आवेदक आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज अवश्य भेजें-
 - उत्तीर्ण की हुई कक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि।
 - आवेदक वर्तमान में जिस विद्यालय/कॉलेज/कॉचिंग में अध्ययन कर रहा है, उसके द्वारा वहाँ जमा कराये गये शुल्क की रसीद (रसीद उपलब्ध नहीं होने की दशा में लैटर पेड पर सत्यापित करके भेज सकते हैं।)
 - अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि।
 - अपनी पासपोर्ट साइज की नवीन फोटो।
 - मोबाइल नम्बर जिस पर योजना समिति द्वारा कभी भी सम्पर्क किया जा सके।
 - आवेदक छात्र-छात्रा के बैंक खाते की पासबुक की प्रतिलिपि।
- छात्रवृत्ति राशि का निर्धारण विद्यालय/कॉलेज/कॉचिंग के शुल्क के आधार पर अथवा योजना की अधिकतम सीमा के आधार पर किया जायेगा। छात्रवृत्ति योजना की छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है-

Class	Upto Class 10 th	11 th & 12 th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	₹ 6,000/-	₹ 9,000/-	₹ 12,000/-	₹ 27,500/-

- छात्रवृत्ति योजना समिति के द्वारा आयोजित किये जाने वाले शिविर में भाग लेना अनिवार्य है।
- रत्नसंघ के प्रत्येक कार्यक्रम में सहयोग करना एवं उपस्थित रहना आपका कर्तव्य है। आपके द्वारा स्थानीय स्थल पर लगने वाले शिविरों में भाग लेना, अध्यापन कार्य में सहयोग करना या अन्य रूप में सेवा देने का अलग से विवरण अवश्य संलग्न करें।
- आवेदक को प्रतिदिन एक नमस्कार मन्त्र की माला फेरने का संकल्प करना है।
- आवेदक के द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।
- योजना समिति का लक्ष्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सन्देश को नई पीढ़ी द्वारा अपनाने के लिए प्रेरित करना एवं संस्कारित करना है-

गुरु हस्ती के दो फ़रमान
सामायिक - स्वाध्याय महाब्

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो सारा देश

- योजना समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

आवेदक अपने आवेदन पत्र 30 सितम्बर, 2022 तक निम्नलिखित पते पर प्रेषित कर सकते हैं-

M. Harish Kavad

“Guru Hasti Thanga Maaligai”, No. 5, Cart Street, Poonamallee, CHENNAI-600056 (TN)

छात्रवृत्ति योजना से सम्बन्धित जानकारी के लिए सम्पर्क करें-मनीष जैन (+91 95430 68382)

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मैट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मैट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details Is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संचयन, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग प्रकृति करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुण्णोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डरी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमान् वृत्तीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	
श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बेंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बेंगलोर	श्रीमान् सम्पतराज जी राजकव्दर जी भंडारी, द्विपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुक्केश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोधय, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगपुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगढ़ वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लालकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांब, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जान्गति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश) श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू	श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् सुगनचन्द जी एजेड, चौपासनी रोड, जोधपुर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू)

सहयोग के लिए बैंक या ट्रास्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

“छोटा सा चिन्तन परिसर को हल्का करके का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों की शिक्षा में सहयोग करके का”

जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है।

जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/बैंक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- (2) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (3) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (4) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- (5) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (6) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (7) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (8) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (9) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (10) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।
- (3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
- (4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
- (5) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
- (6) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
- (7) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
- (8) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



॥ पमो आयरियाणं ॥

NAVKAR CITY JODHPUR



वास्तविक चित्र

LUXURIOUS VILLAS AND G+2 APARTMENTS AVAILABLE

“ एक शहर आपके घर में ”

PROJECT HIGHLIGHTS**



HOSPITAL



CLUBHOUSE



SHOPPING
MALL



CONVENIENT
SHOPPING



ADHYATMIC
SANSTHAN



पायल डगा
8504 000 222



www.navkarcity.com

*Phase 1 is on Sale

Sample G+2
Apartment Ready
76 Acre* Township

FULL OF AMENITIES



ELDERLY
SITTING AREA



CRICKET
STADIUM



TENNIS



WALKING
TRACK



24/7 GATED
SECURITY



VOLLEYBALL



WATER
HARVESTING



YOGA
AREA



BASKETBALL



नवकार सिटी, पाल गंगाणा रोड़, जोधपुर

WWW.PERA.RAJASTHAN.GOV.IN | PERA REG.NO. RA3/P/2013/7048

**The facilities stated below are not included as a part of RERA number stated but additional facilities in Navkar City.



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन